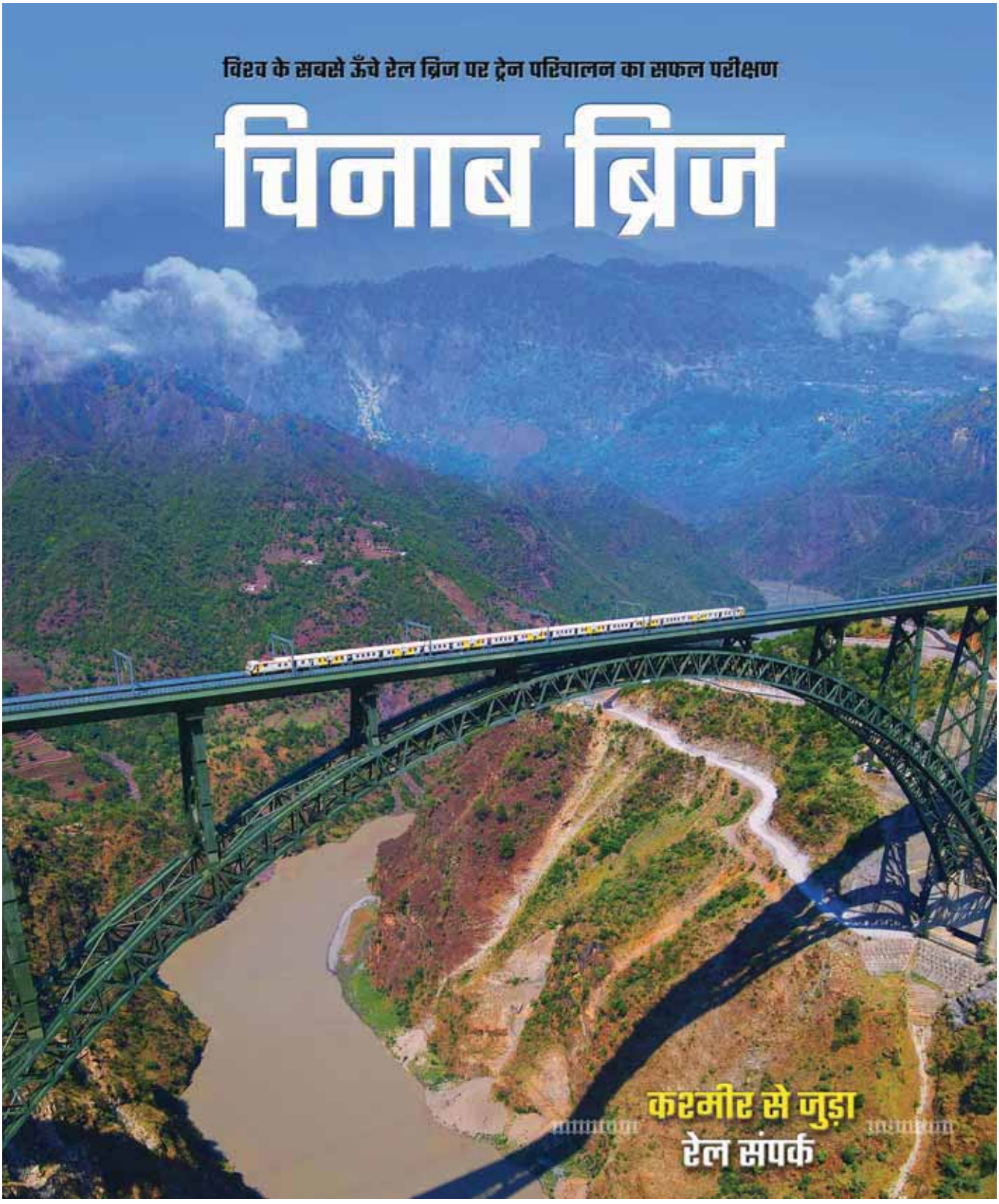
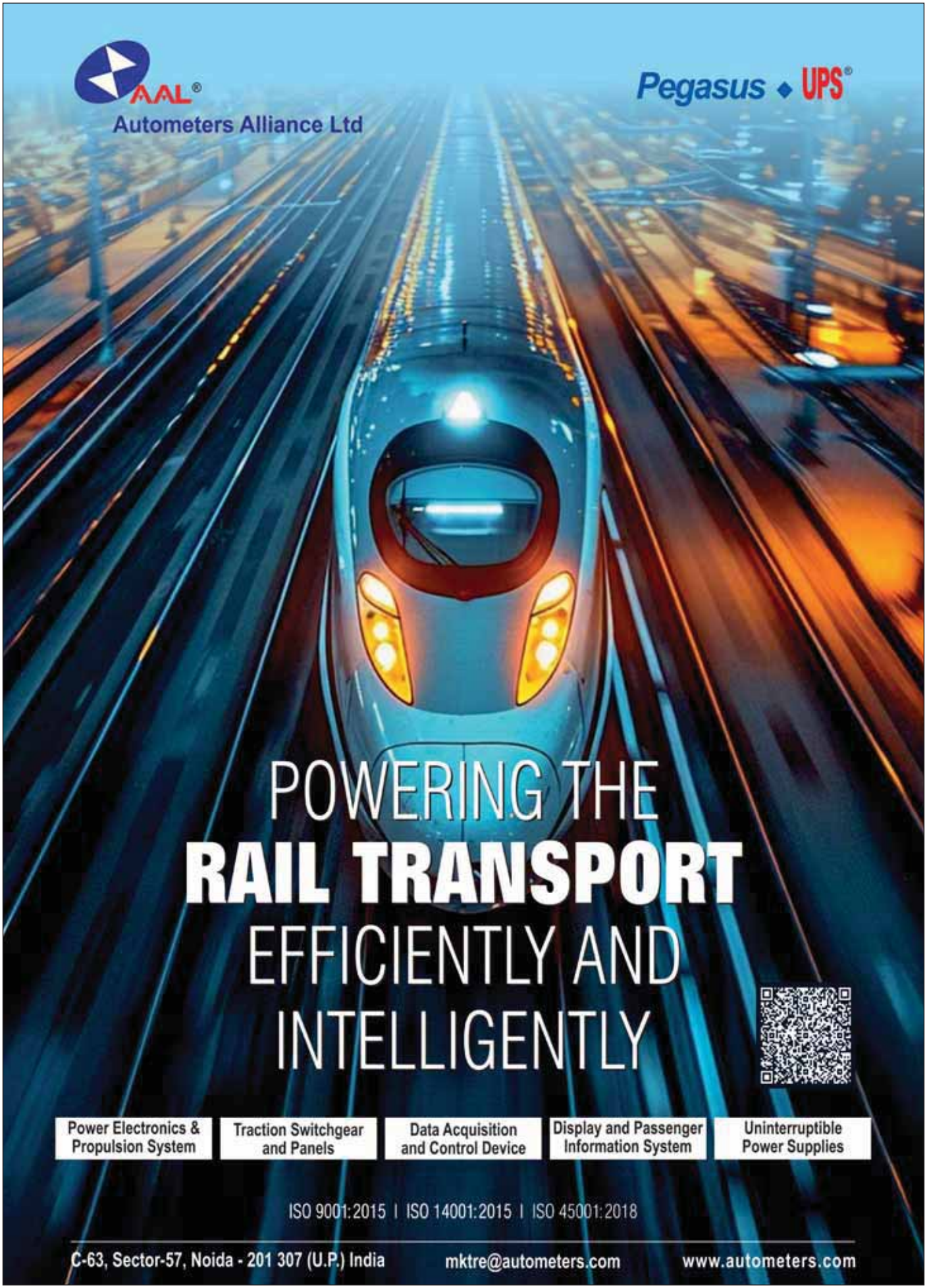
# भारतीय रेल

जुलाई 2024

मूल्य ₹ 20




AAL®
Autometers Alliance Ltd
Pegasus ◆ UPS®
POWERING THE
RAIL TRANSPORT
EFFICIENTLY AND
INTELLIGENTLY
Power Electronics & Propulsion System
Traction Switchgear and Panels
Data Acquisition and Control Device
Display and Passenger Information System
Uninterruptible Power Supplies
ISO 9001:2015 I ISO 14001:2015 I ISO 45001:2018
C-63, Sector-57, Noida - 201 307 (U.P.) India
mktre@autometers.com
www.autometers.com

# भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

आरंभ: अगस्त-1960 | वर्ष: 64 | अंक: 12 | राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित पत्रिका | जुलाई-2024 | मूल्य: ₹20

## संपादक मंडल

श्रीमती जया वर्मा सिन्हा
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
रेलवे बोर्ड

सुश्री रूपा श्रीनिवासन
सदस्य (वित्त), रेलवे बोर्ड

सुश्री अरुणा नायर
सचिव, रेलवे बोर्ड

श्री शिवाजी मारुती सुतार
निदेशक, सूचना एवं प्रचार

संपादक
योगेश अवस्थी

संपादकीय कार्यालय
संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क
ललित कुमार धनकड़
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
टेलीफोन: 011-47845378, 47845089
bmpr310rb@gmail.com

आवरण
चिनाब ब्रिज

फॉलो करें
Twitter :
@bhartiyarailrb

वार्षिक सदस्यता शुल्क
(ऑफलाइन)
सर्वसाधारण -₹250
रेलकर्मियों के लिए -₹200
विदेश में
सी-मेल द्वारा -₹1,250
एयर-मेल द्वारा -₹2,500
एक प्रति-₹20
वार्षिक विशेषांक-₹70

*इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।*

© भारतीय रेल

5 माननीय प्रधानमंत्री ने कई रेल परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया

8 हमारे नए रेल मंत्री एवं रेल राज्य मंत्री

10 रेल मंत्री ने दक्षिण रेलवे के प्रदर्शन की समीक्षा बैठक की

10 रेल राज्य मंत्री ने रेलवे बोर्ड के सदस्यों के साथ उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की

11 गुजरात के माननीय राज्यपाल का बनारस रेल इंजन कारखाना दौरा

11 आरडीएसओ को उत्तर प्रदेश की माननीय राज्यपाल द्वारा 'रक्तदान सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया

11 भारतीय रेल ने 'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में अपना नाम दर्ज कराया

12 अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

15 रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष और मुख्य कायकारी अधिकारी ने दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे का किया निरीक्षण

15 सेवक – रंगपो रेल परियोजना का रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा निरीक्षण

16 सदस्य रेलवे बोर्ड का दौरा

19 रोमांचक तथा अविस्मरणीय यात्रा के लिए हो जाएँ तैयार...

21 बुलेट ट्रेन परियोजना

26 सेवक-रंगपो नई रेल लिंक परियोजना में एक और माइलस्टोन - टनल संख्या टी - 04 को मिला ब्रेकथ्रू

26 रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला द्वारा उधमपुर-बारामुल्ला रेल मार्ग के लिए रेल डिब्बों का दूसरा रेक तैयार

27 क्षेत्रीय रेलों एवं उत्पादन इकाइयों के समाचार

36 उपलब्धियाँ

38 हमारे रेल एवं रेल राज्य मंत्रियों की सूची

44 भारतीय रेल ने हमारी भूमि, हमारा भविष्य विषय के अनुरूप विश्व पर्यावरण दिवस मनाया

48 आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली में जल प्रबंधन और पहल
श्री प्रशान्त कुमार मिश्रा

49 राजभाषा समाचार

51 खेलों में भारतीय रेल

52 तस्वीर दीर्घा

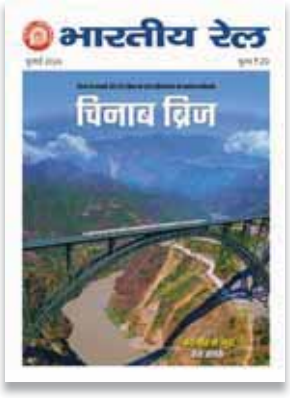
55 प्रगति रिपोर्ट

59 एक रेल-एक सिगनलिंग : मानकीकरण तथा स्वचालन के साथ भारतीय रेल की छिपी क्षमता का प्रदर्शन
श्री रजनीश गुप्ता / श्री अमित मिश्रा / श्री राजेन्द्र धम्बेल

64 वंदे मातरम से वंदे भारत तक
सुश्री बी. राधा रानी

68 चाँदनी
सुश्री रिंकल शर्मा

# संपादकीय




## रोमांचक तथा अविस्मरणीय यात्रा के लिए हो जाएँ तैयार...

अब वो दिन दूर नहीं, जब दुनिया के सबसे ऊंचे रेल ब्रिज – 'चिनाब ब्रिज' पर से आधिकारिक तौर पर यात्री ट्रेनों का आवागमन शुरू हो जाएगा। निश्चित रूप से यह यात्रा लोगों के लिए हमेशा के लिए रोमांचक तथा अविस्मरणीय रहेगी। ये ब्रिज उधमपुर–श्रीनगर–बारामूला रेल लिंक (यूएसबीआरएल) परियोजना के कटरा–बनिहाल खंड पर स्थित है। चिनाब ब्रिज अपने–आपमें इंजीनियरिंग के क्षेत्र में किसी चमत्कार से कम नहीं है। प्राकृतिक आपदाओं तथा आंतकी घटनाओं को ध्यान में रखकर डिजाइन किए गए इस ब्रिज से हाल ही में ट्रेन परिचालन का ट्रायल रन किया गया। जल्द ही जरूरी कार्यवाही होने के पश्चात् नियमित रूप से यात्री ट्रेनों का आवागमन शुरू हो जाएगा। इस ब्रिज पर वंदे भारत एक्सप्रेस तथा जम्मू–श्रीनगर के बीच वंदे भारत मेट्रो सेवा शुरू करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है।

जम्मू–कश्मीर को वैकल्पिक, विश्वसनीय और हर मौसम में रेल यातायात प्रणाली उपलब्ध हो, इस उद्देश्य से यूएसबीआरएल परियोजना शुरू की गई। भूकंप, तेज हवाओं तथा विपरीत भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहाँ पर ब्रिज तथा टनल का निर्माण कार्य आसान नहीं था, लेकिन हमारे इंजीनियरों ने अपने कौशल, आत्मविश्वास तथा तकनीक के माध्यम से इस परियोजना को अंतिम चरण तक पहुँच दिया है। चिनाब ब्रिज के 1,315 मीटर लंबे ट्रैक पर स्टील के विशेष डिजाइन किए गए 2,487 स्लीपर बिछाए गए हैं। इस ट्रैक पर 100 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से ट्रेनों का परिचालन किया जा सकेगा। 1,315 मीटर की लंबाई और 467 मीटर के केंद्रीय मेहराब विस्तार के साथ, चिनाब नदी पर यह प्रतिष्ठित पुल समुद्र तल से 359 मीटर (कुतुबमीनार (72 मीटर ऊंचाई) और एफिल टॉवर (324 मीटर ऊंचाई) से अधिक की ऊंचाई पर बनाया गया है।

आज़ादी के बाद पहली बार, यूएसबीआरएल कश्मीर घाटी को हर मौसम में रेल कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। कश्मीर को निर्बाध और परेशानी मुक्त कनेक्टिविटी प्रदान करने में 272 कि.मी. लंबी यूएसबीआरएल परियोजना के महत्त्व को देखते हुए वर्ष 2002 में इसे 'राष्ट्रीय परियोजना' घोषित किया गया था।

कुल 272 कि.मी. लंबी यूएसबीआरएल परियोजना में से, 161 कि.मी. रेलवे ट्रैक को 3 चरणों में चालू किया गया है, जिसमें 118 कि.मी. बारामूला–काजीगुंड का पहला चरण 2009 में चालू किया गया था, 18 कि.मी. का काजीगुंड–बनिहाल का दूसरा चरण 2013 में चालू किया गया था, जो सबसे लंबी परिचालन में परिवहन सुरंग है। भारत में 11.2 कि.मी. और 25 कि.मी. उधमपुर–कटरा का तीसरा चरण 2014 में शुरू हुआ।

हाल ही में नए केन्द्रीय मंत्रिमंडल का गठन किया गया। इसमें पुनः रेल मंत्री पद की जिम्मेदारी श्री अश्विनी वैष्णव को दी गई है, अपने प्रथम कार्यकाल के दौरान आपने अपनी दूरदर्शिता, सूझ–बूझ से भारतीय रेल को विश्वस्तरीय बनाने के लिए जो प्रयास किए, उसकी चौतरफा प्रशंसा हुई थी। निश्चित तौर पर दूसरे कार्यकाल में आपके नेतृत्व में भारतीय रेल नए आयाम सिद्ध करेगी। दिनांक 11 जून, 2024 को रेल मंत्री श्री वैष्णव के साथ रेल राज्य मंत्री के पद पर श्री वी. सोमन्ना तथा रवनीत सिंह ने अपनी जिम्मेदारी संभाल ली है। 'भारतीय रेल' तथा 'इंडियन रेलवेज़' पत्रिका की टीम की ओर से रेल मंत्री तथा दोनों रेल राज्य मंत्रियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएँ।

# माननीय प्रधानमंत्री ने
# कई रेल परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया

- *माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मार्च 2024 में 10 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों सहित कई अन्य ट्रेनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया*
- *प्रधानमंत्री द्वारा गुजरात, बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, उत्तर प्रदेश और असम राज्यों की कई रेल परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण कर राष्ट्र को समर्पित किया गया*




*दिनांक 12 मार्च, 2024 को अहमदाबाद में आयोजित एक कार्यक्रम में 10 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। इस अवसर पर गुजरात के राज्यपाल माननीय श्री आचार्य देवव्रत, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भुपेन्द्र पटेल और रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव उपस्थित थे*

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 12 मार्च, 2024 को गुजरात के अहमदाबाद में डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के ऑपरेशन कंट्रोल सेंटर में विभिन्न विकास परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित किया और आधारशिला रखी। उन्होंने 10 नई वंदे भारत ट्रेनों को भी हरी झंडी दिखाई, जो इस प्रकार हैं –

अहमदाबाद–मुम्बई सेन्ट्रल, सिकंदराबाद–विशाखापट्टनम, मैसूर–डॉ. एम.जी.आर. सेन्ट्रल (चेन्नई), पटना–लखनऊ, न्यू जलपाईगुड़ी–पटना, पुरी–विशाखापट्टनम, लखनऊ–देहरादून, कलबुर्गी–सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल बेंगलुरू, रांची–वाराणसी, खजुराहो–दिल्ली (निजामुद्दीन)।

श्री मोदी ने चार वंदे भारत ट्रेनों के विस्तार को भी हरी झंडी दिखाई। अहमदाबाद–जामनगर वंदे भारत को द्वारका तक, अजमेर–दिल्ली सराय रोहिल्ला वंदे भारत को चंडीगढ़ तक, गोरखपुर–लखनऊ वंदे भारत को प्रयागराज तक और तिरुवनंतपुरम–कासरगोड वंदे भारत को मंगलुरु तक बढ़ाया जा रहा है। आसनसोल और हटिया तथा तिरूपति और कोल्लम स्टेशनों के बीच दो नई यात्री ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई गईं। प्रधानमंत्री ने विभिन्न स्थानों–न्यू खुर्जा जंक्शन, साहनेवाल, न्यू रेवाड़ी, न्यू किशनगढ़, न्यू घोलवड और न्यू मकरपुरा से समर्पित माल गलियारे पर मालगाड़ियों को भी हरी झंडी दिखाई।

प्रधानमंत्री ने रेलवे कार्यशालाओं, लोको शेडों, पिट लाइनों/कोचिंग डिपो, फलटण–बारामती नई लाइन; इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन सिस्टम उन्नयन कार्य की आधारशिला रखी और पूर्वी डीएफसी के न्यू खुर्जा से साहनेवाल (401 मार्ग कि.मी.) खंड और पश्चिमी डीएफसी के न्यू मकरपुरा से न्यू घोलवड खंड (244 मार्ग कि.मी.) के बीच समर्पित माल गलियारे के दो नए खंड और वेस्टर्न डीएफसी का अहमदाबाद में ऑपरेशन कंट्रोल सेंटर (ओसीसी) राष्ट्र को समर्पित किया।

प्रधानमंत्री ने रेलवे स्टेशनों पर 50 प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि केंद्र राष्ट्र को समर्पित किए। इन जन औषधि केंद्रों पर लोगों को सस्ती और गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाएं मिलेंगी। प्रधानमंत्री ने 51 गति शक्ति मल्टी–मॉडल कार्गो टर्मिनल भी राष्ट्र को समर्पित किए। ये टर्मिनल परिवहन के विभिन्न साधनों से माल की निर्बाध आवाजाही को बढ़ावा देंगे। प्रधानमंत्री ने 80 खंडों में 1,045 मार्ग कि.मी. स्वचालित सिगनलिंग राष्ट्र को समर्पित की। इस उन्नयन से ट्रेन संचालन की सुरक्षा और दक्षता में वृद्धि होगी। प्रधानमंत्री ने 2,646

स्टेशनों पर रेलवे स्टेशनों की डिजिटल कंट्रोलिंग भी राष्ट्र को समर्पित की। इससे ट्रेनों की परिचालन दक्षता और सुरक्षा में सुधार होगा। प्रधानमंत्री ने 35 रेल कोच रेस्तरां राष्ट्र को समर्पित किए। रेल कोच रेस्तरां का लक्ष्य रेलवे के लिए गैर-किराया राजस्व उत्पन्न करने के साथ ही यात्रियों और जनता की जरूरतों को पूरा करना है।

प्रधानमंत्री ने देश भर में 1,500 से अधिक 'एक स्टेशन एक उत्पाद' स्टॉल राष्ट्र को समर्पित किए। इन स्टॉलों पर बिक्री के लिए स्थानीय उत्पाद उपलब्ध रहेंगे, जिससे स्थानीय कारीगरों और व्यावसायियों की कमाई बढ़ेगी। प्रधानमंत्री ने 975 स्थानों पर सौर ऊर्जा संचालित स्टेशन/भवन राष्ट्र को समर्पित किए। यह पहल भारत के अक्षय ऊर्जा लक्ष्यों में योगदान देगी और रेलवे के कार्बन उत्सर्जन को कम करेगी।

## पश्चिम बंगाल

कोलकाता मेट्रो को एक नई उपलब्धि हासिल हुई जब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 6 मार्च, 2024 को ईस्ट-वेस्ट मेट्रो के बहुप्रतीक्षित हावड़ा मैदान से एस्प्लानेड विस्तार खंड (4.8 कि.मी.) का नवनिर्मित एस्प्लानेड मेट्रो स्टेशन से उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री ने ऑरेंज लाइन के कवि सुभाष-हेमंत मुखोपाध्याय विस्तार खंड (5.4 कि.मी.) और पर्पल लाइन के विस्तारित तारातला-माझेरहाट खंड (1.25 कि.मी.) का भी उद्घाटन किया। इन लाइनों के उद्घाटन से कोलकाता और हावड़ा के यातायात परिदृश्य में आमूल-चूल परिवर्तन आएगा।

श्री मोदी ने उद्घाटन से पहले नवनिर्मित एस्प्लानेड स्टेशन के बाहर और अंदर धैर्यपूर्वक इंतजार कर रही भीड़ का हाथ हिलाकर अभिवादन किया। मेट्रो रेल के महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने उन्हें 3-डी मॉडल के माध्यम से ईस्ट-वेस्ट मेट्रो परियोजना के बारे में जानकारी दी। प्रधानमंत्री ने इंजीनियरी के इस चमत्कार को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और सभी मेट्रो अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ-साथ उन इंजीनियरों और मजदूरों की सराहना की जिन्होंने देश में पहली बार हुगली जैसी विशाल नदी के नीचे मेट्रो सेवाएँ चलाने के सपने को साकार करने के लिए कड़ी मेहनत की जो जन परिवहन को द्रुतगामी, परेशानी मुक्त और पर्यावरण अनुकूल बनाएगी।

उद्घाटन के बाद श्री मोदी ने इन तीन मार्गों पर पहली मेट्रो सेवाओं को हरी झंडी दिखाई। उन्होंने एस्प्लानेड से हावड़ा मैदान और वापस एस्प्लानेड तक मेट्रो में यात्रा भी की। इस मेट्रो यात्रा के दौरान वे स्कूली बच्चों, मजदूरों और इन परियोजनाओं से जुड़े इंजीनियरों के पास बैठे और उनसे बातचीत की। उन्होंने उनसे कोलकाता मेट्रो से उनकी अपेक्षाओं के बारे में पूछा और पहली बार हुगली नदी के नीचे यात्रा करते हुए उनके अनुभवों के बारे में भी पूछा। छात्रों ने कोलकाता और उपनगरीय इलाकों के लोगों को ऐसा ड्रीम प्रोजेक्ट पेश करने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया।

गौरतलब है कि कोलकाता मेट्रो नेटवर्क में कुल ₹6,925 करोड़ की लागत से 11.45 कि.मी. की दूरी जुड़ गई है। ये परियोजनाएँ दक्षिण 24 परगना, हावड़ा, हुगली मिदनापुर के दूर-दराज के इलाकों के लोगों को कोलकाता और उसके आसपास बिना किसी ट्रैफिक जाम के और तेज गति से यात्रा करने में मददगार होंगी।

इसके अलावा, प्रधानमंत्री ने आगरा, पुणे, कोच्चि और दिल्ली-मेरठ आरआरटीएस खंड के एक हिस्से सहित कई मेट्रो परियोजनाओं का भी उद्घाटन किया। और इन मार्गों पर पहली मेट्रो सेवाओं को भी हरी झंडी दिखाई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 9 मार्च, 2024 को उत्तर बंगाल और इसके आसपास के क्षेत्र के लोगों को लाभ पहुँचाने के लिए 438.77 कि.मी. रेल लाईनों की कई विद्युतीकृत परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित किया। इन परियोजनाओं में एकलाखी-बालुरघाट सेक्शन, बारसोई-राधिकापुर सेक्शन, रानीनगर जलपाईगुड़ी-हल्दीबाड़ी सेक्शन, सिलीगुड़ी-आलुआबाड़ी सेक्शन वाया बागडोगरा और सिलीगुड़ी-सेवक-अलीपुरद्वार जंक्शन-सामुकतला सेक्शन (अलीपुरद्वार जंक्शन-न्यू कोचबिहार सहित) शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री ने मनिग्राम-निमत्ति सेक्शन में रेल लाइन के दोहरीकरण और न्यू जलपाईगुड़ी में इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सहित आमबाड़ी फालाकाटा-आलुआबाड़ी में स्वचालित ब्लॉक सिगनलिंग परियोजना सहित अन्य महत्त्वपूर्ण रेल परियोजनाओं को भी राष्ट्र को समर्पित किया। श्री मोदी ने सिलीगुड़ी और राधिकापुर के बीच एक नई यात्री ट्रेन सेवा को भी हरी झंडी दिखाई। इस सेक्शन में रेल



*हुगली नदी के नीचे मेट्रो सेवा के उद्घाटन के बाद प्रधानमंत्री श्री मोदी ने एस्प्लानेड से हावड़ा मैदान और वापस एस्प्लानेड तक मेट्रो में यात्रा की। इस मेट्रो यात्रा के दौरान वे स्कूली बच्चों, मजदूरों और इन परियोजनाओं से जुड़े इंजीनियरों के पास बैठे और उनसे बातचीत की।*

लाइनों के दोहरीकरण से थर्मल पॉवर प्लांटों के लिए कोयला रेक की आवाजाही में सुविधा होगी। ये रेल परियोजनाएँ रेल संपर्क में सुधार लाएंगी एवं माल परिवहन को सुविधाजनक बनाएंगी और क्षेत्र में रोज़गार सृजन एवं आर्थिक विकास में योगदान देंगी।

इससे पहले, प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जोरहाट से असम में 70.59 कि.मी. रेल लाइनों की दो रेल दोहरीकृत परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित किया। न्यू बोंगाईगाँव-ग्वालपाड़ा-कामाख्या दोहरीकरण परियोजना का हिस्सा धूपधरा-छायगाँव सेक्शन दोहरीकृत और न्यू बोंगाईगाँव-रंगिया-आगियाठरी दोहरीकरण परियोजना का हिस्सा न्यू बोंगाईगाँव-सरभोग सेक्शन में दोहरीकृत लाईन को राष्ट्र को समर्पित किया। इन परियोजनाओं को ₹1,328 करोड़ की लागत से पूरा किया गया।

## बिहार

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 2 मार्च, 2024 को बिहार में आयोजित कार्यक्रम में 'पीएम की गति शक्ति योजना' के तहत 64 कि.मी. लंबी मुकुरिया-कटिहार-कुमेदपुर रेल लाइन के दोहरीकरण की आधारशिला रखी गई, जिसकी बजट लागत ₹942 करोड़ है। ₹151 करोड़ की बजट लागत से एक और विद्युतीकृत परियोजना कटिहार-जोगबनी रेल सेक्शन का उद्घाटन किया गया, जो बिहार राज्य के कटिहार, पूर्णिया और अररिया जिलों के 106 रूट कि.मी. विद्युतीकृत सेक्शनों को कवर करता है। चूँकि जोगबनी नेपाल सीमा के निकट है, इसलिए अत्यधिक भार वहन करने वाली मालगाड़ियाँ नेपाल की ओर आसानी से जा सकेंगी, जिससे क्षेत्र के व्यापारियों और व्यवसायियों को लाभ होगा।

प्रधानमंत्री ने देश के बाकी हिस्सों के साथ बिहार राज्य की कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए चार एक्सप्रेस ट्रेनों को भी हरी झंडी दिखाई ये ट्रेनें-दानापुर-जोगबनी एक्सप्रेस (वाया दरभंगा- सकरी), जोगबनी-सहरसा एक्सप्रेस, सोनपुर-वैशाली एक्सप्रेस और जोगबनी-सिलीगुड़ी एक्सप्रेस हैं। इसके अलावा उन्होंने राघोपुर-फारबिसगंज आमान परिवर्तन का लोकार्पण और बरौनी-बछवारा सेक्शन में तीसरी और चौथी रेल लाइन परियोजना का शिलान्यास किया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने दिनांक 6 मार्च, 2024 को बिहार के बेतिया में लगभग ₹12,800 करोड़ की रेल परियोजनाओं की आधारशिला रखी और राष्ट्र को समर्पित किया। उन्होंने रक्सौल-जोगबनी के बीच चलने वाली ट्रेन सेवा की उद्घाटन व स्पेशल रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखाई।

## ओडिशा

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 5 मार्च, 2024 को ओडिशा के चंडीखोल में 162 कि.मी. बांशपानी-दैतारी-टमका-जखपुरा रेल लाइन राष्ट्र को समर्पित की। यह न केवल मौजूदा यातायात सुविधा की क्षमता को बढ़ाएगी, बल्कि क्योंझर जिले से निकटतम बंदरगाहों और इस्पात संयंत्रों तक लौह और मैंगनीज अयस्क के कुशल परिवहन की सुविधा भी प्रदान करेगी, जो क्षेत्रीय आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी। कलिंग नगर में कॉनकोर कंटेनर डिपो का उद्घाटन भी घरेलू और अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया। नरला में इलेक्ट्रिक लोको पीरियोडिकल ओवरहॉलिंग वर्कशॉप, कांटाबांजी में वैगन पीरियोडिकल ओवरहॉलिंग वर्कशॉप और बाघुआपाल में रख-रखाव सुविधाओं के उन्नयन और संवर्द्धन की आधारशिला रखी गई। अन्य रेलवे परियोजनाओं में नई ट्रेन सेवाओं को हरी झंडी दिखाना शामिल है। इस अवसर पर ओडिशा के राज्यपाल श्री रघुबर दास, ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक और केंद्रीय मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे।

## उत्तर प्रदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 10 मार्च, 2024 को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में एक कार्यक्रम में लगभग ₹8,200 करोड़ की कई रेल परियोजनाओं का उद्घाटन, लोकार्पण और शिलान्यास किया, जिससे उत्तर प्रदेश में रेल बुनियादी ढाँचा सुदृढ़ होगा। उन्होंने कई प्रमुख रेल खंडों के दोहरीकरण और विद्युतीकरण कार्य का लोकार्पण किया। उन्होंने भटनी-पिवकोल बाइपास लाइन भी राष्ट्र को समर्पित की, जिससे भटनी में इंजन पलटने की समस्या खत्म हो जाएगी और ट्रेनों का निर्बाध संचालन हो सकेगा। माननीय प्रधानमंत्री ने बहराइच-नानपारा-नेपालगंज रोड रेल खंड के आमान-परिवर्तन की आधारशिला रखी। इस परियोजना के पूरा होने के बाद यह क्षेत्र ब्रॉड गेज लाइन के माध्यम से महानगरों से जुड़ जाएगा, जिससे तेजी से विकास हो सकेगा। प्रधानमंत्री ने गंगा नदी पर एक रेल पुल सहित गाजीपुर शहर और गाजीपुर घाट से तारीघाट तक एक नई रेल लाइन का भी उद्घाटन किया। और गाजीपुर सिटी- तारीघाट-दिलदारनगर जंक्शन के बीच मेमू ट्रेन सेवा को भी हरी झंडी दिखाई।



## असम

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 9 मार्च, 2024 को असम के जोरहाट में धूपधारा-छायगाँव खंड (न्यू बोंगाईगाँव-गुवाहाटी वाया गोलपारा दोहरीकरण परियोजना का हिस्सा) और न्यू बोंगाईगाँव-सोरभोग खंड (न्यू बोंगाईगाँव-अगथोरी दोहरीकरण परियोजना का हिस्सा) सहित ₹1,300 करोड़ से अधिक की महत्त्वपूर्ण रेल परियोजनाएँ राष्ट्र को समर्पित कीं।■

# हमारे नए रेल मंत्री एवं रेल राज्य मंत्री

**दिनांक 11 जून, 2024 को रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव और रेल राज्य मंत्री श्री वी. सोमन्ना तथा श्री रवनीत सिंह ने रेल भवन में अपना पदभार ग्रहण किया**



## श्री अश्विनी वैष्णव, रेल मंत्री

केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने दिनांक 11 जून, 2024 को रेल भवन में पदभार ग्रहण किया। रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती जया वर्मा सिन्हा ने वरिष्ठ रेल अधिकारियों के साथ रेल भवन में उनका स्वागत किया। हाउसकीपिंग स्टाफ और रेलकर्मियों ने पुष्प देकर श्री वैष्णव को बधाई दी।

इस अवसर पर मीडिया को सम्बोधित करते हुए श्री वैष्णव ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा निर्धारित दीर्घकालिक विजन को साकार करने के लिए अपनी अटूट प्रतिबद्धता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का रेलवे के साथ एक विशेष भावनात्मक जुड़ाव है और उन्होंने मुझे अपने परिवर्तनकारी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी सौंपी है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भारतीय रेल आम जनता के लिए परिवहन का एक किफायती और सुविधाजनक साधन बना रहे।''

दिनांक 8 जुलाई, 2021 को पहली बार रेल मंत्री बने श्री वैष्णव ने अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत आशा और उम्मीद के साथ की है।

अपने पिछले कार्यकाल के दौरान, उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा निर्धारित दूरदर्शी एजेंडे के अनुरूप कई परिवर्तनकारी परियोजनाओं की शुरुआत की और उन्हें क्रियान्वित किया। इन पहलों में रेलवे के बुनियादी ढाँचे का आधुनिकीकरण और पुनरुद्धार शामिल है, जिसमें स्टेशनों का परिवर्तन, नई ट्रेनों की शुरुआत, व्यापक स्टेशन पुनर्विकास कार्यक्रम, नई रेल लाइनों की शुरुआत और व्यापक विद्युतीकरण जैसी पहल शामिल हैं।

श्री अश्विनी वैष्णव (जन्म 1970) ओडिशा से राज्यसभा के सदस्य हैं। वे पूर्व में आईएएस अधिकारी थे और इन्होंने जिला कलेक्टर के रूप में सुंदरगढ़, बालासोर और कटक के लोगों की सेवा की। श्री वैष्णव ने आईआईटी कानपुर से प्रौद्योगिकी स्नातकोत्तर और व्हार्टन से एमबीए किया है।■

# श्री वी. सोमन्ना, रेल राज्य मंत्री



केंद्रीय रेल एवं जल शक्ति राज्य मंत्री श्री वी. सोमन्ना ने दिनांक 11 जून, 2024 को रेल भवन में पदभार संभाला। रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती जया वर्मा सिन्हा तथा वरिष्ठ रेल अधिकारियों ने रेल भवन पहुँचने पर उनका स्वागत किया।

मीडियाकर्मियों को सम्बोधित करते हुए श्री वी. सोमन्ना ने कहा, मुझे मंत्री पद की जिम्मेदारी सौंपने के लिए मैं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और अपनी पार्टी का आभारी हूँ। पिछले 10 वर्षों में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में रेलवे ने उल्लेखनीय वृद्धि की है।

श्री वी. सोमन्ना ने कहा कि जैसे-जैसे हम मोदी 3.0 में आगे बढ़ेंगे, हम रेलवे की विकास गति को बनाए रखेंगे। उन्होंने कहा, रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव के कुशल मार्गदर्शन में काम करने और रेलवे और विकसित भारत के विकास में योगदान देने में मुझे प्रसन्नता हो रही है। हम सब मिलकर विकसित भारत के सपने को साकार करेंगे और इसके लिए हम चौबीसों घंटे काम करेंगे।

कर्नाटक के तुमकुर निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा सांसद इससे पहले राज्य में मंत्री पद संभाल चुके हैं।■

# श्री रवनीत सिंह, रेल राज्य मंत्री

श्री रवनीत सिंह, केंद्रीय रेल एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री ने दिनांक 11 जून, 2024 को रेल भवन में पदभार ग्रहण किया। रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती जया वर्मा सिन्हा तथा वरिष्ठ रेल अधिकारियों ने रेल भवन पहुँचने पर उनका स्वागत किया।

मीडियाकर्मियों को सम्बोधित करते हुए श्री रवनीत सिंह ने कहा, आज मैं रेल राज्य मंत्री के रूप में कार्यभार ग्रहण कर रहा हूँ। मैं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी तथा रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव का आभार व्यक्त करता हूँ। उन्होंने कहा, हमें रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड के सदस्य और अधिकारियों के साथ मिलकर काम करना है। मैं देश के नागरिकों को भी बधाई देता हूँ। रेलवे आम लोगों को जोड़ती है, इसकी बहुत बड़ी भूमिका है। रेलवे लगातार 24x7 चलती है, हम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव के मार्गदर्शन में इसे आगे बढ़ाने के लिए एक टीम के रूप में काम करेंगे।■



*वर्ष 1946 से लेकर अब तक के रेल मंत्रियों और रेल राज्य मंत्रियों की सूची देखें- पृष्ठ सं. 38 पर*

# रेल मंत्री ने दक्षिण रेलवे के प्रदर्शन की समीक्षा बैठक की



*दक्षिण रेलवे मुख्यालय में दक्षिण रेलवे तथा आईसीएफ की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव तथा साथ में हैं आईसीएफ के महाप्रबंधक श्री यू. सुब्बा राव तथा अन्य उच्च अधिकारीगण*

रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने दिनांक 13 मार्च, 2024 को दक्षिण रेलवे मुख्यालय में एक समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में सवारी डिब्बा कारखाना (आईसीएफ) के महाप्रबंधक श्री यू. सुब्बा राव, दक्षिण रेलवे के अतिरिक्त महाप्रबंधक श्री कौशल किशोर एवं क्षेत्रीय रेलवे के सभी प्रमुख विभागाध्यक्षों ने भाग लिया।

रेल मंत्री ने संरक्षा, अमृत भारत योजना के तहत बुनियादी ढाँचे और स्टेशन पुनर्विकास परियोजनाओं की प्रगति, गति वृद्धि कार्यों, ट्रेनों की समय सारिणी, रेलवे संपत्तियों के रखरखाव और माल लदान में वृद्धि से संबंधित मामलों की समीक्षा और विचार-विमर्श किया।

समीक्षा बैठक में आरवीएनएल के क्षेत्रीय प्रमुख सहित क्षेत्रीय रेलवे के सभी प्रमुख विभागाध्यक्षों ने भाग लिया। दिनांक 14 मार्च, 2024 को रेल मंत्री श्री वैष्णव ने घोषणा की कि फोर्जिंग प्रक्रिया का उपयोग करने वाले पहियों का निर्माण तमिलनाडु में किया जाएगा और निर्माण कार्य पहले ही शुरू हो चुका है और उत्पादन 16-18 महीनों में शुरू हो जाएगा। तमिलनाडु के गुम्मिडिपुंडी में इस विनिर्माण इकाई की प्रति वर्ष 2.5 लाख की विशाल उत्पादन क्षमता होगी। जिसमें से 80,000 की खपत भारत में होगी और बाकी 1.7 लाख का निर्यात किया जाएगा। रेल मंत्री ने बताया कि हम पिछले 60-70 वर्षों से फोर्ज्ड पहियों के आयातक रहे हैं और अब इस संयंत्र की स्थापना के साथ, भारत फोर्ज्ड पहियों का निर्यातक बन जाएगा।

रेल मंत्री ने यह भी घोषणा की कि आईसीएफ, चेन्नई अब मानक गेज वाली वंदे भारत विकसित करेगी क्योंकि यह मानक गेज है, जिसका उपयोग दुनिया भर में रेलवे में किया जाता है। वर्तमान में, भारतीय रेल नेटवर्क में उपयोग के लिए ब्रॉड गेज वंदे भारत का निर्माण आईसीएफ में किया जा रहा है।■

# रेल राज्य मंत्री ने रेलवे बोर्ड के सदस्यों के साथ उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की

केंद्रीय रेल और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री श्री रवनीत सिंह ने दिनांक 11 जून, 2024 को रेलवे बोर्ड के सदस्यों के साथ एक उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की। इस बैठक के दौरान, रेलवे बोर्ड के सदस्यों ने रेलवे का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया और मंत्री को भारतीय रेल में चल रही विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया श्री रवनीत सिंह ने अधिकारियों से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन को साकार करने और भारतीय रेल को विश्व के एक श्रेष्ठ रेलवे में बदलने के लिए एक टीम के रूप में सामूहिक रूप से काम करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि आम जन के लिए रेल सुविधाजनक परिवहन साधन है, भारतीय रेल को सभी वर्गों विशेषकर गरीब वर्ग के हितों को ध्यान में रखने के लिए सभी प्रयास करने चाहिए।■



*रेल राज्य मंत्री श्री रवनीत सिंह ने श्रीमती जया वर्मा सिन्हा, अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा बोर्ड सदस्यों के साथ एक उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की*

# गुजरात के माननीय राज्यपाल का बनारस रेल इंजन कारखाना दौरा

दिनांक 3 अप्रैल, 2024 को गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत ने बनारस रेल इंजन कारखाना का दौरा किया। इस दौरान माननीय राज्यपाल ने रेल इंजन की उत्पादन गतिविधियों, निर्माण सुविधाओं, बरेका में चल रही परियोजनाओं के साथ ही उत्पादन प्रक्रिया, अन्य तकनीकी विषयों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर बरेका के महाप्रबंधक श्री बासुदेव पांडा उपस्थित थे। इस दौरान रेल इंजन निर्माण से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर चर्चा करते हुए श्री देवव्रत ने रेल से जुड़े अपने अनुभवों को भी साझा किया। बरेका कर्मशाला के हार्नेस सेक्शन में समर्पित रूप से कार्य कर रही महिला कर्मियों को देखकर राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत काफी खुश हुए। उन्होंने इंजन निर्माण प्रक्रिया के सम्बन्ध में बात करते हुए महिला रेल कर्मियों की सराहना भी की।■




# आरडीएसओ को उत्तर प्रदेश की माननीय राज्यपाल द्वारा 'रक्तदान सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया



आरडीएसओ चिकित्सालय को स्वैच्छिक रक्तदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य एवं अनुकणीय योगदान हेतु के.जी.एम.यू., लखनऊ में दिनांक 14 जून, 2024 को 'विश्व रक्तदाता दिवस' के अवसर पर आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में श्रीमती आनंदीबेन पटेल, माननीय राज्यपाल, उत्तर प्रदेश द्वारा रक्तदान सेवा सम्मान-पत्र से सम्मानित किया गया। डॉ. कमल किशोर, प्रधान मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं डॉ. मेराज अहमद/सीनियर डीएमओ ने संयुक्त रूप से आरडीएसओ की ओर से यह सम्मान ग्रहण किया।■

# भारतीय रेल ने 'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में अपना नाम दर्ज कराया

भारतीय रेल ने एक सार्वजनिक-सेवा कार्यक्रम में अनेक स्थानों पर सर्वाधिक लोगों के एकत्रित होने पर अपना नाम प्रतिष्ठित 'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में सफलतापूर्वक दर्ज करा दिया है।

रेल मंत्रालय ने दिनांक 26 फरवरी, 2024 को एक कार्यक्रम आयोजित किया था, जिसमें 2,140 स्थानों पर 40,19,516 लोगों ने भाग लिया था।

यह कार्यक्रम माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा रेलवे पुलों के ऊपर/नीचे सड़क के उद्घाटन और रेलवे स्टेशनों की आधारशिला रखने के लिए आयोजित किया गया था। भारतीय रेल के उत्कृष्ट व्यापक प्रयास एवं गतिशीलता को सराहा गया है और इसे प्रतिष्ठित 'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में दर्ज किया गया है।■



# अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

## योग - आपके व समाज के लिए

- तनाव व चिंता में कमी
- दिल से जुड़ी बीमारियों से छुट्टी
- शक्ति, संतुलन और लचीलापन में वृद्धि



*अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर लोधी गार्डन, नई दिल्ली में योग सत्र में भाग लेते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव*



*श्री वी. सोमन्ना, रेल राज्य मंत्री ने उत्साही साथियों के साथ 10वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया*



*उत्तर रेलवे द्वारा दिनांक 21 जून, 2024 को नई दिल्ली के करनैल सिंह स्टेडियम में 10वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्रीमती जया वर्मा सिन्हा, रेलवे बोर्ड के सदस्य अवसंरचना, श्री अनिल कुमार खंडेलवाल, सदस्य ट्रैक्शन एवं रोलिंग स्टॉक श्री सतीश कुमार, रेलवे बोर्ड के अन्य सदस्य तथा वरिष्ठ अधिकारी, महाप्रबंधक उत्तर रेलवे, श्री शोभन चौधुरी सहित दिल्ली मंडल के मण्डल रेल प्रबंधक, श्री सुखविंदर सिंह तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित थे और उन्होंने योगआसन द्वारा इसमे सहभागिता की। योग प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में योग सत्र में बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह के साथ इसमें भाग लिया। इस अवसर पर सरल और उपयोगी योग आसन और योग क्रियाएँ भी की गईं।*



दक्षिण रेलवे के महाप्रबंधक श्री आर. एन. सिंह ने नुंगमबक्कम, चेन्नई में रेलवे ऑफिसर्स क्लब में योग सत्र का उद्घाटन किया। दक्षिण रेलवे के अपर महाप्रबंधक श्री कौशल किशोर और सभी प्रमुख विभागाध्यक्षों, दक्षिण रेलवे के सभी छह मंडलों और दक्षिण रेलवे की कार्यशालाओं ने भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया।

दक्षिण मध्य रेलवे ने दिनांक 21 जून, 2024 को इनडोर स्टेडियम, रेलवे स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, सिकंदराबाद में 10वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। इस अवसर पर दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री अरुण कुमार जैन मुख्य अतिथि थे।





अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर रेल पहिया कारखाने में आयोजित योग और प्राणायाम सत्र में महाप्रबंधक श्री आर राजगोपाल, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी श्रीमती सुवर्णा देशपांडे दाश, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्षों, वरिष्ठ अधिकारियों, कर्मचारी परिषद और विभिन्न संगठनों के सदस्य, कर्मचारी और बच्चों ने भाग लिया।



रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला में दिनांक 21 जून, 2024 को 10वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत श्री मंजुल माथुर महाप्रबन्धक आर.सी.एफ. द्वारा की गई इस अवसर पर प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री अरुण कुमार जैन, अन्य उच्च अधिकारी तथा महिला कल्याण संगठन की सदस्य भी उपस्थित थी।



दिनांक 21 जून, 2024 को 10वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर बनारस रेल इंजन कारखाना में योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बरेका परिसर में विभिन्न स्थानों पर योगाभ्यास कराया गया। बरेका अधिकारी क्लब में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बरेका महाप्रबंधक श्री अभय बाकरे एवं जन सम्पर्क अधिकारी श्री राजेश कुमार, कर्मचारी परिषद के संयुक्त सचिव श्री श्रीकांत यादव के साथ ही समस्त विभागाध्यक्ष अधिकारीयों एवं उनके परिवार जनों ने योगाभ्यास किया।



भारतीय रेल सिगनल इंजीनियरी एवं दूरसंचार संस्थान (इरिसेट) ने सिकंदराबाद स्थित अपने परिसर में 10वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। श्री सी के प्रसाद, डीन, वरिष्ठ अधिकारी, संकाय, कर्मचारी और प्रशिक्षुओं ने योगाभ्यास में भाग लिया। लगभग 200 प्रशिक्षुओं और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

# रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे का किया निरीक्षण



श्रीमती जया वर्मा सिन्हा, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (डीएचआर) का निरीक्षण किया। दिनांक 4 अप्रैल, 2024 को निरीक्षण के दौरान पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव के साथ कई विभागों के प्रधान और कटिहार के मंडल रेलवे प्रबंधक भी मौजूद थे। उन्होंने 109 वर्ष पुराने तिनधरीया कारखाना का निरीक्षण किया और इस धरोहर स्थल के संरक्षण पर जोर दिया। वर्ष 1915 में तिनधरीया कारखाना स्थापित किया गया था और यह भारतीय रेल का एकमात्र कारखाना है, जहाँ भाप इंजन और छोटी लाइन के वुडेन बॉडी कोच का अनुरक्षण किया जाता है। उन्होंने 100 साल पुराने वाष्प इंजन लोको 802-बी का भी मुआयना किया, जो आज भी डीएचआर में संचालित है। दार्जिलिंग जाने के क्रम में उन्होंने कई 'जेड' रिवर्स और लूप का भी निरीक्षण किया। बाद में, उन्होंने 'असम रेल लिंक प्रोजेक्ट' के तत्कालीन मुख्यालय और डीएचआर के मुख्यालय एलिसिया प्लेस का दौरा किया। उन्होंने वहां लघु संग्रहालय और डीएचआर कार्यालय का दौरा किया। बाद में, डीएचआर के अधिकारियों के साथ बातचीत कर उन्होंने कामकाज के सभी पहलुओं पर प्रदर्शन की समीक्षा की।

श्रीमती सिन्हा वर्मा ने दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे रूट पर महत्त्वपूर्ण पड़ाव कार्सियांग स्टेशन का भी निरीक्षण किया, जो डीएचआर के लिए एक महत्त्वपूर्ण परिचालनिक और प्रशासनिक केंद्र के रूप में सेवा प्रदान करता है। इसके बाद उन्होंने घुम संग्रहालय और स्टेशन का निरीक्षण किया, जो भारत का सबसे ऊँचा रेलवे स्टेशन है। बाद में, उन्होंने दार्जिलिंग स्टेशन का दौरा किया और नव पुनर्निर्मित विरासत टर्नटेबल का भी निरीक्षण किया। उन्होंने कार्सियांग, घुम और दार्जिलिंग स्टेशनों पर सभी यात्री सुविधाओं का जायजा लिया।■

# सेवक – रंगपो रेल परियोजना का रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा निरीक्षण

श्रीमती जया वर्मा सिन्हा, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने दिनांक 5 अप्रैल, 2024 को निर्माणाधीन सेवक-रंगपो रेल परियोजना (एसआरआरपी) का गहन निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उनके साथ पू. सी. रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव एवं पू. सी. रेलवे (निर्माण) के महाप्रबंधक श्री सतीश कुमार पाण्डेय के अलावा अन्य वरिष्ठ रेल एवं निर्माण अधिकारी उपस्थित थे।

सेवक-रंगपो नई रेल लाइन परियोजना भारत में चल रही सबसे प्रतिष्ठित राष्ट्रीय परियोजनाओं में से एक है, जिसका उद्देश्य वर्तमान में सड़क पर निर्भर सिक्किम राज्य को देश के रेलवे मानचित्र से जोड़ना है। रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने कार्यों की प्रगति का जायजा लिया और इस परियोजना के टनल संख्या टी-1 एवं टी-8 के लाइनिंग कार्यों का निरीक्षण किया। रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने इस परियोजना के टनल संख्या टी-7 का भी निरीक्षण किया। विशेष रूप से, भारतीय रेल नेटवर्क में पहला भूमिगत रेलवे स्टेशन यानी तीस्ता बाजार स्टेशन इसी टनल के अंतर्गत आता है, जो देश में रेलवे बुनियादी ढाँचे की उन्नति में एक अग्रणी कदम है। उन्होंने तीस्ता ब्रिज और सेवक स्टेशन के निर्माण कार्य का भी मुआयना किया।



बाद में, उन्होंने सेवक-रंगपो नई रेल परियोजना के सभी पहलुओं पर इरकॉन के अधिकारियों के साथ बातचीत की। अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने टनल निर्माण में संरक्षा और स्थिरता पर जोर दिया जो निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है। इस परियोजना के पूर्ण होने पर सिक्किम राज्य पहली बार रेलवे से जुड़ जाएगा। इस परियोजना में 14 टनलों (कुल 38.53 कि.मी.) 5 रेलवे स्टेशनों और 13 बड़े पुलों का निर्माण शामिल है।■

# सदस्य, कर्षण एवं रोलिंग स्टॉक, रेलवे बोर्ड ने किया बरेका का निरीक्षण

दिनांक 23 मार्च, 2024 को सदस्य कर्षण एवं रोलिंग स्टॉक, रेलवे बोर्ड श्री सतीश कुमार ने बनारस रेल इंजन कारखाना का निरीक्षण किया। इस दौरान प्रमुख कार्यकारी निदेशक, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, रोलिंग स्टॉक श्री मोहित चन्द्रा भी उपस्थित रहे। सदस्य कर्षण एवं रोलिंग स्टॉक ने बरेका के लोको फ्रेम शॉप, लोको असेम्बली शॉप, लोको टेस्ट शॉप, निर्माणाधीन न्यू लोको प्रोजेक्ट साइट एवं न्यूक ब्लॉक शॉप का गहन निरीक्षण किया। कर्मशाला में श्री सतीश कुमार ने विद्युत रेल इंजन की उत्पादन गतिविधियों, निर्माण सुविधाओं, बरेका में चल रही परियोजनाओं के साथ ही उत्पादन प्रक्रिया, अन्य तकनीकी विषयों एवं निर्माणाधीन न्यू लोको प्रोजेक्ट साइट के बारे में विस्तारपुर्वक जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान बरेका के महाप्रबंधक श्री बासुदेव पांडा सहित समस्त विभागाध्यक्षगण एवं अधिकारीगण उपस्थित रहें।■



# रेलवे बोर्ड के सदस्य, ट्रैक्शन एंड रोलिंग स्टॉक ने किया चिरेका का दौरा



रेलवे बोर्ड के सदस्य (ट्रैक्शन एवं रोलिंग स्टॉक) श्री सतीश कुमार ने 26 और 27 अप्रैल, 2024 को चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना(चिरेका) का दौरा किया। इनके साथ श्री मोहित चंद्रा, प्रधान कार्यकारी निदेशक/इलेक्ट्रिकल/रेलवे बोर्ड भी मौजूद थे। यात्रा के प्रथम दिन, श्री कुमार ने देशबंधु हेरिटेज लोको पार्क का दौरा किया और हेरिटेज गैलरी में प्रदर्शित लोकोमोटिव के समृद्ध संरक्षित गौरवशाली इतिहास और अमृत डिजिटल गैलरी को देखा।

इस दौरान उनके साथ श्री हितेंद्र मल्होत्रा, महाप्रबंधक सहित श्री चंद्रा एवं प्रमुख विभागाध्यक्ष भी उपस्थित थे। इस दो दिवसीय दौरे के द्वितीय दिन 27 अप्रैल को गणपति मेमोरियल प्रांगन में एक पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके पश्चात श्री कुमार ने महाप्रबंधक और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कारखाना अंतर्गत शैल, बोगी, ट्रैक्शन मोटर्स और लोको असेंबली शॉपों सहित विभिन्न शॉपों का निरीक्षण किया। श्री कुमार ने विनिर्माण और शॉप की गतिविधियों को देखा।■

# सदस्य, अवसंरचना द्वारा बेंगलुरु मंडल का निरीक्षण

श्री अनिल कुमार खंडेलवाल सदस्य (अवसंरचना) रेलवे बोर्ड ने दिनांक 20 अप्रैल, 2024 को बेंगलुरु मंडल के सोमनायक्कनपट्टी-बेंगलुरु खंड का रियर विंडो निरीक्षण किया। उन्होंने व्हाइटफील्ड, बेंगलुरु छावनी और यशवंतपुर रेलवे स्टेशनों के चल रहे पुनर्विकास कार्यों का भी निरीक्षण किया।■



# सदस्य, अवसंरचना द्वारा सूरत स्टेशन का निरीक्षण



श्री अनिल कुमार खंडेलवाल, सदस्य (अवसंरचना), रेलवे बोर्ड ने दिनांक 27 मार्च, 2024 को सूरत रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। श्री खंडेलवाल ने सभी प्लेटफॉर्मों की सुविधाओं और स्टेशन के रखरखाव का निरीक्षण किया। इसके बाद, सदस्य (अवसंरचना) ने सूरत स्टेशन के स्टेशन पुनर्विकास कार्य सहित सूरत में चल रही विभिन्न इंफ्रा परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की।■

# सदस्य, अवसंरचना, रेलवे बोर्ड ने पू. सी. रेलवे की चल रही परियोजनाओं का निरीक्षण किया

भारतीय रेल अपने 'कैपिटल कनेक्टिविटी' परियोजनाओं और भारत सरकार की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के तहत कई रेल परियोजनाओं को निष्पादित कर पूर्वोत्तर राज्यों के कनेक्टिविटी परिदृश्य को बदलने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है। श्री अनिल कुमार खंडेलवाल, सदस्य (अवसंरचना), रेलवे बोर्ड ने बीते दिनांक 13 मई से 15 मई, 2024 तक पू. सी. रेलवे के अधीन चल रही कुछ महत्त्वपूर्ण रेल परियोजनाओं का निरीक्षण किया। निरीक्षण की गई परियोजनाओं में भैरबी–साइरंग नई लाइन परियोजना, जिरिबाम–इम्फाल नई लाइन परियोजना और अगरतला–अखौरा अंतरराष्ट्रीय रेल संपर्क परियोजना शामिल हैं।

भैरबी–साइरंग नई रेल लाइन परियोजना के देश के बाकी हिस्सों से पूर्वोत्तर राज्य मिजोरम को मजबूत रेल कनेक्टिविटी के माध्यम से जोड़ेगी और यह पूर्ण होने के अग्रिम चरण में है। परियोजना का लगभग 93% कार्य अब तक पूरा हो चुका है।■



# महानिदेशक, संरक्षा ने दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक के साथ संरक्षा समीक्षा बैठक की



महानिदेशक, संरक्षा श्री ब्रज मोहन अग्रवाल ने 19 अप्रैल, 2024 को दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक श्री अनिल कुमार मिश्रा के साथ दक्षिण पूर्व रेलवे मुख्यालय में एक उच्च स्तरीय संरक्षा समीक्षा बैठक की। श्री अग्रवाल ने कहा कि रेलवे में संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए और संरक्षा से संबंधित मुद्दों में शून्य सहिष्णुता पर जोर दिया। महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे ने उन्हें क्षेत्रीय रेलवे द्वारा अपनाए गए कई संरक्षा उपायों से अवगत कराया। महानिदेशक, संरक्षा ने शालीमार से खड़गपुर तक विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण भी किया और पूरे सेक्शन में संरक्षा पहलुओं की निगरानी की। बाद में, खड़गपुर पहुंचने के बाद उन्होंने क्रू लॉबी का निरीक्षण किया और लोको पायलटों, सहायक लोको पायलटों और ट्रैकमैन के साथ बातचीत की।

# महानिदेशक, संरक्षा ने किया रेल डिब्बा कारखाना का दौरा

श्री ब्रज मोहन अग्रवाल, महानिदेशक (संरक्षा) रेलवे बोर्ड ने दिनांक 10 अप्रैल, 2024 को रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला का दौरा किया। रेल डिब्बा कारखाना पहुँचने पर श्री अग्रवाल ने वर्कशॉप में कोच निर्माण प्रक्रियाओं का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने रेडिका द्वारा बनाए जा रहे विभिन्न प्रकार के कोचों, जिनमें एलएचबी एसी डिब्बे, श्री फेज मेमू डिब्बे आदि शामिल हैं, की जाँच की। उन्होंने भारतीय रेल में पहली बार रेडिका द्वारा बनाए जा रहे वंदे मेट्रो कोचों का भी निरीक्षण किया। इन वन्दे मेट्रो कोचों को जल्द ही तैयार करके रवाना कर दिया जाएगा। इसके अलावा श्री अग्रवाल ने कोचों में स्थापित विद्युत उपकरणों और उनके प्रयोगों की भी जाँच की और आरसीएफ के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सेफ्टी पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। सदस्य रेलवे बोर्ड ने कोचों के त्वरित निर्माण के लिए रेल डिब्बा कारखाना के बुनियादी ढाँचे की प्रशंसा की और कोच निर्माण प्रक्रिया में मूल्यवान सुझाव भी दिए।



बाद में श्री अग्रवाल ने रेल डिब्बों में सेफ्टी सम्बंधित मामलों, कोच उत्पादन और नए प्रकार के कोचों के निर्माण से सम्बन्धित मुद्दों पर महाप्रबंधक श्री एस. श्रीनिवास और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक विस्तृत बैठक भी की।■

# महानिदेशक, संरक्षा ने महाप्रबंधक पूर्व रेलवे के साथ उच्चस्तरीय बैठक की




महानिदेशक, संरक्षा, रेलवे बोर्ड, श्री बृज मोहन अग्रवाल ने दिनांक 10 मई, 2024 को पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक श्री मिलिंद के. देउस्कर, अतिरिक्त महाप्रबंधक श्री सुमित सरकार और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक महत्त्वपूर्ण संरक्षा बैठक बुलाई। बैठक का प्राथमिक एजेंडा ट्रेन संचालन से संबंधित संरक्षा मुद्दों पर समझौता न करने के रुख को रेखांकित करता है। महानिदेशक, संरक्षा ने उच्चतम स्तर पर सुरक्षा मानकों को बनाए रखने की अनिवार्यता पर जोर दिया और संरक्षा प्रोटोकॉल का सख्ती से पालन करने का आग्रह किया।■

# महानिदेशक, मानव संसाधन ने किया रेल डिब्बा कारखाना का दौरा

श्री नवीन गुलाटी, महानिदेशक (मानव संसाधन) रेलवे बोर्ड ने दिनांक 6 अप्रैल, 2024 को रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला का दौरा किया, जहाँ उन्होंने रेडिका द्वारा बनाए जा रहे विभिन्न प्रकार के कोचों, जिनमें एलएचबी एसी डिब्बे, श्री फेज मेमू डिब्बे आदि शामिल हैं, की जाँच की। उन्होंने भारतीय रेल में पहली बार रेडिका द्वारा बनाए जा रहे वंदे मेट्रो कोचों का भी निरीक्षण किया। इन वन्दे मेट्रो कोचों को जल्द ही तैयार करके रवाना कर दिया जाएगा। इसके इलावा श्री गुलाटी ने बोगी शॉप में बोगी कलपुर्जों और कोच बोगियों में उनके लगाए जाने की भी गहन जाँच की। सदस्य रेलवे बोर्ड ने कोचों के त्वरित निर्माण के लिए रेल डिब्बा कारखाना के बुनियादी ढाँचे की प्रशंसा की और कोच निर्माण प्रक्रिया में मूल्यवान सुझाव भी दिए।■



# रोमांचक तथा अविस्मरणीय यात्रा के लिए हो जाएँ तैयार...

हर दिन, भारतीय रेल कश्मीर घाटी को बाकी रेलवे नेटवर्क से जोड़ने के करीब पहुंच रहा है। कुल 272 कि.मी. लंबी यूएसबीआरएल परियोजना में से 161 कि.मी. रेल मार्ग को तीन चरणों में चालू किया जा चुका है, जिसमें 118 कि.मी. लंबे बारामूला-काजीगुंड के पहले चरण को वर्ष 2009 में चालू किया गया था, 18 कि.मी. लंबे काजीगुंड-बनिहाल के दूसरे चरण को वर्ष 2013 में चालू किया गया था, जिसमें भारत में 11.2 कि.मी. की सबसे लंबी परिचालन परिवहन सुरंग है और 25 कि.मी. उधमपुर-कटरा का तीसरा चरण वर्ष 2014 में चालू किया गया।

अब, यूएसबीआरएल परियोजना का अंतिम चरण चालू हो रहा है और यूएसबीआरएल परियोजना के बक्कल-दुग्गा ब्लॉक खंड में स्थित चिनाब पुल सभी तरह से पूरा हो गया है। दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल, चिनाब ब्रिज यूएसबीआरएल के कटरा-बनिहाल खंड पर स्थित है, जो अपनी जटिल स्थलाकृति और प्रतिकूल मौसम की स्थिति के कारण परियोजना का सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा है। बड़ी संख्या में सुरंगें और पुल यूएसबीआरएल परियोजना के संरेखण का हिस्सा हैं। संरेखण सलाल हाइड्रो पावर डैम के पास चिनाब नदी की गहरी घाटियों को पार करता है, जिसके लिए एक लंबी अवधि के पुल के निर्माण की आवश्यकता होती है। आजादी के बाद पहली बार, यूएसबीआरएल कश्मीर घाटी को सभी मौसम में रेल कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। कश्मीर को निर्बाध और परेशानी मुक्त कनेक्टिविटी प्रदान करने में यूएसबीआरएल के महत्त्व को देखते हुए, 272 कि.मी. लंबी यूएसबीआरएल परियोजना को वर्ष 2002 में 'राष्ट्रीय परियोजना' घोषित किया गया था।

467 मीटर के केंद्रीय मेहराब अवधि के साथ 1,315 मीटर की लंबाई होने के कारण, चिनाब नदी के पार इस प्रतिष्ठित पुल का निर्माण समुद्र तल से 359 मीटर की ऊंचाई (कुतुब मीनार (72 मीटर ऊंचाई) और एफिल टॉवर (324 मीटर ऊंचाई) से अधिक है, जो इसे दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल बनाता है। चिनाब पुल के निर्माण का कार्य किसे सौंपा गया है? चिनाब ब्रिज प्रोजेक्ट अंडरटेकिंग (AFCONS-ULTRA-VSL JV) AFCONS के साथ प्रमुख भागीदार के रूप में।



## पुल की अनूठी विशेषताएँ :

- पुल को 266 कि.मी. प्रति घंटे की हवा की गति के लिए डिजाइन किया गया है।
- पुल निर्माण में 28,660 मीट्रिक टन स्टील और 67,000 घन मीटर से अधिक कंक्रीट का उपयोग किया जाता है।
- कंक्रीट से भरे आर्क का उपयोग भारत में पहली बार किया जा रहा है।
- चिनाब ब्रिज का सबसे बड़ा फाउंडेशन एस 40 आकार 36 मीटर x 48 मीटर है जो 1/3 के बराबर है। फुटबाल मैदान के आकार का।
- पुल के निरीक्षण और रखरखाव के लिए विद्युत चालित कारें भारतीय रेल में पहली बार उपलब्ध कराई जा रही हैं।
- अत्याधुनिक यंत्रों के लिए सतत स्वास्थ्य मानीटरिंग और चेतावनी प्रणाली प्रदान की जा रही है।
- ब्रिज के स्टील सदस्यों के निर्माण के लिए उपयोग की जाने वाली केबल क्रेन असेंबली 915 मीटर की है, जो दुनिया में सबसे लंबी है।
- 127 मीटर की ऊंचाई पर केबल क्रेन का एक तोरण 72 मीटर के कुतुब मीनार से अधिक है।
- चरणबद्ध सरणी अल्ट्रासोनिक परीक्षण मशीन वेल्ड के निरीक्षण के लिए इस्तेमाल किया।
- पहली बार, भारतीय रेल में वेल्डेड तत्वों के परीक्षण के लिए एनएबीएल (प्रयोगशालाओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड) मान्यता प्राप्त लैब की स्थापना की गई है।
- ब्रिज को जोन V के भूकंप बलों को सहन करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- एस-40 नींव पर 169 मीटर का उच्चतम स्टील घाट 72 मीटर के कुतुब मीनार से ऊंचा है और भारतीय रेल पर निर्मित सबसे ऊंचा घाट है।



## बुलेट ट्रेन परियोजना

# गुजरात के वड़ोदरा में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के ऊपर 130 मीटर लम्बा स्टील का पुल बनाया गया

## जिसका वजन 3,000 मीट्रिक टन से अधिक है




नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए दिनांक 23 जून, 2024 को 130 मीटर लंबा स्टील ब्रिज का निर्माण पूरा कर लिया गया है। स्टील ब्रिज का निर्माण, गुजरात में वडोदरा के पास दिल्ली-मुंबई नेशनल एक्सप्रेसवे पर किया गया।

सड़क यातायात को बाधित न करते हुए, स्टील ब्रिज का निर्माण 24 घंटों के भीतर पूरा किया गया। 18 मीटर ऊंचे और 14.9 मीटर चौड़े इस 3,000 मीट्रिक टन स्टील ब्रिज को महाराष्ट्र के वर्धा स्थित कार्यशाला में तैयार किया गया है और इसे इंस्टालेशन के लिए ट्रेलरों पर साइट पर ले जाया गया। इतने भारी गर्डर को खींचने के लिए बहुत ज्यादा प्रयास की जरूरत होती है, जो संभवत: देश के किसी भी राष्ट्रीय राजमार्ग पर सबसे लंबा होगा।

पुल निर्माण में सी-5 सिस्टम पेंटिंग और धातु के गोलाकार बीयरिंग के साथ लगभग 124,246 टोर-शीयर टाइप हाई स्ट्रेंथ (टीटीएचएस) बोल्ट का उपयोग किया गया, जो 100 साल के जीवनकाल के लिए डिजाइन किए गए हैं। स्टील ब्रिज को अस्थायी ट्रेस्टल्स पर जमीन से 15 मीटर की ऊंचाई पर स्थापित किया गया और इसे मैक-मिश्र धातु बार (mac-alloy bars) का उपयोग करते हुए 2 अर्ध-स्वचालित जैक की स्वचालित प्रणाली से खींचा गया, जिनमें से प्रत्येक की क्षमता 250 टन है।

सुरक्षा और इंजीनियरिंग उत्कृष्टता के उच्चतम मानकों को बनाए रखते हुए परियोजना को सावधानीपूर्वक निष्पादित किया जा रहा है। जापानी विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए, भारत 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण के लिए अपने स्वयं के तकनीकी और भौतिक संसाधनों का उपयोग कर रहा है। बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए स्टील ब्रिज इस प्रयास का एक बड़ा उदाहरण है।

यह पूरे कॉरिडोर के लिए 28 स्टील ब्रिज में से तीसरा स्टील ब्रिज है। पहला और दूसरा स्टील ब्रिज क्रमश: सूरत में राष्ट्रीय राजमार्ग 53 पर और गुजरात में नडियाद के पास भारतीय रेल की वडोदरा-अहमदाबाद मुख्य लाइन पर लॉन्च किया गया था।

40 से 45 मीटर तक वाले प्री-स्ट्रेस्ड कंक्रीट ब्रिज के विपरीत, स्टील ब्रिज राजमार्गों, एक्सप्रेसवे और रेलवे लाइनों को पार करने के लिए सबसे उपयुक्त होते हैं, जो नदी पुलों सहित अधिकांश वर्गों के लिए उपयुक्त होते हैं। भारत के पास 100 से 160 कि.मी. प्रति घंटे के बीच चलने वाली भारी ढुलाई और अर्ध उच्च गति वाली ट्रेनों के लिए स्टील ब्रिज बनाने की विशेषज्ञता है। अब, स्टील गर्डर्स के निर्माण में समान विशेषज्ञता एमएएचएसआर कॉरिडोर पर भी लागू की जाएगी, जिसमें 320 कि.मी. प्रति घंटे की परिचालन गति होगी।■

# बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए भारतीय रेल ट्रैक पर 100 मीटर लंबा 'मेक इन इंडिया' स्टील ब्रिज लॉन्च किया गया



मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन कॉरिडोर के लिए गुजरात में नडियाद के पास भारतीय रेल की वडोदरा-अहमदाबाद मुख्य लाइन पर 100 मीटर लंबाई का पहला स्टील ब्रिज लॉन्च किया गया।

जापानी विशेषज्ञता के साथ, भारत मेक-इन-इंडिया विजन के तहत इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण के लिए अपनी स्वदेशी तकनीकी और भौतिक क्षमताओं का तेजी से उपयोग कर रहा है। और, बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए यह स्टील ब्रिज ऐसे ही उदाहरणों में से एक है।

1,486 मीट्रिक टन के इस स्टील ब्रिज का निर्माण गुजरात के भुज जिले में स्थित कार्यशाला में किया गया है, जो ब्रिज लॉन्चिंग साइट से लगभग 310 कि.मी. दूर है। लॉन्चिंग के लिए ब्रिज को ट्रेलरों द्वारा साइट पर ले जाया गया।

साइट पर, स्टील ब्रिज को अस्थायी ट्रेस्टल्स पर जमीन से 15.5 मीटर की ऊंचाई पर असेंबल किया गया। इसके बाद, 63 मीटर लंबाई और लगभग 430 मीट्रिक टन वजन की लॉन्चिंग नोज को मुख्य पुल असेंबली के साथ जोड़ा गया। स्टील ब्रिज को हाई टेंशन स्ट्रैंड्स का उपयोग करके 180 मीट्रिक टन की क्षमता वाले 2 जैक के स्वचालित तंत्र के साथ खींचा गया। ब्रिज को सावधानीपूर्वक योजना और सटीकता के साथ भारतीय रेल लाइनों के पूर्ण यातायात और पावर ब्लॉक के चलते लांच किया गया।

## तकनीकी बिन्दु

- मेन ब्रिज की लंबाई : 100 मीटर
- मेन ब्रिज का वजन : 1486 मीट्रिक टन
- लॉन्चिंग नोज की लंबाई : 63 मीटर
- लॉन्चिंग नोज का वजन : 430 मीट्रिक टन

स्टील के प्रत्येक उत्पादन बैच का मैन्युफैक्चरिंग परिसर में अल्ट्रासोनिक परीक्षण द्वारा परीक्षण किया गया। स्टील ब्रिज का निर्माण जापानी इंजीनियर द्वारा तैयार डिजाइन ड्रॉइंग्स के अनुसार कटिंग, ड्रिलिंग, वेल्डिंग और पेंटिंग के उच्च तकनीक और सटीक संचालन द्वारा किया जाता है। कॉन्ट्रैक्टर्स को अंतरराष्ट्रीय वेल्डिंग विशेषज्ञों द्वारा प्रमाणित वेल्डर और पर्यवेक्षकों को नियुक्त करना अनिवार्य है। प्रत्येक कार्यशाला में, वेल्डिंग प्रक्रिया की मॉनिटरिंग, जापानी अंतरराष्ट्रीय वेल्डिंग विशेषज्ञों (International Welding Experts) द्वारा भी की जाती है। निर्मित स्टील स्ट्रक्चर चेक असेंबली प्रक्रिया से गुजरने के बाद, पांच-परत तकनीक का उपयोग करके पेन्ट किया जाता है।

स्टील गर्डर्स के लिए अपनाई गई पेंटिंग तकनीक भारत में अपनी तरह की पहली तकनीक है। यह जापान रोड एसोसिएशन के 'स्टील रोड ब्रिज के संक्षारण संरक्षण के लिए हैंडबुक' की सी-5 पेंटिंग प्रणाली के अनुरूप है। अलग-अलग हिस्सों को जोड़ने का काम टोर शीयर टाइप हाई स्ट्रेंथ बोल्ट्स (टीटीएचएसबी) का उपयोग करके किया जाता है, जिसका उपयोग भारत में किसी भी रेलवे परियोजना के लिए पहली बार किया जा रहा है।

यह स्टील ब्रिज, बुलेट ट्रेन कॉरिडोर के लिए तैयार किए गए 28 स्टील पुलों में से दूसरा है। पहला स्टील ब्रिज गुजरात के सूरत में राष्ट्रीय राजमार्ग 53 पर लॉन्च किया गया था।

इन स्टील ब्रिज को बनाने में लगभग 70,000 मीट्रिक टन निर्दिष्ट (specified) स्टील का उपयोग किया जाता है। स्पैन की लंबाई 60 मीटर 'सिंपली सपोर्टेड' से लेकर 130+100 मीटर 'कंटीन्यूअस स्पैन' तक होती है।

40 से 45 मीटर तक वाले प्री-स्ट्रेस्ड कंक्रीट ब्रिज के विपरीत, स्टील ब्रिज राजमार्गों, एक्सप्रेसवे और रेलवे लाइनों को पार करने के लिए सबसे उपयुक्त होते हैं, जो नदी पुलों सहित अधिकांश वर्गों के लिए उपयुक्त होते हैं।

भारत के पास 100 से 160 कि.मी. प्रति घंटे के बीच चलने वाली भारी ढुलाई और अर्ध उच्च गति वाली ट्रेनों के लिए स्टील ब्रिज बनाने की विशेषज्ञता है। अब, स्टील गर्डर्स के निर्माण में समान विशेषज्ञता एमएएचएसआर कॉरिडोर पर भी लागू की जाएगी, जिसमें 320 कि.मी. प्रति घंटे की परिचालन गति होगी।■

# बुलेट ट्रेन परियोजना : साबरमती रोलिंग स्टॉक डिपो - स्थिरता एवं दक्षता का एक शानदार उदाहरण



आधुनिक अवसंरचना का प्रतीक माने जाने वाली मुंबई अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना, साबरमती रोलिंग स्टॉक डिपो के विकास के साथ, स्थिरता एवं दक्षता के एक नए युग की शुरुआत करने हेतु पूरी तरह से तैयार है।

बुलेट ट्रेन परियोजना की परिचालन संबंधी जरूरतों के अनुसार बिना किसी बाधा के एकीकृत करने हेतु डिजाइन किए गए साबरमती रोलिंग स्टॉक डिपो में ट्रेनसेट के हल्के व भारी रखरखाव दोनों के लिए अत्याधुनिक सुविधाएँ हैं। 83 हेक्टेयर में फैला हुआ, यह डिपो तीन डिपो में सबसे बड़ा है और निरीक्षण खंड, वाशिंग प्लांट, वर्कशॉप, शेड एवं स्टेबलिंग लाइनों सहित अत्याधुनिक उपकरणों से लैस है। जापानी डिपो से प्रेरित साबरमती डिपो नवोन्मेष का प्रतीक है।

डिपो में 4 (चार) निरीक्षण लाइनें तथा 10 स्टेबलिंग लाइनें हैं, जिसे आने वाले समय में 8 (आठ) निरीक्षण लाइनों और 29 स्टेबलिंग लाइनों तक बढाने की योजना है। इसके अलावा, रखरखाव की व्यापक क्षमता के लिए बोगी एक्सचेंज लाइन एवं सामान्य निरीक्षण लाइन जैसी विशेष सुविधाएँ भी दी गई हैं।

साबरमती रोलिंग स्टॉक डिपो की मुख्य विशेषताएँ :

- ट्रेनसेट के ओवरहाल के बाद के परीक्षण के लिए, डेडिकेटेड परीक्षण ट्रैक, मेनलाइन पर तैनाती से पहले ऑप्टिमम परफॉरमेंस सुनिश्चित करेगा।
- रखरखाव एवं ओवरहाल संबंधी कार्यों के लिए पर्याप्त जगह सुनिश्चित करने हेतु विशिष्ट पैमाने के इंडस्ट्रियल शेड।
- कुशल ट्रेन शंटिंग संचालन और डिपो के प्रबंधन हेतु केंद्रीकृत नियंत्रण सुविधाएँ।
- भोजन कक्ष एवं कैंटीन व ऑडिटोरियम और प्रशिक्षण सुविधाओं से लैस।

साबरमती डिपो में वर्षा जल के संचयन एवं अपशिष्ट जल पुनर्चक्रण जैसी पर्यावरण-अनुकूल पहलों को भी अपनाया गया है। छत पर वर्षा जल के संचयन तथा बोरवेल के पानी से डिपो की पानी की जरूरतें पूरी होंगी, जबकि आधुनिक सीवेज एवं अपशिष्ट उपचार संयंत्र से कचरे का कुशल प्रबंधन सुनिश्चित होगा।

इसके अलावा, डिपो ट्रेनों में एवं डिपो परिसर के भीतर उत्पन्न कचरे को अलग करने, संघनन करने तथा इसके उचित प्रबंधन हेतु सुविधा उपलब्ध की जाएगी, जो पर्यावरण को बचाने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करेगा।

डिपो शेड एवं इमारतों को इस तरह से डिजाइन किया जा रहा है कि भविष्य में सोलर पैनल भी लगाए जा सकें। अकेले साबरमती डिपो में लगभग 14 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन की क्षमता होगी।

दूरदर्शी दृष्टिकोण के साथ, साबरमती रोलिंग स्टॉक डिपो न केवल तकनीकी कौशल का एक उदाहरण है, बल्कि टिकाऊ अवसंरचना के विकास का एक ब्लूप्रिंट भी है। जैसे-जैसे निर्माण कार्य पूरा होगा, यह डिपो मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना की सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा तथा दक्षता, विश्वसनीयता एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारी के लिए नए मानक स्थापित करेगा।

## साबरमती रोलिंग स्टॉक डिपो निर्माण स्थिति

- डिपो के लिए अर्थवर्क का कार्य पूरा हो चुका है।
- एडमिनिस्ट्रेटिव बिल्डिंग के लिए नींव और आरसीसी (RCC) का कार्य प्रगति पर है।

# 16 कि.मी. लंबी सुरंग के लिए 76,000 से अधिक सेगमेंट्स बनाए जाएंगे



मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स और शिलफाटा के बीच 21 कि.मी. लंबी सुरंग का निर्माण चल रहा है। कुल लंबाई में से 16 कि.मी. की खुदाई तीन टनल बोरिंग मशीनों (टीबीएम) का उपयोग करके की जाएगी, जबकि शेष 5 कि.मी. का निर्माण न्यू ऑस्ट्रियाई टनलिंग विधि (एनएटीएम) का उपयोग करके किया जाएगा। टीबीएम के साथ 16 कि.मी. के खंड का निर्माण करने के लिए, 7,441 रिंग बनाने के लिए 76,940 सेगमेंट्स बनाए जाएंगे। सुरंग की परत के लिए विशेष रिंग सेगमेंट्स डाले जा रहे हैं, प्रत्येक रिंग में नौ घुमावदार सेगमेंट और एक मुख्य सेगमेंट शामिल है, प्रत्येक सेगमेंट 2 मीटर चौड़ा और 0.5 मीटर मोटा है।

बेहतर स्ट्रक्चरल इंटीग्रिट और दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए उच्च शक्ति एम70 ग्रेड कंक्रीट का उपयोग किया जा रहा है। महाराष्ट्र के ठाणे जिले के महापे में 98,898 वर्गमीटर (9.9 हेक्टेयर) क्षेत्र को कवर करने वाला कास्टिंग और स्टैकिंग यार्ड वर्तमान में चालू किया जा रहा है। यार्ड में सांचों के नौ सेट होंगे, जिनमें से प्रत्येक में दस सेगमेंट होंगे। इन सांचों के चार सेट पहले से ही साइट पर इनस्टॉल किए जा रहे हैं।

यार्ड कास्टिंग संचालन को स्वचालित और मशीनीकृत करने के लिए विभिन्न क्रेन, गैन्ट्री और मशीनों से लैस बनाया जायेगा, जो सेगमेंट्स की कास्टिंग और स्टैकिंग के दौरान उच्च गुणवत्ता को सुनिश्चित करेंगे। इसके अतिरिक्त, सुविधा में कास्टिंग शेड, एक स्टैकिंग क्षेत्र, एक बैचिंग प्लांट और एक स्टीम क्योरिंग क्षेत्र शामिल होंगे।■

# बुलेट ट्रेन परियोजना : 24 x 7 भू-तकनीकी मॉनिटरिंग

बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए महाराष्ट्र में कंस्ट्रक्शन साइट और उसके आसपास की संरचनाओं और सर्विस यूटिलिटीज की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हाइली सेंसिटिव भू-तकनीकी मॉनिटरिंग उपकरण लगाए जा रहे हैं। विभिन्न प्रकार के भू-तकनीकी उपकरण जैसे इनक्लिनोमीटर, वाइब्रेशन मॉनिटर, ग्राउंड सेटलमेंट मार्कर, टिल्ट मीटर आदि को टिल्ट, सेटलमेंट, वाइब्रेशन, क्रैक्स और डिफॉर्मेशन की मॉनिटरिंग के लिए कंस्ट्रक्शन साइट और उसके आसपास लगाए गए है। ये उपकरण यह सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, कि सुरंग निर्माण कार्य को और ना ही साइट के आसपास की संरचनाओं को कोई खतरा हो।

गतिविधियों को रिकॉर्ड और मॉनिटरिंग करने के लिए भू-तकनीकी उपकरण अपने संबंधित मॉड्यूल से जोड़े गए हैं। इससे संभावित जोखिमों की समय पर पहचान सुनिश्चित की जा सकेगी, जिससे उन्हें कम करने के लिए ससमय हस्तक्षेप करना संभव हो सकेगा। धूल और ध्वनि को नियंत्रण में रखने के लिए, सुरंग साईट पर मॉनिटर लगाए गए हैं। इससे वायु और ध्वनि प्रदूषण को तय सीमा तक रखने में मदद मिलती है।

महाराष्ट्र में मुंबई और ठाणे जिलों में बुलेट ट्रेन परियोजना के 21 कि.मी. लंबे भूमिगत हिस्से के लिए निर्माण गतिविधियाँ प्रगति पर हैं। कार्यों में बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स में लगभग 1 कि.मी. लंबे और 32 मीटर गहरे (लगभग 10 मंजिला इनवर्टेड बिल्डिंग) भूमिगत



बुलेट ट्रेन स्टेशन के लिए खुदाई, सुरंग निर्माण कार्यों के लिए शाफ्ट और पोर्टल का निर्माण शामिल है।

तीन मेगा टनल बोरिंग मशीन (टीबीएम) को 16 कि.मी. सुरंग निर्माण कार्य के लिए उपयोग किया जाएगा, जिसमें समुद्र के नीचे 7 कि.मी. लम्बी सुरंग शामिल है और शेष 5 कि.मी. सुरंग न्यू ऑस्ट्रियाई टनलिंग विधि का उपयोग करके बनाई जाएगी। सुरंग की गहराई 25 मीटर से 57 मीटर तक होगी। टनल बोरिंग मशीनों को नीचे उतारने के लिए तीन शाफ्ट, एक एडीआईटी और एक पोर्टल का निर्माण किया जा रहा है। ऐसे भूमिगत मेगास्ट्रक्चर के निर्माण के लिए कंस्ट्रक्शन साइट, जमीन के ऊपर और नीचे के आसपास की संरचनाओं की सुरक्षा की आवश्यकता होती है, जिससे आसपास रहने वाले लोगों को कम से कम असुविधा हो।■

# बुलेट ट्रेन परियोजना : 394 मीटर लंबी अतिरिक्त रूप से संचालित मध्यवर्ती सुरंग पूरी की गई



मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए घनसोली में 394 मीटर की अतिरिक्त संचालित मध्यवर्ती सुरंग (ADIT) की खुदाई की गई है। इससे महाराष्ट्र में बीकेसी और शिलफाटा के बीच 21 कि.मी. लंबी सुरंग के निर्माण में तेजी आएगी। 26 मीटर गहरी inclined ADIT न्यू ऑस्ट्रियन टनलिंग मेथड (NATM) के माध्यम से 3.3 कि.मी. (लगभग) सुरंग के निर्माण की सुविधा प्रदान करेगी, जिससे प्रत्येक तरफ 1.6 मीटर (लगभग) सुरंग बनाने के लिए एक साथ पहुँच की अनुमति मिलेगी। 21 कि.मी. सुरंग निर्माण कार्यों में से 16 कि.मी. टनल बोरिंग मशीनों के माध्यम से और शेष 5 कि.मी. एनएटीएम के माध्यम से किया जाएगा।

ADIT के लिए खुदाई का काम दिनांक 6 दिसंबर, 2023 को शुरू किया गया था और छह महीने की छोटी अवधि में 394 मीटर की लंबाई की खुदाई की गई है। विशेषज्ञों की देखरेख में 27,515 किलोग्राम विस्फोटकों का उपयोग करके कुल 214 नियंत्रित विस्फोट किए गए और सुरक्षित उत्खनन सुनिश्चित करने के लिए उच्च स्तर के उपकरणों का उपयोग किया गया। आंतरिक आयाम का ADIT: 11 मीटर X 6.4 मीटर निर्माण और प्रचालन के दौरान मुख्य सुरंग तक सीधे वाहनों की पहुँच प्रदान करेगा और इसका उपयोग आपातकालीन स्थिति में निकासी प्रक्रिया के उद्देश्य से भी किया जा सकता है।

सुरंग और आसपास के क्षेत्र में सभी संरचनाओं की सुरक्षित खुदाई सुनिश्चित करने के लिए कई मॉनिटरिंग उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है। कार्य के लिए उपयोग किए जा रहे कुछ उपकरण एसएसपी (सरफेस सेटलमेंट पॉइंट्स), ओडीएस (ऑप्टिकल विस्थापन सेंसर) या दोनों अक्षों में विस्थापन के लिए टिल्ट मीटर, बीआरटी (परावर्तित लक्ष्य/3 डी लक्ष्यों द्वारा), सुरंग की सतह में सूक्ष्म तनाव के लिए स्ट्रेन गेज, पीक पार्टिकल वेलोसिटी (पीपीवी) या कम्पन्न और भूकंपीय तरंग मॉनिटर के लिए सिस्मोग्राफ है।

मुंबई बुलेट ट्रेन स्टेशन से महाराष्ट्र राज्य में शिलफाटा तक 21 कि.मी. (लगभग) लंबी सुरंग से सम्बन्धित निर्माण गतिविधियाँ तेज गति से चल रही हैं। इस सुरंग का 7 कि.मी. (लगभग) हिस्सा ठाणे क्रीक (इंटरटाइडल जोन) में समुद्र के नीचे होगा। यह देश में बनने वाली अपनी तरह की पहली सुरंग है।

21 कि.मी. लंबी सुरंग एक एकल ट्यूब सुरंग होगी, जिसमें ऊपर और नीचे के ट्रैक के लिए दो ट्रैक होंगे। इस सुरंग के निर्माण के लिए 13.6 मीटर व्यास के कटर हेड वाली टनल बोरिंग मशीन (टीबीएम) का उपयोग किया जाएगा। आमतौर पर एमआरटीएस-मेट्रो प्रणाली में उपयोग की जाने वाली शहरी सुरंगों के लिए 6-8 मीटर व्यास वाले कटर हेड का उपयोग किया जाता है, क्योंकि ये सुरंगें केवल एक ट्रैक को समायोजित करती हैं।

वर्तमान में बीकेसी, विक्रोली और सावली में निर्माणाधीन तीन शाफ्टों के माध्यम से 16 कि.मी. लंबी सुरंग के निर्माण के लिए टीबीएम का उपयोग किया जाएगा।■

# सेवक - रंगपो नई रेल लिंक परियोजना में एक और माइलस्टोन - टनल संख्या टी - 04 को मिला ब्रेकथ्रू



पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिला स्थित सेवक–रंगपो रेल परियोजना (एसआरआरपी) की टनल संख्या टी–04/पी2 (3,948 मीटर लंबी) के अडिट को दिनांक 8 मई, 2024 को ब्रेक थ्रू मिला। इस परियोजना का यह एक प्रमुख माइलस्टोन है। इस टनल की सफलता के साथ, इस परियोजना के सभी अडिट टनलों में खनन कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है।

पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में हनुमान झोरा के पास स्थित 599 मीटर की एक निकासी टनल के साथ मुख्य टनल टी–04 की लंबाई 3,948 मीटर है। मुख्य टनल यंग हिमालय के अतिसंवेदनशील एवं चुनौतीपूर्ण भूगर्भीय और भूकंपीय स्थितियों से होकर गुजरती है। एसआरआरपी में अन्य सभी टनलों की तरह, भू–द्रव्यमान की भेद्यता का मुकाबला करने के लिए, यहाँ नवीनतम और सबसे सॉफिस्टिकेटेड टनलिंग तकनीक यानी न्यू ऑस्ट्रियाई टनलिंग मेथड (एनएटीएम) का उपयोग किया गया है। सेवक (पश्चिम बंगाल) और रंगपो (सिक्किम) को जोड़ने वाली सेवक–रंगपो नई रेल लिंक परियोजना लगभग 45 कि.मी. लंबी है और इसमें 14 टनल, 13 बड़े पुल, 09 छोटे पुल और 5 स्टेशन शामिल हैं। सबसे लंबी टनल (टी–10) की लंबाई 5.3 कि.मी. और सबसे लंबा पुल (ब्रिज–17) की लंबाई 425 मीटर है। पूरी परियोजना संरेखण का लगभग 38.65 कि.मी. टनल से होकर गुजरता है। टनलिंग कार्य का 93% पूरा हो चुका है।■

# रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला द्वारा उधमपुर-बारामुल्ला रेल मार्ग के लिए रेल डिब्बों का दूसरा रेक तैयार

रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला के महाप्रबंधक श्री मंजुल माथुर द्वारा दिनांक 6 जून, 2024 को कश्मीर वैली में अत्यधिक सर्दी और बर्फीले मौसम एवं विपरीत मौसमी परिस्थितियों वाले नव निर्मित उधमपुर–बारामुल्ला रेल मार्ग में नवीनतम विशेषता वाले बनाए गए रेल डिब्बों के दूसरे रेक का रवानगी से पूर्व निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय रेल डिब्बा कारखाना के प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री अरुण कुमार जैन तथा अन्य विभागाध्यक्ष भी मौजूद थे। रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला द्वारा इस 23 डिब्बों के रेक में 14 ए.सी श्री टियर, 5 ए.सी. टू टियर, 1 ए.सी फर्स्ट क्लास, 1 ए सी हॉट बुफे कार और 2 लगेज कम जेनरेटर कार कोच शामिल हैं। इन डिब्बों की मुख्य विशेषता इनमें पहली बार लगाए गए ऑटोमेटिक स्लाइडिंग प्लग डोर हैं। रेल डिब्बा कारखाना द्वारा उधमपुर–श्रीनगर–बारामुल्ला रेल मार्ग के लिए सात स्पेयर डिब्बों सहित 88 डिब्बों के चार रेक बनाये जा रहे हैं। ये डिब्बे अन्य विशिष्ट



विशेषताओं जैसे डिब्बे के दरवाजे पर एक पतला स्विच बोर्ड कैबिनेट, सीसीटीवी, फायर अलार्म, यात्री सूचना प्रणाली, यात्री अनाउंसमेंट सिस्टम के अलावा एलईडी डेस्टिनेशन बोर्ड शामिल हैं।■

# क्षेत्रीय रेलों एवं उत्पादन इकाइयों के समाचार



## श्रीमती अपर्णा गर्ग ने भारतीय रेल वित्तीय प्रबंधन संस्थान के महानिदेशक का पदभार संभाला

श्रीमती अपर्णा गर्ग, सिविल सेवा 1987 बैच की आईआरएएस अधिकारी ने भारतीय रेल वित्तीय प्रबंधन संस्थान के महानिदेशक का पदभार ग्रहण कर लिया है।

कार्यभार संभालने से पहले, श्रीमती अपर्णा गर्ग ने रेल व्हील फैक्ट्री, बेंगलुरु में प्रधान वित्तीय सलाहकार, मैसूर के मंडल रेल प्रबंधक और दक्षिण रेलवे, पश्चिम रेलवे और दक्षिण-पश्चिम रेलवे में विभिन्न पदों पर काम किया है।

आप एक शेवनिंग फेलो हैं और आपने यूनिवर्सिटी ऑफ लीड्स, यूनाइटेड किंगडम से ट्रांसपोर्ट इकोनॉमिक्स में एडवांस्ड मास्टर्स किया है। श्रीमती गर्ग ने बोकोनी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट/मिलान, इनसीड/सिंगापुर और इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस/हैदराबाद से भी प्रशिक्षण प्राप्त किया है।■

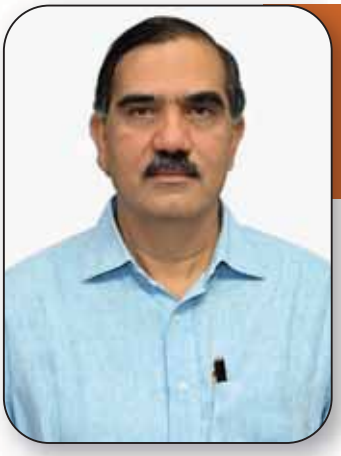


## श्री मंजुल माथुर ने संभाला रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला के नए महाप्रबंधक का कार्यभार

श्री मंजुल माथुर ने दिनांक 27 मई, 2024 को रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला में महाप्रबंधक के रूप में कार्यभार संभाल लिया है। वह भारतीय रेल इंजीनियर्स सेवा के वर्ष 1988 बैच से हैं। उन्होंने जोधपुर विश्वविद्यालय, राजस्थान से बी. ई (सिविल इंजीनियरिंग) और आई.आई.टी (मुंबई) से ब्रिज और अर्थक्वेक इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है।

श्री मंजुल माथुर आर.सी.एफ के महाप्रबंधक के रूप में कार्यभार संभालने से पहले मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज के पद पर कार्यरत थे। उससे पहले आप पश्चिम रेलवे मुंबई में चीफ ब्रिज इंजीनियर के पद पर भी कार्य कर चुके हैं।

डीएफसीसीआईएल के ईस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर प्रोजेक्ट पर उन्होंने 7 वर्षों तक विश्व बैंक के साथ मिलकर काम किया है। उनके कार्यकाल के दौरान ही कानपुर-खुर्जा सेक्शन के खुर्जा और भदान स्टेशन के बीच 200 कि.मी. का सेक्शन पूरा किया गया और एशिया का दूसरा सबसे बड़ा ऑपरेशन कंट्रोल सेंटर इलाहाबाद में बनाया गया। उत्तर मध्य रेलवे में उनके 1.5 वर्ष के कार्यकाल के दौरान 275 कि.मी. का बुनियादी ढाँचा तैयार किया गया।■



## श्री अभय बाकरे ने बनारस रेल इंजन कारखाना के महाप्रबंधक का पदभार संभाला

श्री अभय बाकरे ने बनारस लोकोमोटिव वर्क्स (बीएलडब्ल्यू) के महाप्रबंधक का पदभार हाल ही में संभाल लिया है। इससे पहले, श्री बाकरे 2017 से ऊर्जा दक्षता ब्यूरो के महानिदेशक (प्रमुख) के पद पर थे। इन्होंने 2018 से 2023 तक जी-20 ऊर्जा संरक्षण कार्य समूह और मंत्रिस्तरीय बैठकों में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

श्री बाकरे आईआईटी, खड़गपुर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में एम.टेक हैं। वे भारतीय रेल इलेक्ट्रिकल इंजीनियर्स सेवा के 1988 बैच में शामिल हुए और उन्होंने दक्षिण रेलवे गेज परिवर्तन, दिल्ली मेट्रो और कोलकाता मेट्रो विस्तार जैसी कई प्रमुख रेलवे परियोजनाओं में काम किया।

अपनी प्रारंभिक पोस्टिंग के दौरान वे दक्षिण रेलवे में इलेक्ट्रिकल लोको और ईएमयू संचालन की जिम्मेदारी संभाली थी।■

## बेल्जियम प्रतिनिधि मंडल ने किया आर.डी.एस.ओ. का दौरा



बेल्जियम के प्रतिनिधि मंडल ने दिनांक 24 अप्रैल, 2024 को आरडीएसओ का दौरा किया। प्रतिनिधि मंडल में श्री सैमुएल बुचे, बिजनेस डेवेलपर/ए.जी.सी.ग्लास, श्री सिल्वैन बर्टाको, रीजनल डायरेक्टर/सी.ई.टी. पॉवर सहित बेल्जियम के कुल 6 कंपनियों के सदस्य सम्मिलित हुए तथा इस दौरे का उद्देश्य भारतीय रेल से जुड़ना तथा अपने उत्पादों को प्रदर्शित करना था। इस अवसर पर आरडीएसओ द्वारा आरडीएसओ की हाल की उपलब्धियों और वर्तमान में चल रही परियोजनाओं का उल्लेख करते हुए विस्तृत प्रस्तुति दी गयी। साथ ही भारतीय रेल की खरीद प्रक्रिया का उल्लेख भी किया गया। इस प्रस्तुति के दौरान प्रतिनिधि मंडल एवं आरडीएसओ के अधिकारियों के बीच कई महत्त्वपूर्ण चर्चाएँ की गयीं।■

## रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला को ऊर्जा दक्षता के लिए प्रतिष्ठित गोल्डन पीकॉक पुरस्कार




दिनांक 28 जून, 2024 को भारतीय रेल की अग्रणी कोच निर्माण उत्पादन इकाई, रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला को 'रेलवे' श्रेणी के अंतर्गत वर्ष 2024 के लिए 'ऊर्जा दक्षता के क्षेत्र में प्रतिष्ठित गोल्डन पीकॉक पुरस्कार' प्रदान किया गया है। बेंगलुरु में इंस्टीट्यूट ऑफ डायरेक्टर्स द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह में 'गोल्डन पीकॉक' पुरस्कार की ट्रॉफी और प्रमाण-पत्र को भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश माननीय न्यायमूर्ति एम.एन. वेंकटचलैया से रेल डिब्बा कारखाना के महाप्रबंधक श्री मंजुल माथुर ने प्राप्त किया। पुरस्कार समारोह के दौरान मुख्य विद्युत सेवा इंजीनियर श्री बलदेव राज भी उपस्थित थे।■

## चैक गणराज्य से उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने किया रेलडिब्बा कारखाना, कपूरथला का दौरा



चैक गणराज्य से एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने दिनांक 5 जून, 2024 को रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई एसोसिएशन ऑफ चैक रेलवे इंडस्ट्री की महानिदेशक श्रीमती मैरी वोपालेंस्का ने की। इस यात्रा का उद्देश्य रेल क्षेत्र में सहयोग के अवसरों पर चर्चा करना, अधिक तालमेल स्थापित करना तथा अधिक व्यावहारिक परिणाम प्राप्त करने के लिए द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देना था। रेल डिब्बा कारखाना में उनके आगमन पर एक विशेष सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें रेल डिब्बा कारखाना के महाप्रबंधक श्री मंजुल माथुर तथा अन्य विभागाध्यक्षों ने भाग लिया।■

## रामागुंडम फ्रेट डिपो को भारतीय रजिस्टर गुणवत्ता प्रणाली से 'आईएमएस प्रमाणन' प्राप्त हुआ



दक्षिण मध्य रेलवे के प्रमुख माल डिपो में से एक, रामागुंडम रूटीन ओवरहालिंग (आरओएच) डिपो को आईआरक्लास सिस्टम्स एंड सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के एक प्रभाग, भारतीय रजिस्टर गुणवत्ता प्रणाली से प्रतिष्ठित 'एकीकृत प्रबंधन प्रणाली' (आईएमएस) प्रमाणन प्राप्त हुआ है। रामागुंडम डिपो दक्षिण मध्य रेलवे का एकमात्र माल डिपो है, जिसे आईएमएस प्रमाणन से सम्मानित किया गया है। डिपो के समग्र हाउसकीपिंग में सुधार और रिकॉर्ड रखने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने से यह उपलब्धि हासिल करने में मदद मिली है। श्री अरुण कुमार जैन, जीएम ने श्री भरतेश कुमार जैन, डीआरएम, सिकंदराबाद डिवीजन और डिवीजन के मैकेनिकल विंग को रामागुंडम फ्रेट डिपो के लिए आईएमएस प्रमाणन प्राप्त करने में उनके प्रयासों के लिए बधाई दी।■

## चिरेका ने बनाया कीर्तिमान : वित्त वर्ष 2024–25 में 100वें लोकोमोटिव को किया रवाना



चिरेका ने वित्त वर्ष 2024-25 में रिकॉर्ड 50 कार्य दिवसों में 100 रेलइंजनो का निर्माण किया है, जो किसी भी वित्त वर्ष में 100 लोको उत्पादन का सबसे तेज प्रदर्शन है। वित्त वर्ष 2024-25 में उत्पादित 100वें विद्युत रेल इंजन को दिनांक 30 मई, 2024 को चिरेका कारखाना परिसर से रवाना किया गया। यह उल्लेखनीय उपलब्धि रिकॉर्ड 50 कार्य दिवसों में हासिल की गई है, जो किसी भी वित्त वर्ष में सर्वश्रेष्ठ उत्पादन गति है। ज्ञात हो कि वित्त वर्ष 2024-25 के लिए चिरेका को 700 लोकोमोटिव का उत्पादन लक्ष्य दिया गया है। श्री हितेंद्र मल्होत्रा, महाप्रबंधक ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए चिरेका की सम्पूर्ण टीम को बधाई दी है।■

## सियालदह स्टेशन को मिला ग्रीन बिल्डिंग गोल्ड रेटिंग



सियालदह रेलवे स्टेशन की इमारत को नवीकरणीय ऊर्जा के अनुकरणीय उपयोग, कुशल जल प्रबंधन, न्यूनतम पर्यावरणीय पदचिह्न, प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन प्रक्रियाओं और अन्य सराहनीय मानदंडों के बीच शीर्ष यात्री सुविधाओं के प्रावधान के लिए प्रतिष्ठित गोल्ड रेटिंग से सम्मानित किया गया। इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल ग्रीन रेलवे स्टेशन रेटिंग सिस्टम टिकाऊ डिजाइन, निर्माण और संचालन के विभिन्न पहलुओं को कवर करने वाले मानदंडों के एक सेट पर आधारित है।■

## बरेका ने वित्त वर्ष 2023–24 में 475 रेल इंजन का निर्माण कर तोड़ा पुराना रिकार्ड



बनारस रेल इंजन कारखाना ने एक बार फिर से मील का पत्थर स्थापित करते हुए वित्त वर्ष 2023-24 की समाप्ति पर रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित कुल 460 रेल इंजनों के निर्माण लक्ष्य को पीछे छोड़ते हुए 475 रेल इंजनों का निर्माण करके एक महत्त्वपूर्ण कीर्तिमान स्थापित किया। नए वित्त वर्ष 2024-25 में रेल मंत्रालय द्वारा बनारस रेल इंजन कारखाना को 500 विद्युत रेल इंजन बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।■

## पू. सी. रेलवे के महाप्रबंधक ने गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर रिटायरिंग रूम का उद्घाटन किया



यात्रियों को बेहतर आराम और सुख-साधन के साथ आधुनिक सुविधाएं प्रदान करने के अपने प्रयास को जारी रखते हुए, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ने गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर 12 रिटायरिंग रूम का नवीनीकरण किया है। नए रिटायरिंग रूम का उद्घाटन दिनांक 12 जून, 2024 को पू. सी. रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव ने रेलवे के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में किया। नवीनीकृत रिटायरिंग रूम में 12 पूर्ण वातानुकूलित कमरे हैं, जिसमें आकर्षक डिजाइन वाले इंटीरियर्स, वॉल पेंटिंग तथा पूरी तरह से सुसज्जित संलग्न वॉशरूम है। रिटायरिंग रूम के इंटीरियर्स के नवीनीकृत हिस्से के रूप में खूबसूरत लुक देने के लिए एक नया स्वरूप दिया गया था। रिटायरिंग रूम में आहार और पेय पदार्थ का विकल्प, ऑन कॉल आपातकालीन चिकित्सक, लाउन्ड्री सर्विस, मुफ्त वाई-फाई, आरओ वाटर डिस्पेंसर और किराए पर टैक्सी/कार की सेवाओं के साथ ट्रैवेल पैकेज सहित विभिन्न आधुनिक सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।■

## पश्चिम रेलवे ने मुंबई लोकल ट्रेन में लगाया पैनोरमा डिजिटल डिस्प्ले




मुंबईकरों के ट्रेन यात्रा अनुभव को बेहतर करने के लिए एक अनूठे तरीके से, मुंबई सेंट्रल स्थित पश्चिम रेलवे के ईएमयू कारशेड ने मोटर कोचों के साइड पैनल पर एक नया हेड कोड डिस्प्ले सिस्टम सफलतापूर्वक शुरू किया है। यह अभिनव सुविधा यात्रियों को लोकल ट्रेन के गंतव्य की स्पष्ट और तत्काल पहचान प्रदान करेगी, जो मुंबई उपनगरीय नेटवर्क पर ज्यादा सुविधा के साथ ही यात्रा की जानकारी को सुनिश्चित करेगी। इस डिस्प्ले की अनूठी विशेषता यह है कि जब गार्ड प्रारंभिक स्टेशन पर अपनी कैब में चढ़ता है और ट्रेन नंबर फीड करता है, तो यात्रा का सारा विवरण साइड-माउंटेड पैनोरमा डिजिटल डिस्प्ले पर सटीक रूप से दिखने लगता है। डिजिटल डिस्प्ले अंग्रेजी, हिंदी और मराठी भाषाओं में ट्रेन का गंतव्य दिखाएगा, जो 3 सेकंड के अंतराल पर भाषा को बदलेगा। इसके अलावा ये डिस्प्ले मोड भी प्रदर्शित करेंगे यानी फास्ट (F) या धीमी (S) और ट्रेन 12-कार ईएमयू है या 15-कार ईएमयू ट्रेन। इन डिजिटल डिस्प्ले के कुछ खास फीचर इस प्रकार हैं :

- ये डिजिटल डिस्प्ले फुल एचडी टीएफटी (थिन फिल्म ट्रांजिस्टर) हैं।
- इन डिस्प्ले को मजबूत ग्लास से सुरक्षित किया गया है।
- इसकी ब्राइटनेस और देखने का कोण ऑप्टिमम है जो लोगों को स्क्रीन पर कोड को आसानी से देखने में मदद करेगा।
- डिस्प्ले स्क्रीन के कंट्रास्ट को भी सेंसर के माध्यम से स्वचालित रूप से नियंत्रित किया जाता है ताकि टेक्स्ट 5 मीटर तक की दूरी से स्पष्ट रूप से दिखाई दे।
- इसे इन-हाउस डिजाइन किए गए ब्रैकेट पर लटकाया गया है
- इन डिस्प्ले को 5 मिमी मोटाई की पॉलीकार्बोनेट शीट से दोबारा सुरक्षित किया गया है।
- सभी पेचों को स्प्लिट पिन व्यवस्था के साथ लॉक किया गया है ताकि कंपन के कारण पेंच ढीले होने की स्थिति में डिस्प्ले को गिरने से बचाया जा सके।

फिलहाल एक रेक में डिस्प्ले सिस्टम लगाया गया है, जिसमें प्रत्येक तरफ चार-चार डिजिटल डिस्प्ले के साथ कुल आठ डिजिटल डिस्प्ले हैं, जो यात्रा की जरूरी जानकारी का एक विस्तृत दृश्य प्रदान करते हैं। यात्रियों की प्रतिक्रिया सकारात्मक रही है और निकट भविष्य में इसे अन्य रेकों में भी लगाने की योजना है।■

## पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल में मनाया गया 'विश्व तंबाकू निषेध दिवस'



तंबाकू के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए दुनिया भर में प्रतिवर्ष 31 मई को 'विश्व तंबाकू निषेध दिवस' मनाया जाता है। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल द्वारा रोगियों, मरीजों की देखभाल करने वाले अस्पताल के कर्मचारियों और डॉक्टरों के बीच एक सामाजिक जागरूकता की पहल की गई।

इस अवसर पर जगजीवन राम अस्पताल की चिकित्सा निदेशक डॉ. ममता शर्मा ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और माता-पिता को अपने बच्चों के लिए तंबाकू का सेवन न करने का उदाहरण पेश करने की सलाह दी। एचसीजी कैंसर सेंटर, कोलाबा के हेड एंड नेक ऑन्कोलॉजी सर्जन डॉ. आशीष तिवारी ने स्वास्थ्य पर तंबाकू के हानिकारक प्रभावों पर व्याख्यान दिया। मुख्य सलाहकार डॉ. जे. पी. रावत ने भी तंबाकू की हानिकारक लत के बारे में जानकारी दी। जगजीवन राम अस्पताल के कर्मचारियों द्वारा तंबाकू के सेवन के हानिकारक और घातक प्रभावों का संदेश फैलाने के लिए एक ज्ञानवर्धक नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर पोस्टर और स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित लोगों को तम्बाकू उत्पादों का सेवन न करने की शपथ दिलाई गई■

## पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल को सीएसआर के तहत कॉक्लियर इम्प्लांट प्राप्त



मुंबई में स्थित पश्चिम रेलवे के क्षेत्रीय अस्पताल जगजीवन राम अस्पताल ने अपने लाभार्थियों को सर्वोत्तम चिकित्सा

सेवाएँ और समय पर जीवन रक्षक प्रक्रियाएँ प्रदान करने के लिए सक्रिय रूप से पहल की है। दिनांक 11 जून, 2024 को पश्चिम रेलवे मुख्यालय, चर्चगेट में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार मिश्र को मेसर्स वेबटेक लोकोमोटिव प्राइवेट लिमिटेड ने जगजीवन राम अस्पताल के लिए 10 कॉक्लियर इम्प्लांट भेंट किए। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे के अतिरिक्त महाप्रबंधक श्री प्रकाश बुटानी के साथ-साथ विभिन्न विभागों के प्रमुख विभागाध्यक्ष भी उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि जेआरएच में कॉक्लियर इम्प्लांटेशन जैसी कुशल सर्जरी की जा रही है और यह वर्ष 2005 से कॉक्लियर इम्प्लांट प्रक्रिया शुरू करने वाले पहले अस्पतालों में से एक है। अब तक, जेआरएच में 200 से अधिक छोटे बच्चों और वयस्कों दोनों पर कॉक्लियर इम्प्लांट सर्जरी की जा चुकी है। इस सर्जरी ने उन्हें सामान्य जीवन जीने में सक्षम बनाया है।■

## पश्चिम रेलवे द्वारा ओरल कैंसर जाँच शिविर का आयोजन



पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल के लोअर परेल स्थित स्वास्थ्य इकाई द्वारा दिनांक 29 मई, 2024 को ओरल कैंसर स्क्रीनिंग कैंप का आयोजन किया गया। यह कैंप कैंसर पेशेंट्स एंड एसोसिएशन (CPAA) के सहयोग से आयोजित किया गया। स्क्रीनिंग कैंप में प्रतिभागियों को निवारक जाँच, तंबाकू की लत आदि के माध्यम से कैंसर का जल्द पता लगाने के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई और ईएनटी डॉक्टरों की एक टीम द्वारा व्यक्तिगत जाँच की गई।

मुंबई सेंट्रल की मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. ज्योत्सना चोपड़ा, जगजीवन राम अस्पताल, मुंबई सेंट्रल के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. जे. पी. रावत, सीपीएए की कार्यकारी निदेशक सुश्री नीता मोरे और सीपीएए की सक्रिय स्वयंसेवक और प्रसिद्ध अभिनेत्री सुश्री वर्षा उसगाँवकर की उपस्थिति में किया गया। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए डॉ. ज्योत्स्ना चोपड़ा ने कहा कि रोकथाम इलाज से बेहतर है। डॉ. जे.पी रावत ने लोगों को नशे की आदत छोड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि वे अपने खानपान पर ध्यान दें, क्योंकि अस्वास्थ्यकर खानपान से बीमारी होती है। उन्होंने कैंसर का पता लगाने के लिए जागरूक होने और समय रहते जाँच करवाने पर जोर दिया।

ईएनटी डॉक्टरों की टीम ने उपस्थित लोगों की जाँच की और उन्हें स्वस्थ जीवनशैली के बारे में परामर्श दिया। कैंसर में आहार और तंबाकू मुक्त जीवनशैली के बारे में ब्रोशर वितरित किए गए। कुल 112 व्यक्तियों की जाँच की गई, जिसमें कर्मचारी, परिवार के सदस्य और अनुबंध कर्मचारी और कुली शामिल थे। दो व्यक्तियों को बायोप्सी कराने की सलाह दी गई। इसके अलावा ल्यूकोप्लाकिया और एरिथ्रोप्लाकिया के 29 मामले भी पाए गए और प्रतिभागियों को फॉलोअप की सलाह दी गई।■

## पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल को राष्ट्रीय अस्पताल प्रत्यायन बोर्ड से मान्यता मिली



पश्चिम रेलवे के जोनल अस्पताल, जगजीवन राम अस्पताल (जेआरएच), मुंबई को राष्ट्रीय अस्पताल प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएच) प्रवेश स्तर द्वारा मान्यता दी गई है, जिससे जेआरएच यह प्रतिष्ठित गुणवत्ता नियंत्रण मान्यता प्राप्त करने वाला भारतीय रेल का पहला अस्पताल बन गया है।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार मिश्रा ने दिनांक 4 अप्रैल, 2024 को जगजीवन राम अस्पताल में आयोजित एक समारोह में एनएबीएच प्रमाण पत्र का अनावरण किया।

एनएबीएच मान्यता एक प्रतिष्ठित प्रमाणन है जो साबित करता है कि अस्पताल अपने मरीजों की देखभाल के लिए सर्वोत्तम सुविधाएँ प्रदान करने के लिए समर्पित है और यहां उच्चतम स्तर की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अस्पताल की निगरानी और जाँच की जाती है। महाप्रबंधक श्री ए. के. मिश्रा ने जेआरएच के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की■

## पश्चिम मध्य रेल, भारत स्काउट एवं गाइड, राज्य मुख्यालय, जबलपुर द्वारा पंचम राज्य कैंपोरी समारोह का आयोजन



पश्चिम मध्य रेल, भारत स्काउट एवं गाइड, राज्य मुख्यालय, जबलपुर द्वारा दिनांक 7 से 9 जून, 2024 तक जिला स्काउट डेन, जबलपुर में पंचम राज्य कैंपोरी का आयोजन किया गया। इस पंचम राज्य कैंपोरी में विभिन्न सांस्कृतिक इवेंट जैसे भक्ति गीत, लोक नृत्य एवं लघु नाटिका प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं, जिसमें पश्चिम मध्य रेल के तीनों मंडलों जबलपुर, भोपाल एवं कोटा से आये स्काउट्स-गाइड्स के बच्चों ने शानदार प्रस्तुतियाँ दीं। पश्चिम मध्य रेल, महाप्रबंधक श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय के मुख्य आतिथ्य में ग्रैंड कैंपफायर समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक श्री आर.एस.सक्सेना, राज्य मुख्य आयुक्त एवं वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री पंकज शर्मा, मंडल रेल प्रबंधक श्री विवेक शील एवं प्रमुख मुख्य विभागाध्यक्ष सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।■

## पश्चिम मध्य रेल में दो दिवसीय अंतर रेलवे मंडल सांस्कृतिक प्रतियोगिता का आयोजन




संरक्षक सांस्कृतिक अकादमी पश्चिम मध्य रेल एवं महाप्रबंधक श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय के मार्गदर्शन में सांस्कृतिक अकादमी, भोपाल द्वारा नर्मदा क्लब परिसर, भोपाल में दिनांक 30 एवं 31 मई 2024 तक दो दिवसीय अन्तर मंडलीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में तीनों मंडलों, दोनों कारखानों एवं मुख्यालय से कुल 6 टीमों ने भाग लिया, जिनके बीच सुगम गायन, शास्त्रीय गायन, सुगम वादन, शास्त्रीय वादन, शास्त्रीय नृत्य एवं सामूहिक नृत्य की प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। दो दिवसीय इस प्रतियोगिता में सभी कलाकारों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।■

## आर.डी.एस.ओ. द्वारा सांस्कृतिक प्रतियोगता का आयोजन



आरडीएसओ स्टॉफ बेनीफिट फण्ड समिति द्वारा अपने संगठन के कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों के मध्य गायन एवं नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य संगठन के कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों को नृत्य एवं संगीत के लिए मंच प्रदान करना तथा प्रतियोगी भाव को बढ़ावा देना था। आरडीएसओ परिसर स्थित प्रेक्षागृह में आयोजित इस प्रतियोगिता में 50 से अधिक प्रतियोगियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय में नृत्य के विभागाध्यक्ष श्री ज्ञानेंद्र वाजपेई एवं संगीत शिक्षक डॉ. रंजना द्विवेदी प्रतियोगिताओं के निर्णायक रहे। कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अपर महानिदेशक, आरडीएसओ, श्री शरद कुमार जैन उपस्थित रहे।■

## महिला कल्याण संगठन उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय द्वारा हेल्दी बेबी शो कैंप का आयोजन



रेलवे के केंद्रीय चिकित्सालय में शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में महिला कल्याण संगठन उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय द्वारा 'हेल्दी बेबी शो' कैंप का आयोजन किया गया। कैंप में उम्र समूह के अनुसार तीन काउंटर बनाए गए। जीरो से एक वर्ष तक के बच्चों के परीक्षण, काउंटर नंबर एक पर बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर कल्पना मिश्रा द्वारा एक से तीन वर्ष तक के बच्चों का परीक्षण काउंटर नंबर दो पर बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर आशीष अग्रवाल द्वारा तथा तीन से पाँच वर्ष तक के बच्चों का परीक्षण डॉ. रीना अग्रवाल द्वारा किया गया। बच्चों के समुचित पोषण हेतु, श्रीमती अपर्णा सक्सेना सीनियर डाइटिशियन द्वारा काउंसलिंग की गई तथा उचित परामर्श दिया गया।■

## पूर्व रेलवे ने बर्द्धमान अप यार्ड आधुनिकीकरण के साथ सुरक्षा उपाय को उन्नत किया



पूर्व रेलवे ने बर्द्धमान अप यार्ड में पुराने लीवर फ्रेम को एक उन्नत इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम से सफलतापूर्वक बदल दिया। बर्द्धमान अप यार्ड में 1948/1949 का लीवर फ्रेम केबिन, रेल परिचालन के समृद्ध इतिहास के एक प्रमाण के रूप में मौजूद था। हालाँकि, बढ़ी हुई सुरक्षा, परिचालन गति और लचीलेपन की आवश्यकता को पहचानते हुए, पूर्व रेलवे ने आधुनिकीकरण की यात्रा शुरू की।■

## पूर्व रेलवे ने सियालदह–बामनहाट उत्तरबंगा एक्सप्रेस को एलएचबी रेक में अपग्रेड किया



पूर्व रेलवे ने सियालदह–बामनहाट उत्तरबंगा एक्सप्रेस को अपग्रेड करके लिंके हॉफमैन बुश (एलएचबी) रेक में बदल दिया है। इस परिवर्तन के कारण हुए सबसे उल्लेखनीय सुधारों में से एक सभी वर्गों में यात्री क्षमता में पर्याप्त वृद्धि है। AC 3–टियर, AC 2–टियर और AC 1–टियर में 74 अतिरिक्त बर्थ के साथ सुनिश्चित करता है कि अधिक यात्री सियालदह–बामनहाट उत्तरबंगा एक्सप्रेस में आरामदायक यात्रा का आनंद ले सकते हैं।■

# कोलकाता मेट्रो होगी मोटरमैन रहित



कोलकाता मेट्रो 'कोलकाता शहर की जीवन रेखा' है। 1984 में अपनी यात्रा शुरू करने वाली कोलकाता मेट्रो ने लगभग 40 वर्षों में उल्लेखनीय विस्तार किया है और लाखों लोगों तक पहुंची है। चार दशक लंबे इस सफर में देश की पहली मेट्रो ने यात्री सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। यात्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, विभिन्न आधुनिक तकनीकों को अपनाया गया है। सिगनलिंग प्रणाली के आधुनिकीकरण पर विशेष जोर दिया गया है। स्पेन, डेनमार्क जैसे विकसित देशों में कई अन्य मेट्रो प्रणालियों की तरह, कोलकाता मेट्रो द्वारा भी संचार आधारित ट्रेन नियंत्रण (सीबीटीसी) सिगनलिंग प्रणाली का विकल्प चुना गया है। वर्तमान में यह प्रणाली ₹800 करोड़ की लागत के साथ जोका से एस्प्लानेड और कवि सुभाष से बिमान बंदर मेट्रो कॉरिडोर पर स्थापित की जा रही है। यह अत्याधुनिक सिगनलिंग प्रणाली बहुत सुरक्षित है और ट्रेन परिचालन को सुगमता प्रदान करती है। इस संदर्भ में यह बताना जरूरी है कि इसी CBTC सिगनलिंग सिस्टम की मदद से स्पेन, डेनमार्क और दुनिया के कई दूसरे देशों में बिना मोटरमैन के मेट्रो चलाई जा रही है। दिल्ली मेट्रो ने भी मोटरमैन रहित मेट्रो सेवा शुरू की है। कोलकाता मेट्रो में CBTC सिगनलिंग सिस्टम के ATO (ऑटोमैटिक ट्रेन ऑपरेशन) मोड में मोटरमैन की ट्रेन चलाने में कोई भूमिका नहीं होती। वे सिर्फ दरवाजे बंद करने के लिए बटन दबाते हैं और मेट्रो को स्टेशनों से शुरू करते हैं। भारत के दूसरे मेट्रो में यह काम करने वालों को ट्रेन ऑपरेटर कहा जाता है।

नए कॉरिडोर के अलावा, देश की पहली मेट्रो प्रणाली में 40 साल पुराने नॉर्थ-साउथ मेट्रो कॉरिडोर में भी CBTC सिगनलिंग सिस्टम लगाया जा रहा है। इस काम को पूरा करने के लिए ₹500 करोड़ आवंटित किए गए हैं। पुराने सिगनलिंग सिस्टम को सीबीटीसी सिगनलिंग सिस्टम से बदलने का अनुभव रखने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठन को इस काम को पूरा करने के लिए इस कार्य में शामिल किया गया है। अगले पांच वर्षों में कोलकाता मेट्रो का पूरा नेटवर्क सीबीटीसी सिगनलिंग सिस्टम के एटीओ मोड से कवर हो जाएगा। एक बार यह कार्य पूर्ण हो जाने पर, यह यात्रियों के लिए बिल्कुल नया अनुभव होगा। आवश्यकतानुसार गाड़ियों की फ्रीक्वेंसी को बढ़ाने के लिए भी यह व्यवस्था कारगर सिद्ध होगी।■

# डिमापुर-कोहिमा नई रेल परियोजना की सबसे लंबी टनल का निर्माण कार्य शुरु



डिमापुर-कोहिमा नई रेल लाईन परियोजना में एक कदम बढ़ाते हुए इसके टनल संख्या 7 के पोर्टल 1 में निर्माण कार्य मार्च, 2024 के मध्य शुरू हो गया। यह निर्माण स्थल नागालैंड के डिमापुर जिला के मेड्जिफेमा अंचल के सीपामा गाँव में स्थित है। डिमापुर-कोहिमा नई रेल लाईन परियोजना की यह सबसे लंबी टनल होगी। इस टनल की लंबाई 6,610 मीटर है। सीपामा गाँव के टनल संख्या 7 के पोर्टल 1 तक पहुंचने के लिए पहाड़ियों से होकर 12 कि.मी. लंबी एक पहुंच सड़क का निर्माण किया गया। यह टनल इस परियोजना के फेरिमा और पिफेमा स्टेशनों के बीच स्थित है। ₹6,663 करोड़ की अनुमानित लागत पर 82.50 कि.मी. लंबी (असम में 2.75 कि.मी. और नागालैंड में 79.75 कि.मी.) डिमापुर-कोहिमा नई रेल लाईन परियोजना का निर्माण असम के धनसिरी से कोहिमा के निकटवर्ती जुब्जा तक किया जा रहा है। इस परियोजना में 8 नए स्टेशन अर्थात् धनसिरी, धनसिरीपार, शोखुवि, मोलवोम, फेरिमा, पिफेमा, मेंगुजुमा और जुब्जा है।

इस परियोजना में 27 बड़े पुल, 148 छोटे पुल, 5 रोड ओवर ब्रिज, 15 रोड अंडर ब्रिज और 31 कि.मी. मार्ग में 21 सुरंगें शामिल हैं। अक्टूबर, 2021 में धनसिरी से शोखुवि तक 16.5 कि.मी. का सेक्शन कमीशंड हो चुका है। शोखुवि से मेघालय के मेंथीपथार और अरुणाचल प्रदेश के नाहरलगुन तक यात्री ट्रेन सेवा भी शुरू हो चुकी है। चल रही इस रेल कनेक्टिविटी परियोजना के पूर्ण होने पर, वर्तमान परिदृश्य की तुलना में काफी कम लागत पर नागालैंड में खाद्यान्न, पेट्रोलियम उत्पाद, ऑटोमोबाइल और विभिन्न बुनियादी संरचना और निर्माण सामग्री जैसी आवश्यक सामग्रियों के परिवहन की सुविधा मिलेगी।■

# देश की पहली मेट्रो ने देश के सबसे पुराने सरकारी विज्ञान संग्रहालय में अपनी छाप छोड़ी

कोलकाता और आसपास के क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास में कोलकाता मेट्रो के योगदान को मान्यता देने के लिए, देश के सबसे पुराने सरकारी स्वामित्व वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी संग्रहालय, बिड़ला औद्योगिक और प्रौद्योगिकी संग्रहालय (BITM) ने दुनिया में परिवहन प्रणाली के क्रमिक विकास को दिखाने के लिए समर्पित अपनी ट्रांसपोर्ट गैलरी में कोलकाता मेट्रो के क्रमिक विकास को प्रदर्शित किया है। यह गैलरी दिनांक 18 मई, 2024 को अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय एक्सपो के एक भाग के रूप में खोली गई है। इस गैलरी में चित्रावली की मदद से पहिये के आविष्कार से लेकर आज के इलेक्ट्रिक वाहन तक मानव सभ्यता की प्रगति को आकर्षक कहानी कहने के प्रारूप में दर्शाया गया है।

एक समय पर प्रसिद्ध टैगोर परिवार की संपत्ति इस संग्रहालय भवन के भूतल पर स्थित इस गैलरी में आने वाले आगंतुक, अब कोलकाता की नदी के नीचे मेट्रो प्रणाली का लघु मॉडल देख सकते हैं। इसमें 3-डी मॉडल की सहायता से नदी के नीचे मेट्रो परिचालन को प्रदर्शित किया गया है। एक अन्य 3-डी मॉडल भूमिगत मेट्रो स्टेशन और सतह के स्तर के विभिन्न स्तरों को दर्शाता है। इस गैलरी में



विभिन्न दुर्लभ और विरासत चित्रों को भी जगह मिली है जो आगंतुकों को दुनिया की विभिन्न मेट्रो रेलवे प्रणालियों के बारे में भी बताती हैं। इस गैलरी की यात्रा समाप्त करने से ठीक पहले, आगंतुक अब कोलकाता मेट्रो के पुराने टिकट, टोकन और स्मार्ट कार्ड को भी देख सकते हैं जो निकास द्वार के पास प्रदर्शित की गई है। पुरानी यादों को ताजा करने का यह सफर 1959 में स्थापित इस संग्रहालय का एक अतिरिक्त आकर्षण है।■

# भारतीय रेल ने यूटीएस मोबाइल ऐप पर जियो-फेंसिंग प्रतिबंधों की बाहरी सीमा समाप्त की




यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप पश्चिम रेलवे के गैर-उपनगरीय और उपनगरीय खंड पर उपलब्ध है। टिकट प्राप्त करने का यह तरीका रेल यात्रियों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हो गया है तथा अधिक से अधिक लोग इस मोबाइल ऐप का उपयोग कर रहे हैं, जिससे ऐप से टिकट बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज हुई है। यात्री सुविधा को और बढ़ाने तथा यात्रियों के लिए टिकट बुक करने की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए भारतीय रेल ने अब यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप पर जियो-फेंसिंग प्रतिबंध की बाहरी सीमा को समाप्त कर दिया है। यह तीन 'सी' संपर्क रहित टिकटिंग, कैशलेस लेनदेन और टिकट बुक करते समय ग्राहक सुविधा और अनुभव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से डिजिटलीकरण पहल का हिस्सा है।

यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप शुरू करने का मुख्य उद्देश्य डिजिटल टिकटिंग मोड को प्रोत्साहित करना, सेल्फ टिकटिंग को बढ़ावा देना और यह सुनिश्चित करना है कि यात्री कतारों की परेशानी का सामना किए बिना टिकट खरीद सकें। हाल ही में, रेलवे ने दूरी प्रतिबंध को संशोधित किया है और अब यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप पर जियो-फेंसिंग प्रतिबंध की बाहरी सीमा को समाप्त कर दिया है। जियो-फेंसिंग की बाहरी सीमा हटने के बाद यात्री अब घर बैठे ही किसी भी स्थान से किसी भी गंतव्य के लिए टिकट बुक कर सकते हैं। हालाँकि, यात्रियों को टिकट बुक करने के एक घंटे के भीतर सबर्बन सोर्स स्टेशन से तथा गैर-उपनगरीय ट्रेनों के मामले में तीन घंटे के भीतर ट्रेन पकड़नी होगी। यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप का उपयोग करने का एक अतिरिक्त लाभ यह है कि यात्रियों को आर-वॉलेट रिचार्ज पर 3% बोनस मिलेगा।■

आप सबका **भारतीय रेल** के साथ अटूट रिश्ता है

भारतीय रेल के साथ आप अपने संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत, लेख आदि हिन्दी में हमें भेज सकते हैं। पसंद आने पर रचनाओं को हम रेल मंत्रालय की आधिकारिक मासिक पत्रिका

**भारतीय रेल**

में प्रकाशित करेंगे

ई-मेल editorbhartiyarailrb@gmail.com

चयनित सामग्री/लेख की जानकारी ई-मेल द्वारा दी जाएगी,
प्रकाशित रचनाओं के लिए रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानदेय भी दिया जाएगा

# उपलब्धियाँ


कोच उत्पादन के साथ
बेड़े का विकास
6,550
5,877
+11% वृद्धि
वित्त वर्ष 2022-23
वित्त वर्ष 2023-24
यात्री वहन क्षमता में वृद्धि


बुनियादी ढांचे
को मजबूत करना
रेल पुलों का पुनर्वास करके यात्री सुरक्षा को मजबूत करना
2,132
1,732
+400
वित्त वर्ष 2022-23
वित्त वर्ष 2023-24


63,625 आरकेएम विद्युतीकृत
कुल मौजूदा
बीजी नेटवर्क का 97%
तेज और पर्यावरण अनुकूल ट्रेन
संचालन के साथ राष्ट्र को
सशक्त बनाना


स्वदेशी उत्पादन में
प्रगति के पहिए
2,38,432
2,15,494
+10% वृद्धि
वित्त वर्ष 2022-23
वित्त वर्ष 2023-24
पहियों का उत्पादन


विद्युतीकरण
में नये मील के पत्थर
वित्त वर्ष 2023-24 में
7,188 आरकेएम विद्युतीकृत
(डीएफसी सहित)


विद्युत रेल इंजनों
के उत्पादन में ऐतिहासिक ऊंचाई
1,246
977
27.5%
वित्त वर्ष 2022-23
वित्त वर्ष 2023-24
















## आपको यह **अंक कैसा लगा** हमें जरूर बताएं

ई-मेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

*पत्र लिखें* ▶ **संपादक,** भारतीय रेल, कमरा नं. 411, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001

# हमारे रेल एवं रेल राज्य मंत्रियों की सूची

दिनांक 11 जून, 2024 को श्री अश्विनी वैष्णव ने रेल मंत्री का पदभार पुनः संभाल लिया है। पाठकों की जानकारी के लिए अब तक भारतीय रेल का प्रभार संभालने वाले रेल मंत्रियों एवं रेल राज्य मंत्रियों की सूची यहाँ प्रस्तुत है।




## रेल मंत्रियों की सूची



श्री आसफ अली
02.09.1946 से 14.08.1947



डॉ. जान मथाई
15.08.1947 से 22.09.1948



श्री एन. जी. एस. आयंगर
22.09.1948 से 13.05.1952



श्री लाल बहादुर शास्त्री
13.05.1952 से 07.12.1956



श्री जगजीवन राम
07.12.1956 से 10.04.1962



श्री स्वर्ण सिंह
10.04.1962 से 21.09.1963



श्री एच. सी. दासप्पा
21.09.1963 से 08.06.1964



श्री एस. के. पाटिल
09.06.1964 से 12.03.1967



श्री सी. एम. पूनाचा
13.03.1967 से 14.02.1969



श्री राम सुभाग सिंह
14.02.1969 से 04.11.1969



श्री पी. गोविंदा मेनन
04.11.1969 से 18.02.1970



श्री जी. एल. नंदा
18.02.1970 से 17.03.1971



श्री के. हनुमन्थैया
18.03.1971 से 22.07.1972



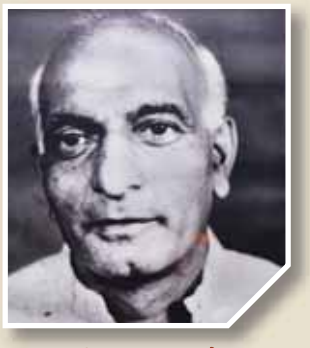
श्री टी. ए. पाई
23.07.1972 से 04.02.1973



श्री एल. एन. मिश्रा
05.02.1973 से 02.01.1975



श्री कमलापति त्रिपाठी
11.02.1975 से 23.03.1977



श्री मधु दंडवते
26.03.1977 से 28.07.1979



श्री टी. ए. पाई
30.07.1979 से 13.01.1980



श्री कमलापति त्रिपाठी
14.01.1980 से 12.11.1980



श्री केदार पांडे
12.11.1980 से 14.01.1982



श्री पी. सी. सेठी
15.01.1982 से 02.09.1982



श्री ए. बी. ए. गनीखां चौधरी
02.09.1982 से 31.12.1984



श्री बंसी लाल
31.12.1984 से 04.06.1986



श्रीमती मोहसिना किदवई
24.06.1986 से 21.10.1986



श्री माधव राव सिंधिया
22.10.1986 से 01.12.1989



श्री जॉर्ज फर्नान्डिस
05.12.1989 से 10.11.1990



श्री जनेश्वर मिश्र
21.11.1990 से 21.06.1991



श्री सी. के. जाफर शरीफ
21.06.1991 से 16.10.1995



श्री राम विलास पासवान
01.06.1996 से 19.03.1998



श्री नीतीश कुमार
19.03.1998 से 05.08.1999



श्री राम नाईक
06.08.1999 से 12.10.1999



सुश्री ममता बैनर्जी
13.10.1999 से 15.03.2001



श्री नीतीश कुमार
20.03.2001 से 22.05.2004



श्री लालू प्रसाद यादव
23.05.2004 से 22.05.2009



सुश्री ममता बैनर्जी
23.05.2009 से 19.05.2011



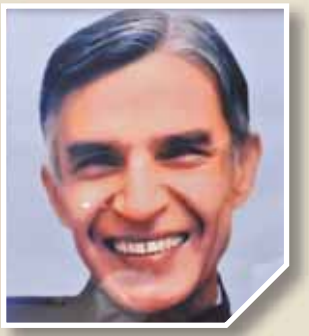
श्री दिनेश त्रिवेदी
13.07.2011 से 19.03.2012



श्री मुकुल रॉय
20.03.2012 से 22.09.2012



डॉ. सी. पी. जोशी
22.09.2012 से 28.10.2012



श्री पवन कुमार बंसल
28.10.2012 से 11.05.2013



डॉ. सी. पी. जोशी
11.05.2013 से 16.06.2013



श्री मल्लिकार्जुन खड़गे
17.06.2013 से 26.05.2014



श्री डी. वी. सदानंद गौड़ा
26.05.2014 से 09.11.2014



श्री सुरेश प्रभाकर प्रभु
09.11.2014 से 03.09.17



श्री पीयूष गोयल
04.09.17 से 07.07.2021



श्री अश्विनी वैष्णव

पहला कार्यकाल
08.07.2021 से 10.06.2024

दूसरा कार्यकाल
11.06.2024 से जारी...

## रेल राज्य मंत्रियों की सूची

| क्र. सं. | रेल राज्य मंत्री का नाम | कार्यकाल | |
|---|---|---|---|
| | | से | तक |
| 1 | श्री के. संथानम | 01.10.1948 | 29.02.1952 |
| 2 | श्री राम सुभाग सिंह | 13.06.1964 | 13.03.1967 |
| 3 | श्री परिमल घोष | 13.03.1967 | 17.10.1969 |
| 4 | श्री मो. शफी कुरेशी | 10.10.1974 | 24.03.1977 |
| 5 | श्री शिव नारायण | 14.08.1977 | 28.07.1979 |
| 6 | श्री सी. के. जाफर शरीफ | 14.01.1980 | 31.10.1984 |
| 7 | श्री माधवराव सिंधिया | 31.12.1984 | 22.10.1986 |
| | | 22.10.1986 (स्वतंत्र प्रभार) | 01.12.1989 |
| 8 | श्री भक्त चरण दास | 21.11.1990 | 21.06.1991 |
| 9 | श्री मल्लिकार्जुन | 21.06.1991 | 18.01.1993 |
| 10 | श्री कानू चरण लेंका | 19.01.1993 | 02.04.1994 |
| 11 | श्री मल्लिकार्जुन (स्वतंत्र प्रभार) | 22,08,1995 | 16.09.1995 |
| 12 | श्री सुरेश कलमाड़ी (स्वतंत्र प्रभार) | 16.09.1995 | 16.05.1996 |
| 13 | श्री सतपाल महाराज | 06.07.1996 | 09.06.1997 |
| 14 | श्री राम नाईक | 19.03.1998 | 05.08.1999 |
| 15 | श्री बंगारू लक्ष्मण | 22.11.1999 | 31,08,2000 |
| 16 | श्री दिग्विजय सिंह | 13.10.1999 | 22.07.2001 |
| 17 | श्री ओ. राजगोपाल | 01.09.2000 | 01.07.2002 |
| 18 | श्री दिग्विजय सिंह | 01.08.2001 | 01.07.2002 |

| क्र. सं. | रेल राज्य मंत्री का नाम | कार्यकाल | |
|---|---|---|---|
| | | से | तक |
| 19 | श्री बंडारू दत्तात्रेय | 02.07.2002 | 08.09.2003 |
| 20 | श्री ए. के. मूर्थी | 02.07.2002 | 14.01.2004 |
| 21 | श्री बासनगौड़ा आर. पाटिल (यत्नाल) | 09.09.2003 | 22.05.2004 |
| 22 | श्री नारणभाई जे. राठवा | 23.05.2004 | 22.05.2009 |
| 23 | डॉ. आर. वेलु | 23.05.2004 | 28.03.2009 |
| 24 | श्री ई. अहमद | 28.05.2009 | 18.01.2011 |
| 25 | श्री के. एच. मुनियप्पा | 28.05.2009 | 28.10.2012 |
| 26 | श्री भरत सिंह सोलंकी | 19.01.2011 | 28.10.2012 |
| 27 | श्री मुकुल राय | 20.05.2011 | 12.07.2011 |
| 28 | श्री के. जे. सूर्य प्रकाश रेड्डी | 28.10.2012 | 26.05.2014 |
| 29 | श्री अधीर रंजन चौधरी | 28.10.2012 | 26.05.2014 |
| 30 | श्री मनोज सिन्हा | 26.05.2014 | 30.05.2019 |
| 31 | श्री राजेन गोहांई | 05.07.2016 | 30.05.2019 |
| 32 | श्री सुरेश अंगड़ी चन्नबसप्पा | 31.05.2019 | 23.09.2020 |
| 33 | श्री रावसाहेब पाटील दानवे | 07.07.2021 | 10.06.2024 |
| 34 | श्रीमती दर्शना जरदोश | 07.07.2021 | 10.06.2024 |
| 35 | श्री वी. सोमन्ना | 11.06.2024 | से जारी... |
| 36 | श्री रवनीत सिंह | 11.06.2024 | से जारी... |

# भारतीय
# पत्रिका की ऑनलाइन सदस्यता

## STEP 1

ऑनलाइन सदस्यता हेतु **www.irctc.co.in** पर जाएं।

इस पेज के **विज्ञापन** (Promotions) पर जाएं।

**आप सीधे**
**www.irctctourism.com/ IRBRmag/#/home/hn**
**पर भी जा सकते हैं।**




❸ **'भारतीय रेल पत्रिका'** पर क्लिक करें।

## STEP 3

❶ इस बॉक्स में यदि आप के पास आईआरसीटीसी का लॉग-इन, पासवर्ड है तो उसका उपयोग करें।

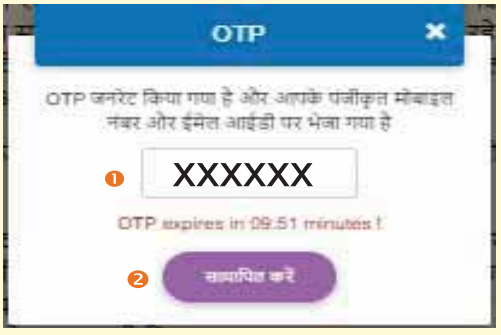



❷ लॉग-इन आईडी नहीं है तो गेस्ट लॉग-इन पर क्लिक करें।

❸ उसमें अपना ई-मेल तथा मोबाइल नंबर दर्ज करें।

❹ सबमिट बटन दबाएँ।

## STEP 5




❶ आपके पंजीकृत मोबाइल एवं ई-मेल पर आए ओटीपी को बॉक्स में दर्ज करें एवं

❷ सत्यापित करें

## STEP 6



❶ पेमेंट मोड (कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई, वॉलेट, इंटरनेशनल कार्ड तथा आईपे) एवं

❷ पेमेंट गेट-वे का ऑप्शन पसंद करें

❸ मेक पेमेंट का बटन दबाएं

# रेल
# प्राप्त करने की सरल प्रक्रिया

अब ई-पत्रिका भी उपलब्ध

## STEP 2

1. यदि आप रेलकर्मी हैं तो 'हां' पर या रेलकर्मी नहीं हैं तो 'नहीं' पर क्लिक करें।
2. यदि 'हां' तो बॉक्स में अपना आरयूआईडी/आईडी/पीपीओ नंबर तथा एक आधिकारिक आईडी की स्कैन कॉपी अपलोड करें।
3. 'भारतीय रेल' पत्रिका के लिए 'हिंदी' को और 'इंडियन रेलवेल' पत्रिका के लिए 'अंग्रेजी' में क्लिक करें।
4. इलेक्ट्रॉनिक मैग्ज़ीन के लिए, ई–मैग्ज़ीन पर क्लिक करें और हार्ड पत्रिका के लिए, फिजिकल बुक पर क्लिक करें
5. एक, दो या तीन यानि जितने साल की सदस्यता चाहते हैं, उस बिन्दु पर क्लिक करें।




6. नियम व शर्तों पर क्लिक करें तथा उसे ध्यान से पढ़ लें। यदि सहमत हों तो बॉक्स में टिक मार्क करें।

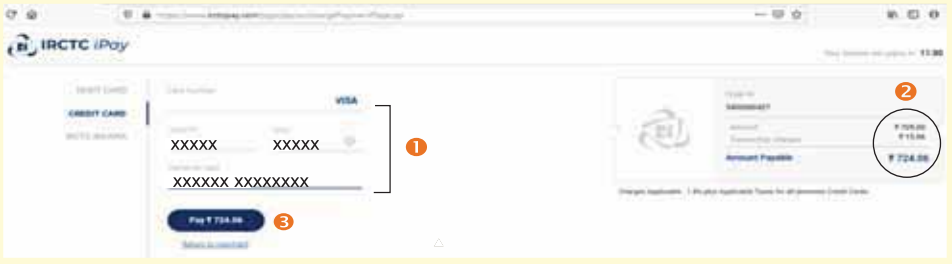
## STEP 4

1. अपना पूरा पता पिन कोड के साथ दर्ज करें



2. सबमिट बटन दबाएँ।

## STEP 7




1. पेमेंट मोड की डीटेल भरें
2. पेमेंट एमाउंट की जानकारी देखें।
3. संतुष्ट होने पर ही 'पे' बटन को दबाएं।
4. बैंक ओटीपी की प्रक्रिया पूर्ण होने पर पेमेंट सक्सेस फुल का मैसेज स्क्रीन पर दिखाई देगा।

### कृपया ध्यान दें

- पेमेंट के समय नियमानुसार ट्रांजेक्शन शुल्क लगते हैं, कृपया पेमेंट करते समय देख लें।
- पेमेंट की प्रक्रिया पूर्ण होने पर आपको सदस्यता संबंधित जानकारी का एस.एम.एस. तथा मेल प्राप्त होगा।
- पेमेंट प्राप्त होते ही निर्धारित माह से आपको पत्रिका प्राप्त होनी शुरू हो जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 011- 47845378, 47845380 ईमेल: irbrhelp@gmail.com

# भारतीय रेल ने

# हमारी भूमि, हमारा भविष्य

## विषय के अनुरूप

## विश्व पर्यावरण दिवस मनाया



भारतीय रेल ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 5 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया, जो इस वर्ष के विश्व पर्यावरण दिवस के विषय 'हमारी भूमि, हमारा भविष्य' के अनुरूप है। विश्व पर्यावरण दिवस 2024 का विषय भूमि बहाल करना, मरुस्थलीकरण को रोकना और सूखे से निपटने के उपायों पर केंद्रित है। रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती जया वर्मा सिन्हा और रेलवे बोर्ड के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की इस कार्यक्रम में उपस्थित रही। रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने रेलवे अधिकारियों को पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

भारतीय रेल इस वर्ष, जून महीने के दौरान पर्यावरण पर व्यवहार संबंधी परिवर्तन के प्रभाव के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए और 'मिशन लाइफ' से लोगों को जोड़ने के उद्देश्य से प्रमुख आउटरीच और जागरूकता संबंधी गतिविधियों का भी आयोजन कर रही है। भारतीय रेल में अब तक 249 जागरूकता और 147 कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिनमें 4,921 प्रतिभागियों ने भाग लिया है। रेलवे ने कुल 4,395 'मिशन लाइफ' शपथ भी दिलाई हैं।

रेलवे पर्यावरण अनुकूल परिवहन का एक बड़ा साधन है। पर्यावरण संरक्षण के लिए यह लगातार ऐसी पहल कर रहा है, जिसका पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिनमें प्रदूषण/जीएचजी उत्सर्जन को कम करना, संसाधनों और ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना और स्थिरता में योगदान देना शामिल हैं। सतत प्रयास के लिए रेलवे द्वारा की गई कुछ प्रमुख नीतिगत पहल इस प्रकार हैं :

- भारतीय रेल ने अप्रैल 2024 तक 63,456 रूट कि.मी. (आरकेएम) का विद्युतीकरण किया है, जो भारतीय रेल के कुल ब्रॉड-गेज नेटवर्क का 96 प्रतिशत से अधिक है।

- कुल 2,637 स्टेशनों और सेवा भवनों में सौर रूफटॉप संयंत्र लगाए गए हैं, जिनकी कुल विद्युत उत्पादन क्षमता 177 मेगावाट है।
- रेलवे स्टेशनों और अन्य भवनों के पुनर्विकास के लिए ऊर्जा दक्षता दिशा-निर्देशों को सुपर-ईसीबीसी अनुपालन के साथ जारी किया गया है। इन सुपर ईसीबीसी दिशा-निर्देशों को जलवायु अनुकूल भवन डिजाइन और ऊर्जा कुशल प्रौद्योगिकियों के माध्यम से ऊर्जा की मांग को कम करने के लक्ष्य के साथ विकसित किया गया है।
- प्रमुख रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास के लिए भारतीय रेल ने पर्यावरण प्रबंधन योजना के रूप में दिशा-निर्देश प्रदान किए हैं। इन दिशा-निर्देशों का क्षेत्रीय रेलवे में अनुपालन किया जाएगा, ताकि आसपास के क्षेत्रों में निर्माण के प्रभाव को कम किया जा सके।
- नीतिगत पहल के रूप में, भारतीय रेल ने अपने मालभाड़ा ग्राहकों के लिए कार्बन सेविंग पॉइंट्स आवंटित करने की अवधारणा शुरू की है, जिन्हें 'रेल ग्रीन पॉइंट्स' कहा जाता है, जो कार्बन उत्सर्जन की अपेक्षित बचत का विवरण देते हैं। पर्यावरणीय प्रभाव का सृजन करने में ग्राहकों की भागीदारी की यह पहल भविष्य में रेल द्वारा अधिक से अधिक परिवहन को भी प्रेरित करेगी।
- भारतीय रेल ने व्यापक अपशिष्ट प्रबंधन रणनीतियों को लागू किया है जो रीसाइक्लिंग, न्यूनीकरण और इसके जिम्मेदार निपटान पर जोर देती है। हरित क्षेत्र का निर्माण, खतरनाक अपशिष्ट पदार्थों का उचित निपटान और जलवाही स्तर को रिचार्ज करने से भूक्षरण को रोका जा सकता है।
- भारतीय रेल ने अपनी उत्पादन प्रक्रिया में ऊर्जा दक्षता के लिए कुछ बड़े कदम उठाए हैं। वर्तमान में सभी 8 इकाइयाँ और 44 कार्यशालाएँ आईएसओ-50001 प्रमाणित हैं, जो ऊर्जा संरक्षण और ऊर्जा दक्षता के प्रति रेलवे की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।
- पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली के कार्यान्वयन के लिए लगभग 700 प्रमुख रेलवे स्टेशनों को आईएसओ 14001 प्रमाणित किया गया है। इसके अलावा, भारतीय रेल ने लगभग 65 अपशिष्ट उपचार संयंत्र, 86 जल रीसाइक्लिंग संयंत्र, 90 सीवेज उपचार संयंत्र, 18 अपशिष्ट से ऊर्जा संयंत्र, 186 अपशिष्ट से खाद और 32 ठोस अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्र स्थापित किए हैं। लगभग 208 स्टेशनों में कम्पोस्ट खाद बनाने वाले संयंत्र हैं और 193 रेलवे स्टेशनों पर सामग्री रिकवरी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
- प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर लगभग 826 प्लास्टिक बोतल क्रशिंग मशीनें लगाई गई हैं।

स्वच्छ भारत अभियान के एक हिस्से के रूप में, भारतीय रेल ने स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने के लिए कई पहल की हैं :

- भारतीय रेल ने अपने सभी कोचों में बायो-टॉयलेट लगाना सुनिश्चित किया है, जिससे ट्रेनों से मानव मल के सीधे डिस्चार्ज होने की समस्या समाप्त हो गई है। शौचालयों में पानी की खपत को कम करने के उद्देश्य से एक कदम आगे बढ़ाते हुए भारतीय रेल ने नए कोचों में बायो-वैक्यूम शौचालय लगाना शुरू कर दिया है।■

# पूर्वोत्तर सीमा रेलवे

पू. सी. रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव ने 5 जून, 2024 को मालीगाँव स्थित कामाख्या कोचिंग डिपो में 100 केएलडी (किलोलीटर प्रति दिन) की क्षमता वाले सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) और एक बायो-टॉयलेट लैब का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मुख्यालय के वरिष्ठ रेल अधिकारी भी उपस्थित थे। रेल अधिकारियों की भागीदारी के साथ मुख्यालय और पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के सभी पांच मंडलों में पौधारोपण के साथ-साथ विभिन्न तरह के अन्य जागरूकता अभियान भी चलाए गए। इस अवसर पर महाप्रबंधक ने पर्यावरण एवं हाउसकीपिंग प्रबंधन पहल पर एक पुस्तिका का भी विमोचन किया।■



# दक्षिण पूर्व रेलवे




दक्षिण पूर्व रेलवे ने दिनांक 5 जून, 2024 को अपने मुख्यालय, गार्डनरीच में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। श्री अनिल कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे मुख्यालय, गार्डनरीच में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में पौधे लगाए। महाप्रबंधक ने श्रीमती प्रीति मिश्रा, अध्यक्षा, दक्षिण पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन की उपस्थिति में मुख्यालय परिसर में एक पार्क 'अमृत उद्यान' का भी उद्घाटन किया।■

# दक्षिण मध्य रेलवे

दक्षिण मध्य रेलवे ने दिनांक 5 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। श्री आर. धनंजयलु, सहायक महाप्रबंधक इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम में विभागों के अधिकारियों ने पर्यावरण की स्थिरता के लिए अपने योगदान और कार्य योजनाओं पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। विश्व पर्यावरण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में रेल निलयम कर्मचारियों के बच्चों के लिए 'भूमि पुनरुद्धार, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने' विषय पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को सहायक महाप्रबंधक ने स्मृति चिन्ह प्रदान किए।■



# रेल पहिया कारखाना



रेल पहिया कारखाना में दिनांक 6 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रबंधक श्री आर. राजगोपाल ने की। इस कार्यक्रम में कृषि हृदय के संस्थापक श्री पी. आर. शेषगिरी राव मुख्य अतिथि थे। समारोह के दौरान पीसीएमई श्री एम के पोद्दार भी मौजूद थे। समारोह के दौरान मुख्य पर्यावरण अधिकारी श्री आनंद स्वरूप तथा कार्यक्रम में उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया।■

# चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना




विश्व पर्यावरण दिवस दिनांक 5 जून, 2024 को चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना (चिरेका) में विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति संदेश दिया गया। तत्पश्चात, प्रशासनिक भवन सभागार में चिरेका के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पर्यावरण संरक्षण की प्रतिज्ञा ली। इसके पश्चात तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र के बधवार हॉल में एक सेमिनार का भी आयोजन किया गया, जिसमें पर्यावरण संबधित विभिन्न विषयों जैसे कूड़े कचरे का प्रबंधन और इसके निपटान तथा ग्लोबल वार्मिंग और इसके दुष्प्रभाव पर चिरेका के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा प्रस्तुति दी गयी। सेमिनार के प्रारंभ में उपस्थित सभी को पौधे वितरित कर पर्यावरण संरक्षण का आग्रह किया गया। इस अवसर पर सभी विभागों के प्रधान अध्यक्ष, विभागीय अधिकारी, पर्यवेक्षक और कर्मचारी गण उपस्थित थे।■

# बनारस रेल इंजन कारखाना

बनारस रेल इंजन कारखाना में 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस 2024 के अवसर पर महाप्रबंधक श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव के नेतृत्व में संरक्षा विभाग द्वारा बृहद पैमाने पर पौधारोपण सहित विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि महाप्रबंधक श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव एवं अन्य प्रमुख विभागाध्यक्ष गण एवं अन्य अधिकारीगण ने पौधारोपण किया। तदोपरांत महाप्रबंधक ने विश्व पर्यावरण दिवस 2024 के अवसर पर बच्चों द्वारा तैयार किए गए चित्रों का अवलोकन किया।■




# रेल डिब्बा कारखाना



रेल डिब्बा कारखाना (आरसीएफ) ने दिनांक 5 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर महाप्रबंधक श्री मंजुल माथुर ने पौधारोपण कर पर्यावरण को हरा-भरा रखने के अभियान की शुरुआत की। इस कार्यक्रम में आरसीएफ के वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए एक रैली भी निकाली गई।■

# आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली में जल प्रबंधन और पहल



**श्री प्रशान्त कुमार मिश्रा**
महाप्रबंधक, आरेडिका

जल पृथ्वी पर सभी जीवन के लिए आवश्यक एवं बहुमूल्य संसाधन है। इस मूल्यवान संसाधन के प्रबंधन एवं संरक्षण की दिशा में सक्रिय कदम उठाना हमारी प्रमुख जिम्मेदारी है। जल संरक्षण का अभिप्राय जल की हर बूंद से है।



पानी की प्रत्येक बूंद को संरक्षित करने के माननीय प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर, जल शक्ति अभियान के हिस्से के रूप में आरेडिका ने जल संरक्षण एवं प्रबंधन की रणनीति की योजना बनाई और वित्त वर्ष 2023-24 में 100 मिलियन लीटर जल संरक्षण क्षमता विकसित की। वित्त वर्ष 2023-24 में आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना रायबरेली ने प्रति वर्ष 30.20 मिलियन लीटर की पुनर्भरण क्षमता वाले पांच वर्षा जल संचयन का निर्माण किया था। जल संरक्षण की लागत को कम करने के लिए मौजूदा तालाब के चारो ओर रिचार्ज बोर की खुदाई के माध्यम से वर्षा जल संचयन की अवधारणा विकसित की गई है, जिसमें कंक्रीट और ईंट के काम को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है, यह एक नयी हरित जल रिचार्जिंग अवधारणा है। मौजूदा तालाब की परिधि पर दस रिचार्ज बोरवेल का निर्माण किया गया, जिससे जल पुनर्भरण क्षमता 33.12 मिलियन लीटर प्रति वर्ष बढ़ गई है।

उपरोक्त के अलावा जॉगर्स एवं इको पार्क में एक मौजूदा तालाब का विस्तार किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप जल धारण क्षमता में 18 मिलियन लीटर की वृद्धि हुई 12.49 मिलियन लीटर जल धारण क्षमता वाले तीन तालाबों का निर्माण किया गया है।

आरेडिका परिसर में मथना नाला से गुजरने वाले वर्षा जल का डायवर्जन किया गया है यह एक गेम चेंजर साबित होने जा रहा है क्योंकि इससे दर्जनों गाँवों को कवर करने वाले बड़े जलग्रहण क्षेत्र के वर्षा जल का संचयन उपरोक्त निर्मित एवं विस्तारित तालाबों में किया जाएगा।

एक मेगा जल संरक्षण योजना के अन्तर्गत वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान 30.49 मिलियन लीटर की कुल धारण क्षमता वाले चार तालाब और मौजूदा तालाब की परिधि पर 63.22 मिलियन लीटर की कुल रिचार्ज क्षमता वाले पांच वर्षा जल संचयन और दस रिचार्ज बोर बनाए गए हैं।

वित्त वर्ष 2023-24 में 100 मिलियन लीटर जल संरक्षण क्षमता सृजन के साथ, एमसीएफ की कुल जल संरक्षण क्षमता बढ़कर 530 मिलियन लीटर हो गई है।

एमसीएफ ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 में 100 मिलियन लीटर जल संरक्षण क्षमता बनाने की योजना बनाई है।■



# रेल मंत्री राजभाषा शील्ड से पुरस्कृत बनारस रेल इंजन कारखाना



नई दिल्ली स्थित रेल भवन के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 22 मार्च 2024 को रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 150वीं बैठक के अंतर्गत रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती जया वर्मा सिन्हा से प्रथम पुरस्कार के रूप में 'रेल मंत्री राजभाषा शील्ड' प्रदान की गई। बरेका के मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य सामग्री प्रबंधक, लोको श्री त्रिलोक कोठारी ने प्राप्त की। इस अवसर पर निदेशक (राजभाषा), रेलवे बोर्ड डॉ. वरुण कुमार, बरेका के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी डॉ. संजय कुमार सिंह, वरिष्ठ अनुवादक श्री अमलेश श्रीवास्तव एवं विभिन्न रेलों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।■

# बरेका में निराला जयंती एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन

बनारस रेल इंजन कारखाना, वाराणसी के राजभाषा विभाग द्वारा बसंत पंचमी के अवसर पर दिनांक 14 फरवरी, 2024 को कीर्ति कक्ष में निराला जयंती एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बरेका के मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य सामग्री प्रबंधक (लोको) श्री त्रिलोक कोठारी ने की। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों ने निराला की कविताओं वह तोड़ती पत्थर, भिक्षुक, राम की शक्ति पूजा, गीत गाने दो मुझे, जागो फिर एक बार, सांध्य काकली रागविराग, भारति जय विजय करे, रंग गई पग-पग धन्य धरा, बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु सहित अनेक कविताओं का पाठ कर आयोजन को सार्थक एवं सर्वग्राह्य बना दिया।■



# आर.डी.एस.ओ. में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक समीक्षा बैठक का आयोजन



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक समीक्षा बैठक का आयोजन दिनांक 12 जून, 2024 को आरडीएसओ के महानिदेशक श्री अजय कुमार राणा की अध्यक्षता में की गई इस बैठक में महानिदेशक ने पिछली तिमाही में राजभाषा के प्रचार-प्रसार और राजभाषा में किए जा रहे कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। महानिदेशक ने बैठक के दौरान सभी अधिकारियों से अधिकाधिक कार्य राजभाषा में करने का आग्रह किया।■

# दक्षिण पूर्व रेलवे की क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक सम्पन्न

क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 26 अप्रैल, 2024 को महाप्रबंधक, श्री अनिल कुमार मिश्रा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में सभी प्रमुख विभागाध्यक्ष उपस्थित थे। बैठक में महाप्रबंधक ने दक्षिण पूर्व रेलवे की 'ई-पत्रिका' के 7वें अंक का विमोचन किया तथा आधार वर्ष 2023 के दौरान आयोजित क्षेत्रीय प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागी कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया।■



# पश्चिम रेलवे मुख्यालय में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक सम्पन्न



केंद्रीय सरकारी कार्यालयों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की इस वर्ष की प्रथम छमाही बैठक पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार मिश्र की अध्यक्षता में दिनांक 27 मई, 2024 को संपन्न हुई। बैठक के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई की गृह पत्रिका 'राजभाषा प्रवाह' के 16वें अंक का विमोचन महाप्रबंधक द्वारा किया गया। वर्ष के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य करने वाले नगर के तीन सरकारी कार्यालयों-प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, मुंबई, केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-2, कुलाबा मुंबई एवं प्रधान निदेशक, लेखा परीक्षा का कार्यालय, पश्चिम रेलवे, चर्चगेट, मुंबई को राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

बैठक में मध्य रेल, प्रधान कार्यालय, मुंबई सेंट्रल मंडल, पश्चिम रेलवे, मुंबई मंडल, मध्य रेल, भौतिक चिकित्सा एवं पुनर्वास संस्थान, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (नौसेना), प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-1, कर्मचारी राज्य बीमा आयोग, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड, प्रधान निदेशक, लेखा परीक्षा (नौवहन), मुंबई, वस्त्र आयुक्त कार्यालय, प्रधान महालेखाकार, लेखा परीक्षा-1, महानिदेशक, लेखा परीक्षा, मध्य रेल, अपर महानिदेशक, विदेश व्यापार कार्यालय आदि केंद्र सरकार के कार्यालयों के विभागाध्यक्ष एवं प्रतिनिधि शामिल हुए।■

# रेलवे में दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन

केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने तथा अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के दौरान आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के उद्देश्य से श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेल के संरक्षण और प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी, पश्चिम मध्य रेलवे, श्री अमरेन्द्र कुमार के मार्गदर्शन तथा निर्देशन में महाप्रबंधक कार्यालय के लेखा विभाग में कार्यरत कर्मचारियों के लिए दिनांक 3 जून, 2024 एवं 4 जून, 2024 को 'संघ की राजभाषा नीति एवं कार्यालयों/विभागों में राजभाषा हिंदी का सरल प्रयोग-प्रसार' विषय पर दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यशाला में लगभग 80 कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।■



# खेलों में भारतीय रेल

## भारतीय रेल के अधिकारी और प्रसिद्ध सर्जन डॉ. बी. एन. तिवारी ने तीसरा आयरनमैन खिताब हासिल किया




उत्तर रेलवे केंद्रीय अस्पताल, नई दिल्ली के अपर मुख्य स्वास्थ्य निदेशक, जीआई और एचपीबी ऑको सर्जन डॉ. बिश्वनाथ तिवारी ने प्रसिद्ध आयरन मैन हैम्बर्ग चैंपियनशिप 2024 में अपना तीसरा आयरनमैन खिताब हासिल करके एक बार फिर इतिहास रच दिया है। उन्होंने पहले भी दो बार आयरनमैन चैंपियनशिप पूरी करके उपलब्धि हासिल की है और अब तीसरी बार आयरन मैन चैंपियनशिप पूरी करके उन्होंने एक और शानदार उपलब्धि हासिल की है।

डॉ. तिवारी पहले भारतीय रेल अधिकारी और भारत के ऐसे पहले सर्जन हैं, जिन्होंने तीन आयरनमैन खिताब हासिल किए हैं। आयरनमैन चैंपियनशिप में 3.8 कि.मी. समुद्र में तैराकी, 180 कि.मी. साइकिलिंग और 42 कि.मी. की दौड़ शामिल होती है। डॉ. तिवारी ने अपने पिछले व्यक्तिगत रिकॉर्ड में सुधार करते हुए इस स्पर्धा को मात्र 12 घंटे और 58 मिनट में पूरा किया। उन्होंने यह उपलब्धि डेनमार्क में आयोजित पहली आयरनमैन चैंपियनशिप में बनाए गए अपने पिछले रिकॉर्ड से 7 मिनट कम समय में अर्जित की।

डॉ. तिवारी ने कहा कि समुद्र की लहरों और ठंडे पानी के विपरीत तैरना और हवा की गति के विपरीत साइकिल चलाना बहुत कठिन और चुनौतीपूर्ण था, लेकिन उन्होंने दृढ़ता से इस चैंपियनशिप को पूरा किया। उन्होंने अपनी आयरन मैन उपलब्धि भारतीय रेल और भारत के लोगों को समर्पित की है।■

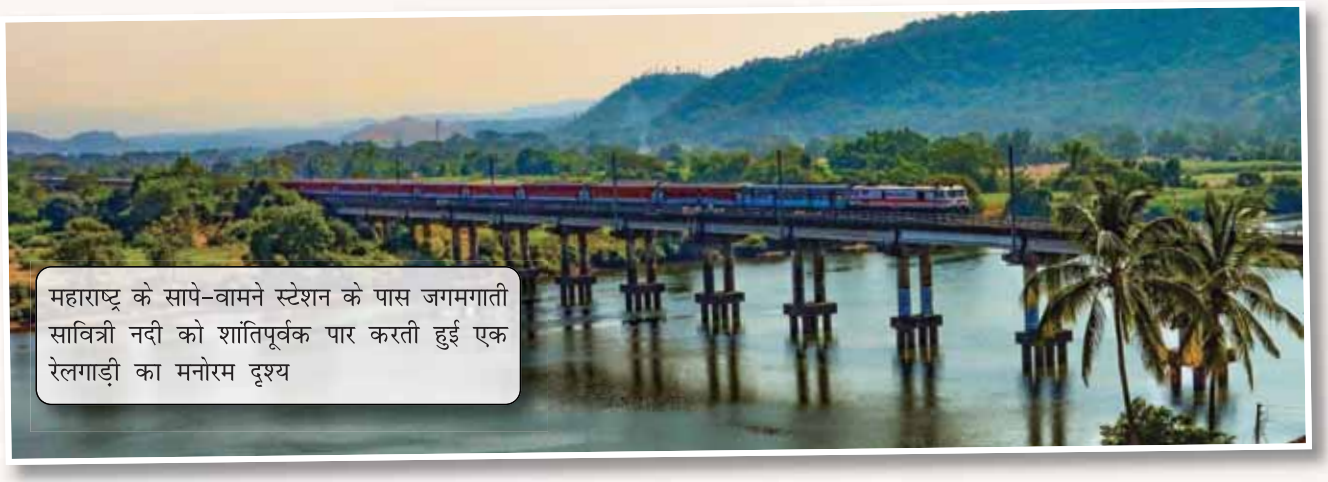
## पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी श्री सचिन शर्मा ने दक्षिण अफ्रीका में कॉमरेड्स मैराथन पूरी की



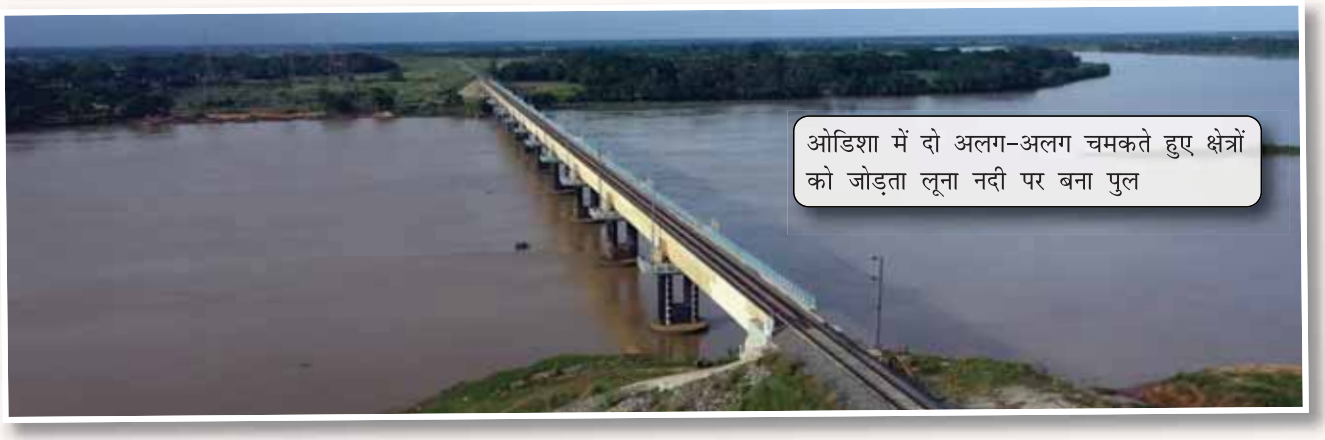

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक के सचिव श्री सचिन अशोक शर्मा ने हाल ही में दक्षिण अफ्रीका में समाप्त हुए कॉमरेड्स मैराथन 2024 में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। कॉमरेड्स मैराथन दुनिया की सबसे चुनौतीपूर्ण लंबी दूरी की दौड़ों में से एक है। श्री शर्मा ने दक्षिण अफ्रीका में डरबन से पीटरमैरिट्जबर्ग तक चलने वाली 86 कि.मी. की इस मैराथन को 11 घंटे और 24 मिनट में पूरा किया। कॉमरेड्स मैराथन, जिसे दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे कठिन मैराथन के रूप में जाना जाता है, में विभिन्न देशों के 20,000 धावकों ने भाग लिया, जिसने इसे दुनिया की सबसे बड़ी मैराथन बना दिया। 1921 में शुरू की गई इस ऐतिहासिक दौड़ में 1,800 मीटर की ऊंचाई के साथ एक कठिन चढ़ाई शामिल है।

पिछले कुछ वर्षों में श्री सचिन शर्मा ने कई खेलों जैसे 10 कि. मी. दौड़, हाफ और फुल मैराथन, अल्ट्रा मैराथन, ट्रायथलॉन में भाग लिया है। इनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं लद्दाख फुल मैराथन, टाटा मुंबई मैराथन, वसई-विरार मैराथन, टाटा अल्ट्रा (50 कि.मी.), कास अल्ट्रा (65 कि.मी.), खारदुंग ला चैलेंज (हाई एल्टीट्यूड में 72 कि.मी.), पुणे अल्ट्रा ट्रायल रन (100 कि.मी.), गोवा आयरनमैन (70.3 कि.मी.), बर्गमैन (113 कि.मी.), बर्गमैन ओलंपिक डिस्टेंस। उन्होंने ओपन सी स्विमिंग में भी भाग लिया और उसे पूरा किया है। सनक रॉक टू गेटवे (5 कि.मी.)-राष्ट्रीय स्तर, मालवन सी स्विमथॉन (3 कि.मी.)-राष्ट्रीय स्तर और जुहू सी स्विमथॉन (3 कि.मी.)-राज्य स्तर।■

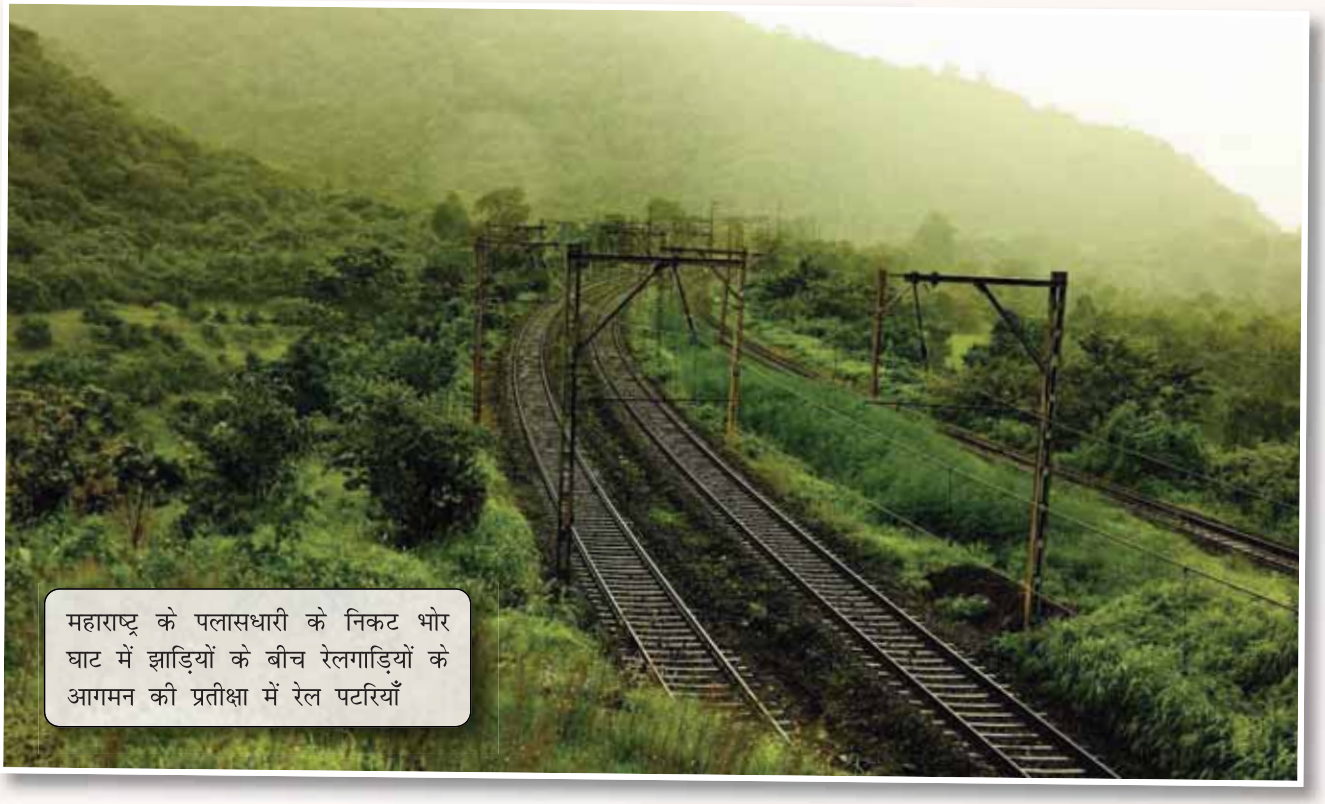
# तस्वीर दीर्घा



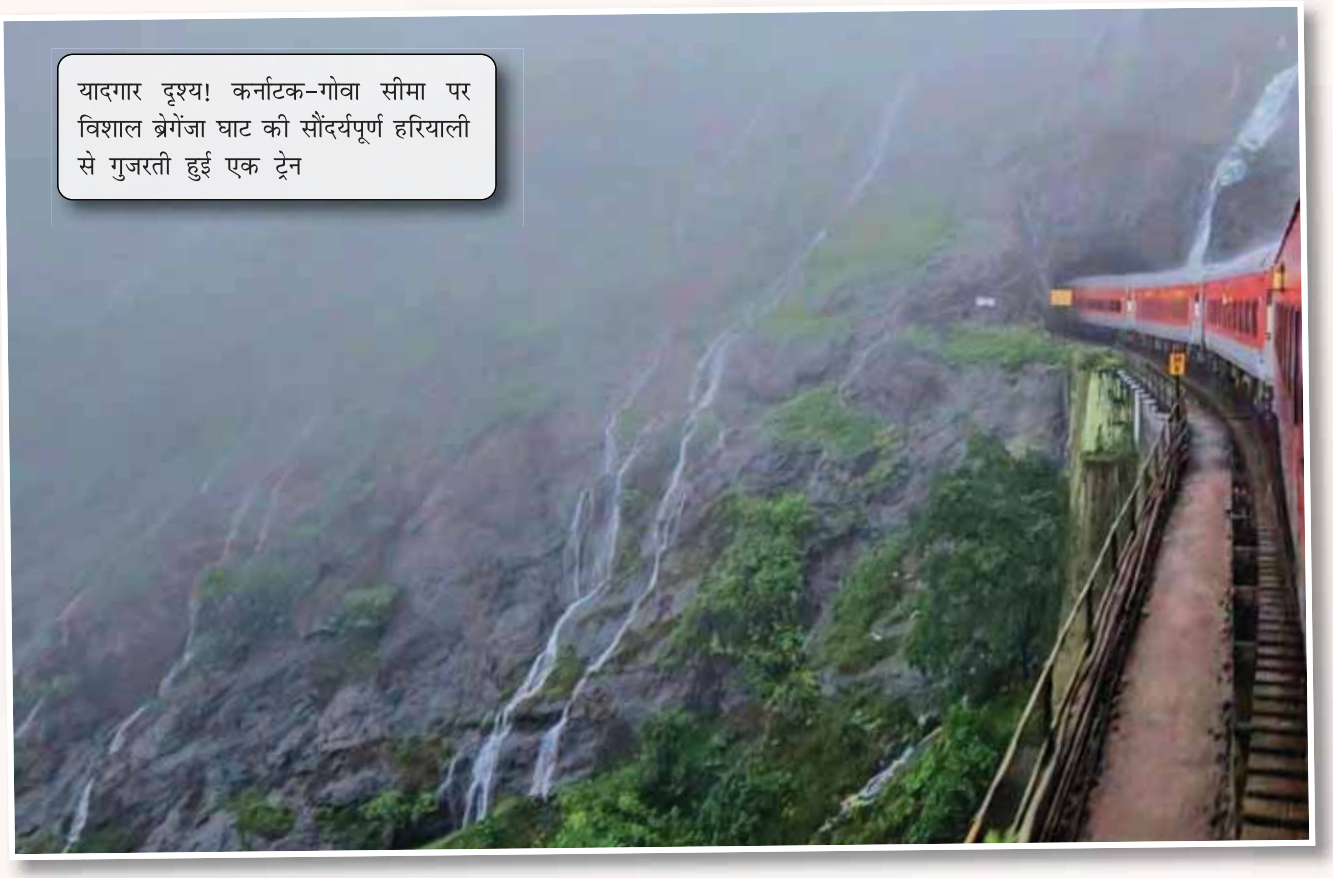
महाराष्ट्र के सापे-वामने स्टेशन के पास जगमगाती सावित्री नदी को शांतिपूर्वक पार करती हुई एक रेलगाड़ी का मनोरम दृश्य



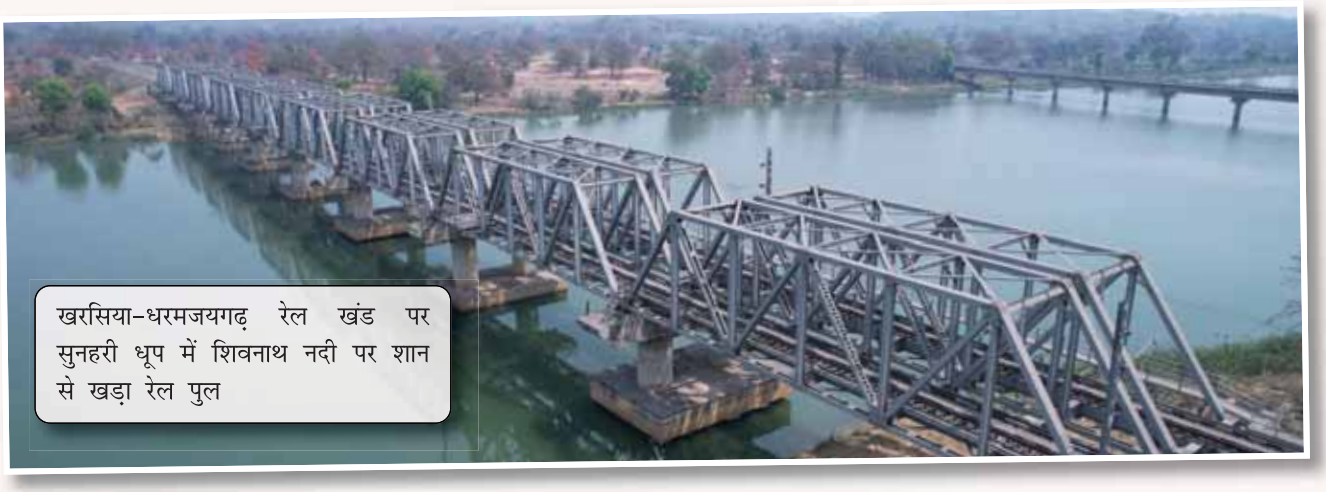
ओडिशा में दो अलग-अलग चमकते हुए क्षेत्रों को जोड़ता लूना नदी पर बना पुल



महाराष्ट्र के पलासधारी के निकट भोर घाट में झाड़ियों के बीच रेलगाड़ियों के आगमन की प्रतीक्षा में रेल पटरियाँ



यादगार दृश्य! कर्नाटक-गोवा सीमा पर विशाल ब्रेगेंजा घाट की सौंदर्यपूर्ण हरियाली से गुजरती हुई एक ट्रेन



खरसिया-धरमजयगढ़ रेल खंड पर सुनहरी धूप में शिवनाथ नदी पर शान से खड़ा रेल पुल



एक शांत और निर्मल सुबह में, पानी की शांति के साथ आलिंगन करता हुआ पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी में तीस्ता नदी पर बना रेल पुल



ओडिशा के नाराज मार्थापुर में घने हरे-भरे जंगल के बीच चपलता के साथ घूमती हुई एक रेलगाड़ी



अम्बर आकाश को विदा कहके गुजरात के कंसुधी रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ती हुई एक रेलगाड़ी



शांत जल में ट्रेनों के आगमन की प्रतीक्षा करता हुआ असम के जोगीघोपा में स्थित नरनारायण सेतु

# प्रगति रिपोर्ट

## गाँधीनगर रेलवे स्टेशन, जयपुर का पुनर्विकास



सभी 4 ट्रैक पर 25 गर्डर (36 मीटर लंबाई) लॉन्च किए गए।

- 200 कुशल रेल कर्मियों द्वारा यह जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य पूरा किया गया।
- विपरीत परिस्थितियाँ : 44 डिग्री सेल्सियस तापमान और क्रेन ऑपरेटरों के लिए शून्य दृश्यता।
- रिकॉर्ड 12 घंटे और 02 फॉलो अप ब्लॉक में पूरा किया गया।



13 जून, 2024

## विजयवाड़ा-गुदुर तीसरी रेल लाइन (288 कि.मी.) में तीव्र प्रगति





प्रगति : 233 कि.मी. रेल लाइन चालू की गई देश के उत्तरी और पूर्वी हिस्सों का दक्षिणी राज्यों के साथ संपर्क को मजबूत करना क्षेत्र में व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देना

26 जून, 2024

## मथुरा-झांसी तीसरी रेल लाइन परियोजना (274 कि.मी.)



कार्य प्रगति : 193 कि.मी. चालू

लाभ

- चंबल और बुंदेलखंड क्षेत्र में क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा मिलेगा
- ट्रेनों की औसत गति में वृद्धि होगी



23 जून, 2024

## काजीपेट-बल्हारशाह तिहरीकरण और विद्युतीकरण (202 कि.मी.) की अद्यतन स्थिति





25 जून, 2024

कार्य प्रगति : 151 कि.मी. चालू

पूरा होने पर, तिहरीकरण से भीड़भाड़ कम होगी और महाराष्ट्र और तेलंगाना के बीच निर्बाध माल और यात्री परिवहन सुनिश्चित होगा, जिससे कोयला और सीमेंट परिवहन में सहायता मिलेगी।

## खड़गपुर-आदित्यपुर तीसरी लाइन परियोजना (132 कि.मी.)





2 जुलाई, 2024

प्रगति : 121.5 कि.मी. रेल लाइन चालू हो चुकी है यह परियोजना पूरी होने पर, कच्चे माल और तैयार उत्पादों को परिवहन के माध्यम से हावड़ा-मुंबई ट्रंक रूट पर स्थित इस्पात और बिजली संयंत्रों को लाभान्वित करने के साथ-साथ इस व्यस्त खंड की परिचालन क्षमता को बढ़ाएगी।

रेल पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा
विगत 67 वर्षों से भी
अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं

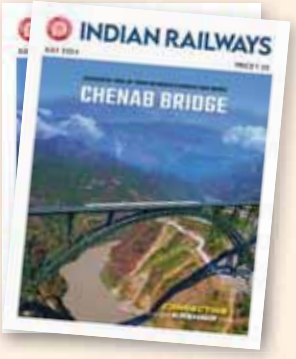
अब
ई-पत्रिका
भी उपलब्ध




भारतीय रेल
( हिन्दी )

की सदस्यता अब
ऑनलाइन
भी उपलब्ध

विज़िट करें




Indian Railways
(English)

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home

दरें एवं शर्तें लागू

## यात्रियों के लिए पुस्तकालय



पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए बुरहानपुर और शेगांव रेलवे स्टेशनों पर अतिरिक्त सुविधा के रूप में 2 बुक-हाउस स्थापित किए गए। जलगांव, खंडवा, भुसावल और नासिक रोड रेलवे स्टेशनों पर भी बुक-हाउस चल रहे हैं, जो यात्रियों को कई भाषाओं में किताबें उपलब्ध कराते हैं।

## उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर रेलवे स्टेशन परिसर में रेल कोच रेस्टोरेंट का उद्घाटन




उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर रेलवे स्टेशन परिसर में रेल कोच रेस्टोरेंट का उद्घाटन किया गया। इस रेल कोच रेस्टोरेंट में स्थानीय निवासी और रेल यात्री स्वादिष्ट भोजन का आनंद ले सकेंगे।

# एक रेल–एक सिगनलिंग : मानकीकरण तथा स्वचालन के साथ भारतीय रेल की छिपी क्षमता का प्रदर्शन

**श्री रजनीश गुप्ता**
कार्यकारी निदेशक, सिगनल,
आरडीएसओ, लखनऊ

**श्री अमित मिश्रा**
कार्यकारी निदेशक, सिगनल–1,
आरडीएसओ, लखनऊ

**श्री राजेंद्र धम्बेल**
पूर्व प्रधान कार्यकारी निदेशक, एस एंड टी,
आरडीएसओ, लखनऊ

**सारांश :** आरडीएसओ एक वैश्विक रूप से मान्यता प्राप्त संगठन है जिसने दुनिया के चौथे सबसे बड़े रेल नेटवर्क को सफलतापूर्वक मानकीकृत किया है। विभिन्न तकनीकों को कुशलतापूर्वक एकीकृत करके उन्होंने स्केल की अर्थव्यवस्था, एकरूपता और कम ऑपरेटिंग, रखरखाव और उत्पादन लागत हासिल की है। वर्षों से, भारतीय रेल सिगनलिंग विभाग ने सिगनल इंजीनियरिंग मैनुअल और निर्देशों का उपयोग करके अपने अभ्यास और आदर्शों को मानकीकृत करने के लिए बड़े प्रयास किए हैं, जिससे एकसमता, रखरखाव की सुविधा और अधिकतम स्थापना, गुणवत्ता हासिल हुई है, हालांकि सिगनल डिजाइन और ड्राइंग के एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र की अवहेलना की गई है, जिससे एक ही इंटरलॉकिंग सिद्धांत का पालन करने वाली बिना मानकीकृत प्रथाओं की वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप समय पर और उच्च गुणवत्ता वाली परियोजना के निष्पादन, कुशल मानव संसाधन के विकास तथा इन–हाउस संशोधनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, जिससे स्वचालन में तकनीकों के उपयोग में बाधा हुई है। भारत के 'विकास का इंजन' बनने और 'गति शक्ति' राष्ट्रीय मिशन को पूरा करने की दिशा में, मानकीकरण उस सपने को साकार करने की कुंजी है। इस अध्ययन का उद्देश्य इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे का समाधान करने के लिए कारणों, बाधाओं, पहलों और भविष्य के कार्यों के रूप में जाँच करना है।

## एक रेलवे–एक सिगनलिंग

रेल परिवहन, परिवहन का सबसे अधिक लागत प्रभावी, सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल साधन है। प्रत्येक वर्ष भारतीय रेल (आईआर) पूरे भारत में 8 अरब से अधिक लोगों को यात्रा कराती है, जो लगातार बढ़ रही है। कोविड महामारी के दौरान, भारतीय रेल के अथक प्रयासों ने पूरे देश में निर्बाध आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित की। इस प्रकार, इसने स्वयं को 'राष्ट्र की जीवन रेखा' या 'विकास का इंजन' होने का दावा किया। रसद और आपूर्ति श्रृंखला की लागत वर्तमान में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 12% है, जबकि वैश्विक स्तर पर यह 8% है, जिसका कारण सड़क परिवहन पर देश की अत्यधिक निर्भरता है। इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे को हल करने के लिए, भारतीय रेल ने प्रधानमंत्री के गतिशक्ति मिशन के साथ संबद्ध होकर वित्त वर्ष 2022–23 में ₹2,15,058 करोड़ के बड़े पूंजीगत व्यय की योजना बनाई है। इस राष्ट्रीय मिशन और विजन को प्राप्त करने के लिए तीव्र और उच्च गुणवत्ता वाली परियोजना का निष्पादन महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

अनुसंधान, अभिकल्प और मानक संगठन (आरडीएसओ) ने भारतीय रेल में प्रौद्योगिकियों का मानकीकरण करके और उनके निर्बाध कार्यान्वयन को सुनिश्चित करके दुनिया में अग्रणी भूमिका निभाई। एक सुविचारित नीति के माध्यम से इसने पैमाने की अर्थव्यवस्था, एकरूपता और कम परिचालन, रखरखाव और उत्पादन लागत की अर्थव्यवस्था प्राप्त की। सम्पूर्ण विश्व में, EN, IEC और IS जैसे समान मानकों ने निर्माताओं को अपने उत्पादों को मार्केट में लाते समय कुछ मानदंडों का पालन करने की आवश्यकता के द्वारा उत्पाद की एकरूपता और गुणवत्ता को बनाए रखने में योगदान दिया है। यूरोपीय संघ (EU) के एकीकरण के बाद ही, यूरोपीय संघ ने सम्पूर्ण (यूरोपीय संघ) ईयू के मानकीकरण पर जोर दिया, जैसा कि ETCS जैसी समान प्रौद्योगिकियों और प्रोटोकॉल को अपनाने तथा हाल ही में पेश किए गए EULYNX प्रोटोकॉल से प्रमाणित है। चाइनीज रेलवे ने भी 'बुद्धिमत्ता, एकीकरण, मानकीकरण और खुलेपन' के अपने मिशन को पूरा करने के लिए अपने नेटवर्क में मानकीकरण का सफलतापूर्वक लाभ उठाया है। इसने उन्हें आगे बढ़ाने के लिए कार्यान्वयन लागत को कम रखते हुए नई प्रौद्योगिकियों को निर्बाध रूप से एकीकृत करने में सुविधा प्रदान की है।

मानकीकरण की प्रक्रिया में अभियांत्रिकी के मानदंड, सिद्धांत तथा क्रियाविधियों के साझा समझौते को स्थापित करने हेतु सामान्य तकनीकी, मानकों को विकसित करना तथा लागू करना शामिल है। ये मानक संगठनों को प्रक्रियाओं का एक सेट प्रदान करते हैं, जो योग्य व्यक्तियों द्वारा उचित उपकरणों और विधियों का उपयोग करके उन्हें प्रभावी और कुशल सिस्टम इंजीनियरिंग करने में सक्षम बनाते हैं। वे अपेक्षित कार्यों और परिणामों को परिभाषित करके वर्णन करते हैं कि आवश्यक इनपुट और आउटपुट उत्पन्न करने के लिए प्रक्रियाएँ और कार्य कैसे परस्पर क्रिया करते हैं। तकनीकी विशिष्टियाँ या अन्य सटीक मानदंड मानक निर्मित करते हैं, जो आउटपुट की स्थिरता, उत्पादन दक्षता, सिस्टम की कम जटिलता, कम संचालन

समय और किसी विशेष कार्य के लिए योग्य कर्मियों का तीव्र विकास जैसे कई लाभ प्रदान करते हैं। मानकीकरण स्वचालन की दिशा में प्रथम चरण के रूप में भी कार्य करता है, जो एक स्वचालित SIL2/SIL4 उपकरण के निर्माण को सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, यह डिजाइन सुधार पर ध्यान केंद्रित करने के लिए उत्कृष्टता के केंद्र स्थापित करने की अनुमति देता है और नई नीतियों या डिजाइनों को व्यवहार में लाने की एक सरल, तीव्र प्रक्रिया प्रदान करता है।

भारतीय रेल ने सुरक्षा, दक्षता और लागत प्रभावशीलता में सुधार के प्रयास में सिगनलिंग सिद्धांतों को मानकीकृत करने के लिए 1955 से, सिगनलिंग इंजीनियरी मैनुअल (SEM) का उपयोग किया है। इसके अलावा, इसने भारतीय रेल को अपनी सिगनलिंग प्रणाली को आधुनिक बनाकर 'सुरक्षा, संरक्षा और नियमितता' के लक्ष्य को प्राप्त करने में सुविधा प्रदान की। भारतीय रेल यात्री सुरक्षा और आरामदायक बनाने के लिए रेलगाड़ियों के बेहतर प्रबंधन और नियंत्रण हेतु सिस्टम और प्रौद्योगिकी को एकीकृत करके डिजिटल बन रही है। भारतीय रेल की सिगनलिंग प्रणाली तेजी से एनालॉग से डिजिटल की ओर बढ़ रही है, जिसके लिए मानकीकरण की आवश्यकता है। ड्राइंग का मानकीकरण स्वचालन, उत्पादकता और परियोजना वितरण समय में सुधार की दिशा में पहला कदम है। भारतीय रेल सिगनलिंग समान नीतियों और SEM जैसे मैनुअल के माध्यम से अपने उत्पादों को मानकीकृत करने में काफी हद तक सफल रही, हालाँकि एस एंड टी ड्राइंग को मानकीकृत करने के लिए दिशानिर्देश अपर्याप्त रहे। इसके अलावा, क्षेत्रीय रेलों की अपनी प्राथमिकताओं और प्रणालियों के आधार पर सिगनलिंग कार्यों के लिए अपनी स्वयं की नामकरण परम्पराएँ होती हैं। इस वजह से, भारतीय रेल में अब लगभग 72 विभिन्न प्रकार के इंटरफेस सर्किट और 150 विभिन्न प्रकार के एप्लिकेशन लॉजिक्स हैं, जो परियोजनाओं के समय पर पूरा होने में बाधा डालते हैं। चूंकि संपूर्ण भारतीय रेल का प्राथमिक उद्देश्य 'सुरक्षा' है, इसलिए त्वरित और गुणवत्तापूर्ण परियोजना निष्पादन की चुनौतियों पर नियंत्रण पाने के लिए डिजाइन और ड्राइंग प्रणाली को मानकीकृत करना आवश्यक है। यह अध्ययन डिजाइन और ड्राइंग की तैयारी से जुड़े वर्तमान मुद्दों, उनसे जुड़ी चुनौतियों और अंत में, उन बाधाओं पर काबू पाने की पद्धति पर प्रकाश डालता है।

## भारतीय रेल के लिए सिगनलिंग डिजाइन और ड्राइंग में चुनौतियाँ

सिगनलिंग प्रणाली रेल प्रणाली का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है जो सुरक्षित यात्रा को सुनिश्चित करती है और प्रणाली की समग्र क्षमता में सुधार करती है। सिगनलिंग प्रणालियों को गंभीर तथा विकसित करने में कठिनाई होने के प्रमुख कारणों में से एक कारण यह है कि उन्हें संबंधित कार्यात्मक सुरक्षा मानकों जैसे कि EN 50128, EN 50126, और EN 50129 की सिफारिशों का पालन करना होता है। रेलवे इंटरलॉकिंग सिस्टम को EN 50126 और IEC 61508 मानकों पर आधारित SIL-4 के साथ सुरक्षा महत्त्वपूर्ण प्रणालियों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। रेलवे इंटरलॉकिंग सिस्टम के कार्यात्मक विशिष्टियों को सिगनलिंग इंटरलॉकिंग प्लान (एसआईपी) और इंटरलॉकिंग कंट्रोल टेबल (या नियंत्रण तालिका) (टीओसी) में परिभाषित किया गया है। वे उन शर्तों के बारे में बताते हैं, जिन्हें रेलवे लाइनों या स्टेशनों पर ट्रेन ले जाने से पहले पूरा किया जाना चाहिए। टीओसी इंटरलॉकिंग डिजाइनरों हेतु इंटरलॉकिंग डिजाइन विशिष्टि और परीक्षकों हेतु परीक्षण विशिष्टि दोनों के रूप में कार्य करता है। ये तालिकाएँ इंटरलॉकिंग सिस्टम की महत्त्वपूर्ण कार्यात्मक सुरक्षा आवश्यकताओं का सार प्रस्तुत करती हैं। रेलवे एसआईपी और टीओसी का उपयोग करके सिगनलिंग सर्किट के लिए एप्लिकेशन लॉजिक डिजाइन करता है। इन एसआईपी और टीओसी को विकसित करने की प्रक्रिया, विशेष रूप से मध्यम से बड़े पैमाने के स्टेशनों हेतु अधिक श्रम, अधिक समय तथा विशेष कौशल की आवश्यकता होती है। वर्तमान में, प्रक्रिया पूरी तरह से मैनुअल है। स्पष्ट है, यह इंटरलॉकिंग सिस्टम डिजाइन प्रक्रिया के दौरान मानवीय त्रुटि का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत हो सकता है। चित्र- 1 यार्ड कमीशनिंग से जुड़ी डिजाइन और ड्राइंग प्रक्रिया के लिए एक विशिष्ट कार्य प्रवाह को दर्शाता है। यदि दस्तावेज तैयार करने के इन चरणों में से कोई भी परिवर्तन किया जाता है तो प्रक्रिया दोहराई जाती है।




*चित्र- 1*

सिगनलिंग योजना सुरक्षा संबंधी दस्तावेजों का एक जटिल सेट है जिसे तैयार करने, सत्यापित करने और मान्य करने के लिए उच्च स्तर की तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, हाल के दिनों में विशिष्ट कार्यों की मैन्युअल प्रोसेसिंग और विभिन्न परियोजनाओं के अत्यधिक कार्यभार के कारण, डी एंड डी विभाग में कर्मचारियों की भारी कमी हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर काम की अधिकता हो गई है। कर्मचारियों की भारी कमी और काम की प्रकृति के कारण परियोजनाओं में अक्सर देरी होती है। एसआईपी, टीओसी और आईएफएटी के साथ एप्लिकेशन लॉजिक जैसे इन महत्त्वपूर्ण

दस्तावेजों को तैयार करने के लिए आवश्यक विशिष्ट कार्य दिवस जैसा कि चित्र-1 में दिया गया हैं, जो 500 मार्गों से अधिक संख्या बढ़ने पर काफी बढ़ जाता है।




*चित्र- 2*

किसी प्रोजेक्ट के निष्पादन के दौरान, एसआईपी और टीओसी में किए गए बदलाव से प्रोजेक्ट में देरी हो सकती है। इसके अतिरिक्त, अंतिम कमीशनिंग चरण के दौरान सीआरएस सिफारिशों के कारण देरी हो सकती है या परीक्षण के अपर्याप्त परिणाम हो सकते हैं। इन परिवर्तनों को समायोजित करने के लिए, परियोजना की समय सीमा से अक्सर समझौता किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप लागत में वृद्धि, योजना विफलताएँ तथा परियोजनाओं का समूहन होता है। ये बाधाएँ अंतिम आउटपुट की गुणवत्ता से भी समझौता कर सकती हैं, क्योंकि महत्त्वपूर्ण अंतिम चरण में गुणात्मक मुद्दों की खोज के साथ अंतिम परिणाम की गुणवत्ता से भी समझौता, लंबे समय तक उपेक्षित रह सकती है।

डी एंड डी दस्तावेज तैयार करने में कई विशिष्ट चुनौतियाँ आती हैं जो परिवर्तनों को प्रभावित करती हैं, जिससे तैयारी के दौरान उचित देखभाल की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, एक क्षेत्रीय रेल से दूसरे क्षेत्रीय रेलों के इनपुट भिन्न होने के कारण तथा परिणामस्वरूप 72 प्रकार के इंटरफेस सर्किट पैटर्न और 150 प्रकार के एप्लिकेशन लॉजिक पैटर्न सहित कई क्षेत्रीय/मंडलीय/उप-मंडलीय प्रणालियाँ स्वचालन के लिए इनपुट की तैयारी को जटिल बना सकती हैं। इसके अतिरिक्त, समय की कमी के कारण अस्वीकृत एसआईपी/आरसीसी इनपुट के साथ डिजाइन प्रक्रिया शुरू हो सकती है, जो अनुमोदन प्रक्रिया के दौरान कई संशोधनों के अधीन होती हैं, जिसके लिए अतिरिक्त डिजाइन कार्य की आवश्यकता होती है।

यहाँ तक कि स्वीकृत इनपुट, जैसे एसआईपी और टीओसी, को सीआरएस या अन्य एजेंसियों की टिप्पणियों के कारण अंतिम समय में संशोधित किया जा सकता है, जिससे डिजाइन में देरी होती है और अतिरिक्त प्रयास और समय की आवश्यकता होती है। अंत में, क्षेत्रीय/मंडलीय या डी एंड डी पदाधिकारियों की अलिखित नीतियाँ और प्रणालियाँ भी डिजाइन कार्यान्वयन प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं। डी एंड डी दस्तावेज तैयार करने में कुछ विशिष्ट चुनौतियाँ नीचे दी गई हैं, जो परिवर्तनों को प्रभावित करती हैं, जिन्हें तैयार करते समय उचित देखभाल की आवश्यकता होती है -

## एसआईपी में बार-बार होने वाले बदलावों को प्रभावित करने वाले सामान्य डिजाइन तत्व

1. सिगनलिंग गियर जोड़ना/हटाना/नाम बदलना
2. सिगनल की स्थिति बदलना
3. क्रैंक हैंडल समूह परिवर्तन
4. लेवल क्रॉसिंग नियंत्रण (जोड़ना/हटाना)
5. अनियंत्रित सिगनलिंग गियर स्कोप परिवर्तन
6. आस्पेक्ट कंट्रोल परिवर्तन
7. ब्लॉक उपकरण परिवर्तन (UFSBI, SGE आदि)
8. बीपीएसी परिवर्तन (HASSDAC/MSDAC)
9. क्रमिक परिवर्तन

## टीओसी में अक्सर होने वाले बदलावों को प्रभावित करने वाले सामान्य डिजाइन तत्व

1. मार्गों की संख्या को अंतिम रूप देना
2. कनवर्स लॉकिंग क्लेरिफिकेशन
3. बैक शंट/शॉर्ट शंट मूवमेंट को अंतिम रूप देना
4. लंबे समय तक रुकने वाली रेलगाड़ी की आवाजाही
5. लेवल क्रॉस नियंत्रण सीमाएँ
6. कप आकार की गतिविधियों का अभ्यास/संदर्भ परिवर्तन
7. यार्ड फ्लेक्सिबिलिटी हेतु कंडीशनल लॉकिंग

## सेक्शनल रूट रिलीज टेबल हेतु अक्सर होने वाले परिवर्तनों को प्रभावित करने वाले सामान्य डिजाइन तत्व

1. SRR तालिका तैयार करने की विधि (रूट वाइज या सेक्शन वाइज)
2. यार्ड फ्लेक्सिबिलिटी को प्राप्त करने के लिए सेक्शनों (सेक्शन के लिए एकाधिक रेलपथ का समूहन) को व्यक्तिगत दृष्टिकोण के आधार पर बदला जा रहा है। सेक्शनों के आवंटन के लिए कोई ठोस मानक नहीं।
3. SIP/SM स्थिति के अनुसार डिजाइन

## डिजाइन दस्तावेज में अन्य चुनौतियाँ

1. वीडीयू स्क्रीन रिजॉल्यूशन में परिवर्तन/साइट की आवश्यकताओं के अनुसार आकार परिवर्तन (2के, 4के और एकाधिक 4के)
2. एक्सिल काउंटर रीसेट फंक्शन (हार्ड पैनल/वीडीयू)
3. साइट की आवश्यकता और मानक अभ्यास में मेल ना होने के कारण बाद के चरणों में बदलाव हो सकते हैं।
4. विभिन्न प्रकार के रिले नामकरण।
5. ब्लॉक कार्य आवश्यकता की विविधता।
6. विभिन्न प्रकार के सिगनल एवं लाइटिंग सर्किट

## एप्लिकेशन डेटा डिजाइन में मानकीकरण तथा स्वचालन एवं इसका महत्त्व

एप्लिकेशन डेटा डिजाइन का मानकीकरण, रेल डिजाइन प्रक्रियाओं की दक्षता और प्रभावशीलता में सुधार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मैन्युअल अनुमोदन प्रक्रियाओं के त्वरित बदलाव एवं वितरण को सक्षम बनाता है, जिसके परिणामस्वरूप शीघ्र अनुमोदन प्रक्रिया होती है। मानकीकरण औपचारिक तरीकों के माध्यम से वैधीकरण और सत्यापन की भी अनुमति देता है, जिससे समझ में सुधार होता है तथा रखरखाव में आसानी होती है। मानकीकरण के माध्यम से आरडीएसओ रिले लॉजिक मानकों के अनुरूपता और सुरक्षा सिद्धांतों के संबंध में इंटरलॉकिंग लॉजिक का सत्यापन भी सुनिश्चित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, यह यार्ड वर्किंग के सिमुलेशन और विजुआलाइजेशन, कारखाने हेतु परीक्षण योजनाओं को बनाने तथा साइट एक्सेप्टेंस टेस्ट को सक्षम बनाता है। कुल मिलाकर, मानकीकरण से डिजाइन की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में सुधार होता है, लागत कम होती है, सुरक्षा बढ़ती है और इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि स्वचालन का मार्ग प्रशस्त होता है।

21वीं सदी की सफलता का श्रेय स्वचालन को दिया जाता है। मानकीकरण के आधार पर मैन्युअल दोहराए जाने वाले कार्यों के स्वचालन से उत्पादकता में वृद्धि, मानव और सामग्री का अधिक कुशल उपयोग, बेहतर गुणवत्ता, बेहतर सुरक्षा और वितरण अवधि में कमी आती है। मनुष्यों द्वारा अच्छे कामकाज से उच्च गुणवत्ता के दावों के बावजूद, स्वचालित सिस्टम आमतौर पर मानव श्रमिकों की तुलना में कम परिवर्तनशीलता के साथ निर्माण प्रक्रिया को निष्पादित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उत्पाद की गुणवत्ता पर अधिक नियंत्रण और स्थिरता होती है। इसके अतिरिक्त, स्वचालन कुशल परिवर्तन, अनुरोध प्रबंधन, परियोजना में विलंब का न्यूनतम जोखिम, सिस्टम आवश्यकताओं का वैधीकरण, स्वचालित सुरक्षा वैधीकरण, सुव्यवस्थित विकास प्रक्रिया और सरलीकृत रखरखाव व उन्नयन जैसे लाभ प्रदान करता है।

नतीजतन, विशिष्ट यार्ड लेआउट और अन्य डी एंड डी प्रेक्टिसेस के मानकीकरण से सीआरएस को बहुत अधिक बदलाव के सुझावों के बिना योजनाओं की तेजी से जाँच करने में मदद मिलेगी। एप्लिकेशन डिजाइन की जटिलता के कारण, भारतीय रेल आमतौर पर और भी सरल यार्ड संशोधन के लिए OEM पर निर्भर होता है। स्वचालन के साथ मानकीकरण, रेलवे को आत्मनिर्भर बनाएगा और यार्ड संशोधनों में तेजी लाएगा।

## डिजाइन एवं ड्राइंग में मानकीकरण लागू करने हेतु कार्य योजना

### इंटरफेस सर्किट (उपकरणों का उपयोग किए बिना भी 30 से 40% समय कम करने के लिए)

- विवरण को तेज बनाने के लिए सर्किट की शीट संख्याओं को मानकीकृत किया गया।
- भारतीय रेल में ब्लॉक सर्किट सहित प्रत्येक सर्किट को मानकीकृत किया जाएगा।
- 4 रोड स्टेशनों तक, बिट स्थिति और रिले स्थिति को यथासंभव अधिकतम मानकीकृत किया जाएगा।
- केबल की सीटी रैक समाप्ति और केबल के प्रकार को मानकीकृत किया जाएगा।
- सिस्टम कॉन्फिग्रेशन और स्विच को मानकीकृत किया जाएगा।
- प्रत्येक सर्किट के लिए रिले संपर्कों को मानकीकृत किया जाएगा।

### अनुप्रयोग तर्क (30 से 40% समय कम करने के लिए)

- भारतीय रेल में प्रत्येक सर्किट और कॉन्टैक्ट मानकीकृत साबित हो रहा है। इसे न्यूनतम 100 रूट स्टेशनों पर लागू करना अनिवार्य होना चाहिए।
- एप्लिकेशन लॉजिक संरचना को ओईएम द्वारा मानकीकृत किया जाएगा।
- आसान सत्यापन के लिए आरसीसी लाइन के अनुसार प्रत्येक मार्ग को कांटैक्ट साबित करना चाहिए।
- अधिक समानांतर सर्किट से बचने के लिए प्रत्येक मार्ग का अपना यूसीआर और एचआर होना चाहिए एवं अंत में एकाधिक मार्गों वाले सिगनलों के लिए एक सामान्य यूसीआर/एचआर चुना जाना चाहिए।
- स्टिक पाथ और एएसआर सर्किट को छोड़कर, तेजी से सत्यापन के लिए समानांतर पथ से बचा जाना चाहिए।

### स्वचालन के क्षेत्र

सिगनलिंग प्रणालियाँ स्वचालित कम्प्यूटरीकृत परीक्षण हेतु उत्तरदायी हैं, क्योंकि गतिविधियों का क्रम सटीक और दोहराव वाला है; परिणाम पूर्वानुमानित है।

1. सिगनल इंटरलॉकिंग योजना, नियंत्रण तालिका, एप्लिकेशन लॉजिक आदि जैसे सिगनलिंग योजनाओं के डिजाइन और ड्राइंग दस्तावेज का स्वचालन।

2. सिस्टम इंटिग्रिटी टेस्ट प्लान की तैयारी में स्वचालन और सिस्टम इंटिग्रिटी का सत्यापन एवं वैधीकरण।

3. फैक्ट्री एक्सेप्टेंस टेस्टिंग (एफएटी) और साइट एक्सेप्टेंस टेस्टिंग (एसएटी) में स्वचालन।

### मानकीकरण और स्वचालन के लिए भारतीय रेल की पहल

उपरोक्त चुनौतियों के कारण भारतीय रेल ने पिछले दशक में उपरोक्त मुद्दों के समाधान पर ध्यान केंद्रित किया। वर्ष 2018 में, रेल बोर्ड ने दो अलग-अलग समितियों का गठन किया –

(i) ड्राइंग्स का मानकीकरण-सिगनलिंग योजनाएँ, नियंत्रण तालिकाएँ, स्कीम प्लान और संस्करण नियंत्रण अवधारणाएँ।

(ii) विशिष्ट इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सर्किट को अंतिम रूप देना

प्रमुख रेलों की ड्राइंग प्रथाओं के आधार पर, 'ड्राइंग के मानकीकरण' के लिए समिति ने वर्ष 2019 में 'ड्राइंग का मानकीकरण वर्जन

2.0' पुस्तिका प्रकाशित की जो रेलनेट पर url http://10.195.2.19/iriweb/wiki/LearningResource उपलब्ध है। यह रिपोर्ट सिगनलिंग योजनाओं, संबंधित तालिकाओं, नोट्स और प्रतीकों को मानक इंटरलॉकिंग टेबल, वीडीयू आरेख को तैयार करने में सभी रेलों द्वारा अपनाए जाने वाले सामान्य मानकों और संस्करण नियंत्रण एवं स्कीम प्लान्स की शुरुआत करने के बारे में विस्तार से बताती है। इसी तरह, विशिष्ट इलेक्ट्रॉनिक सर्किट पर दूसरी समिति ने दूसरी रिपोर्ट जारी की है।

## आरडीएसओ और भारतीय रेल आईएसईटी द्वारा निम्नलिखित मानकीकरण योजनाएँ प्रस्तुत की गई हैं

1. सिगनल योजना को लेआउट, सिगनलिंग विवरण के साथ-साथ अन्य संबंधित जानकारी के साथ मानकीकृत किया गया है जिसमें मुख्य सिगनल, ट्रेन का पता लगाना, ग्रेडिएंट, प्रतीक, नंबरिंग शामिल हैं। इसके अलावा इसमें उनकी संशोधन प्रक्रिया, अद्यतन और अनुमोदन प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया गया है।

2. इंटरलॉकिंग कंट्रोल टेबल या टीओसी को मानकीकृत किया गया है।

3. इसमें दस्तावेज रखरखाव और उनके संस्करण नियंत्रण उपायों को परिभाषित किया गया है। विवरण इस तरह से दिया गया है कि प्रत्येक दस्तावेज और उनके बाद के संशोधनों को विशिष्ट रूप से पहचाना जा सके।

4. इंटरफेस और आंतरिक दोनों प्रकार के रिले और उनके नामकरण को मानकीकृत किया गया।

5. सिगनलिंग योजनाओं के साथ-साथ वीडीयू पैनल के लिए सिगनल कार्यों को मानकीकृत किया गया है।

6. वीडीयू मेनू कमांड के साथ-साथ वीडीयू लेआउट को मानकीकृत किया गया है।

7. सिगनलिंग योजना के साथ-साथ वीडीयू पैनल के लिए सिगनल, विभिन्न बोर्ड, संचालन स्थान, ग्रेडिएंट, संकेतक, एलसी गेट, ट्रैक सर्किट, प्वाइंट लाइनों के लिए प्रतीक मानकीकृत किए गए हैं।

आरडीएसओ ने ट्रेन ऑपरेशन कंट्रोल (टीओसी) और एप्लिकेशन लॉजिक सहित रेलवे सिगनलिंग सिस्टम के डिजाइन में सहायता के लिए तकनीकों और उपकरणों का एक सेट विकसित किया है। रेलवे यार्ड को एक लेआउट एडिटर (एलईवेब) का उपयोग करके कैप्चर किया जाता है, जो स्वचालित रूप से मार्गों, अवरोधों, अलगाव आवश्यकताओं और सिस्टम के अन्य पहलुओं की पहचान करता है। इस जानकारी का उपयोग रूट कंट्रोल चार्ट (आरसीसी) बनाने के लिए किया जाता है, जिसका उपयोग इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग उपकरण के लिए रिले लॉजिक एक्सप्रेशन उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त, आरडीएसओ विकास के पश्चात इन स्वचालन उपकरणों के नियमित उपयोग हेतु एसआईएल-2 प्रमाणन प्राप्त करने की योजना बना रहा है।

**निष्कर्ष :** भारत का रेलवे उद्योग महत्त्वपूर्ण विकास के कगार पर है, जो प्रधानमंत्री के मिशन गतिशक्ति के तत्वावधान में प्रगति के लिए देश की महत्त्वाकांक्षी दृष्टि से प्रेरित है, हालाँकि इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, गुणवत्ता बढ़ाने, लागत कम करने और समय कम करने के साथ-साथ परियोजना निष्पादन में तेजी लाने की अत्यंत आवश्यकता है, जबकि भारतीय रेल ने पहले ही मानकीकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है, इन रूपरेखाओं को सार्थक कार्रवाई में बदलना एक महत्त्वपूर्ण अनिवार्यता बनी हुई है। प्रभावी कार्यान्वयन सभी क्षेत्रीय और मंडलीय रेलों को एक साझा मंच पर लाने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान करता है, जिससे पूरे उद्योग जगत में अधिक सुसंगतता, स्थिरता और उत्पादकता की सुविधा मिलती है। यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि मानकीकृत करना एक बार का कार्य नहीं है, बल्कि यह एक सतत प्रक्रिया है, जिसके लिए डिजाइन हेतु उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना की आवश्यकता होती है, जो इस तेजी से बदलते क्षेत्र से जुड़ी जटिल और उभरती चुनौतियों का समाधान कर सके। अंततः मानकीकरण तकनीकी विकास के रास्ते खोलने और भारत के रेल उद्योग की पूरी क्षमता को साकार करने की कुंजी है।

मानकीकृत डिजाइन सिद्धांतों के विकास से पहले ही महत्त्वपूर्ण लाभ मिलना शुरू हो गया है, खासकर स्वचालन के क्षेत्र में, जहाँ स्थापित तकनीकों और उपकरणों ने रेलवे सिगनलिंग सिस्टम के लिए डिजाइन प्रक्रिया को बदल दिया है, हालाँकि ये स्वचालन उपकरण विकसित देशों और महानगरों में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं, लेकिन भारत में रेलवे सिगनलिंग की अत्यधिक माँगों को पूरा करने के लिए इनका अभी तक पूरी तरह से उपयोग नहीं किया गया है, हालाँकि इन उपकरणों को विकसित करने में आरडीएसओ द्वारा की गई हाल ही की प्रगति भारत की रेलवे सिगनलिंग प्रणालियों के आधुनिकीकरण में एक प्रमुख मील का पत्थर साबित हो रही है। डिजाइन प्रक्रिया को स्वचालित करके, ये उपकरण त्रुटियों और विसंगतियों के जोखिम को कम कर सकते हैं, और उत्पादकता और दक्षता में काफी वृद्धि कर सकते हैं। इसके अलावा, नियोजित एसआईएल-2 प्रमाणीकरण इन उपकरणों का उपयोग करके डिजाइन किए गए सिस्टम की विश्वसनीयता और सुरक्षा को और सुनिश्चित करेगा। कुल मिलाकर, मानकीकरण भारतीय रेल उद्योग की अधिक वृद्धि और समृद्धि की यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण प्रवर्तक है, और आरडीएसओ के प्रयास इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में आधुनिकीकरण की परिवर्तनकारी शक्ति का एक आशाजनक संकेत है।■

**सूचना**

'भारतीय रेल' पत्रिका में लेखक के नाम के साथ प्रकाशित हुए लेख (फोटोग्राफ के साथ), लेखक द्वारा उपलब्ध करवाए जाते हैं। भविष्य में लेख तथा फोटोग्राफ्स से सम्बन्धित कॉपी राइट्स के उल्लंघन तथा अन्य किसी भी प्रकार के विवाद के लिए लेखक संपूर्ण रूप से जिम्मेदार होगा। रेल मंत्रालय या संपादकीय टीम किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगी। लेख में व्यक्त किए गए विचार लेखक के निजी विचार हैं, इनसे संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है। *-संपादक*

# वंदे मातरम से वंदे भारत तक

सुश्री बी. राधा रानी




**हजारों मीलों की यात्रा एक कदम से शुरू होती है-लाओ त्सू**

मैंने भारत भर में ट्रेनों से बहुत-सी यात्राएँ की हैं। उत्तर में कश्मीर-शिमला से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक। पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में असम तक। मैंने ट्रेन की खिड़कियों से पहाड़ों, नदियों, समुद्रों, झीलों, कृषि भूमि, धान के खेतों और विभिन्न इलाकों की सुंदरता, प्रकृति के परिदृश्य को देखा है। मैंने सुरंगों में प्रवेश करके गुजरने वाली रेल यात्रा का अनुभव किया है। मैंने खूबसूरत दूधसागर झरना देखा। मैं प्रेम, मानवता, सहयोग और असहयोग की कहानियों की गवाह रही हूँ जो मेरी ट्रेन यात्रा के दौरान घटी थीं। मैं मनुष्यों के स्वभाव से आश्चर्य चकित थी कि कभी-कभी वे बहुत समझदार और समायोजन करने वाले होते हैं तो कभी-कभी वे बिल्कुल तर्कहीन और गैर-सहिष्णु !!!

यात्रा के दौरान की एक घटना बार-बार मेरे मानस पटल पर घूमती रहती है। एक बार एक वृद्ध महिला गलत ट्रेन में चढ़ गई और घबरा गई उनके पास न तो कोई फोन था और न ही अपने रिश्तेदारों को सूचित करने के लिए उन्हें कोई फोन नंबर याद था। ट्रेन के सभी यात्रियों ने उनकी मदद करने की कोशिश की। आखिरकार एक युवक ने किसी तरह कोशिश की और उसके द्वारा बताए गए दुकान का नाम और उनके दामाद का संपर्क नंबर इंटरनेट की मदद से ढूंढ लिया। इस तरह बुजुर्ग महिला अपने दामाद से संपर्क कर पाई और उनकी मदद हुई। यह सहयोग का एक नायाब उदाहरण है। लेकिन सभी कहानियों का अंत सुखद नहीं होता।

रेल यात्रा में चाय, इडली, समोसा चिल्लाते विक्रेताओं के दृश्य बहुत आम हैं। कुछ भिखारियों के गाने (परदेसी परदेसी जाना नहीं..), पैसे मांगते किन्नरों के समूह.....ये दृश्य ज्यादातर रेल यात्रियों को देखने को मिलते हैं। ये सभी घटनाएँ सामान्य तौर पर यात्रा के दौरान घटित होती हैं। मैंने भी ये सारे दृश्य देखे हैं।

कुछ साल पहले तक यात्रियों के बीच राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्दों, क्रिकेट, खेल, राजनीति, फिल्मों को लेकर बहसें आम बातें हुआ करती थीं। लेकिन अब स्थिति यह है कि हर किसी के पास मोबाइल फोन है और हर कोई अपने फोन और ईयर फोन में व्यस्त रहता है। यह विश्व भर में हुई आईटी क्रांति का परिणाम है।

भारत ने भाप इंजन वाली ट्रेनों से सेमी हाई स्पीड ट्रेनों तक एक लंबा सफर तय किया है और मेरे लिए जब यात्रा के अनुभव की बात आती है तो 6-7 घंटे की छोटी-सी यात्रा हजारों मीलों की यात्रा पर भारी पड़ जाती है। मैं यहाँ किसी और ट्रेन यात्रा की बात

नहीं कर रही, बल्कि हाल ही में की गई वंदे भारत ट्रेन की यात्रा की कर रही हूँ जिसने मेरे मन को छू लिया।

मैं और मेरा दोस्त एक एनजीओ चलाते हैं और हम सोशल मीडिया में यात्रा ब्लॉग के बारे में लिखा करते हैं। हमें हाल ही में वंदे भारत ट्रेन के उद्घाटन में यात्रा करने का निमंत्रण मिला जो धारवाड़ से बेंगलुरु तक की थी। मैंने इस ट्रेन के बारे में सुना था और सोशल मीडिया पर कई वीडियो देखे थे, लेकिन यात्रा के बाद ही मैं इस ट्रेन के आराम और भव्यता का आनंद ले सकी। यह यात्रा नियमित एवं पारंपरिक रेल यात्राओं से काफी अलग थी।

इस ट्रेन को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। ट्रेन प्रेस, टीवी चैनल कर्मियों और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसरों से भरी हुई थी। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे स्कूली बच्चों को भी इस ट्रेन में यात्रा करने का मौका मिला। इस ट्रेन में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि और गणमान्य लोग भी यात्रा कर रहे थे। कर्नाटक राज्य के राज्यपाल भी इस ट्रेन में यात्रा कर रहे थे। ये सफर नहीं, बल्कि एक उत्सव के समान था। लोगों की भीड़ उमड़ी हुई थी इस चमचमाती आधुनिक ट्रेन को देखने के लिए। हालाँकि सुरक्षा बलों ने थोड़ी देर बाद सारी भीड़ को हटा दिया। केवल अधिकृत व्यक्तियों को ही यात्रा की अनुमति थी।

पूरे स्टेशन और प्लेटफॉर्म को खूबसूरती से सजाया गया था। स्टेशन पर लोक गीत और लोक नृत्य जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा रहे थे। विद्यार्थी देशभक्ति के गीत गा रहे थे। स्कूली बच्चे पोस्टर प्रदर्शित कर रहे थे और कविताएँ सुना रहे थे। हर कोई सेल्फी और तस्वीरें ले रहा था। बहुत सारे लोग वीडियो रिकॉर्डिंग कर रहे थे, ब्लॉग्स और रील्स बना रहे थे। प्रेस और टीवी चैनल वाले भी ये सब कवर कर रहे थे।

ट्रेन की विशेषताएँ कुछ ऐसी हैं कि मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि ये हमारे भारत वर्ष की ट्रेन है और मैं भारत में सफर कर रही हूँ। सभी का बड़ी अच्छी तरह से स्वागत किया गया। ट्रेन में प्रवेश करने के बाद मैंने पूरी ट्रेन का मुआयना किया। हमें एक ब्रोशर/बुकलेट दिया गया, जिसमें ट्रेन से जुड़ी पूरी जानकारी थी।

वंदे भारत एक्सप्रेस एक स्वचालित अर्ध-उच्च गति ट्रेन है। धारवाड़-बेंगलुरु वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन में 530 लोगों के बैठने की क्षमता के साथ 8 कोच वाली चेयर कार है। उन्नत अत्याधुनिक सस्पेंशन प्रणाली यात्रियों के लिए एक सुगम और सुरक्षित यात्रा और बेहतर सवारी आराम सुनिश्चित करती है। धारवाड़-बेंगलुरु के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस कर्नाटक राज्य में शुरू की गई दूसरी वंदे भारत एक्सप्रेस है और 'मेक इन इंडिया' की सफलता की कहानी का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। भारतीय रेल ने भारत की पहली स्वदेशी सेमी-हाई स्पीड ट्रेन, वंदे भारत एक्सप्रेस लॉन्च की है, जिसे माननीय प्रधानमंत्री ने सर्वप्रथम दिनांक 5 फरवरी, 2019 को नई दिल्ली से वाराणसी मार्ग पर हरी झंडी दिखाई थी। धारवाड़-बेंगलुरु वंदे भारत एक्सप्रेस इस सेक्शन की सबसे तेज ट्रेन है, जो 6.5 घंटे में 489 कि.मी. की दूरी तय करती है और अन्य मौजूदा ट्रेनों की तुलना में लगभग 2 घंटे का समय बचाती है।

यह नई धारवाड़-बेंगलुरु वंदे भारत ट्रेन शैक्षिक केंद्र और सांस्कृतिक शहर, धारवाड़, प्रमुख व्यापार और वाणिज्य केंद्र, हुबली और तकनीकी सॉफ्टवेयर स्टार्टअप हब, बेंगलुरु के बीच कनेक्टिविटी बढ़ाएगी। इससे धारवाड़-बेंगलुरु-धारवाड़ मार्ग पर यात्रा करने वाले नियमित यात्रियों के अलावा सॉफ्टवेयर और व्यावसायिक पेशेवरों, प्रौद्योगिकीविदों, पर्यटकों, छात्रों को भी लाभ होगा। धारवाड़ शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र है। यहाँ पर आईआईटी, कर्नाटक विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, आईआईआईटी आदि शिक्षण संस्थान मौजूद हैं। यह जिला एशिया के सबसे बड़े कृषि और कपास बाजारों में से एक है।

यह ट्रेन कपड़ा व्यापार, तकनीकी और चिकित्सा शिक्षा के केंद्र दावणगेरे को भी जोड़ती है। वंदे भारत से शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा, साथ ही युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी मिलेंगे। बढ़ी हुई कनेक्टिविटी पूरे उत्तर और मध्य कर्नाटक क्षेत्र में व्यापार, वाणिज्य और आर्थिक गतिविधियों को भारी प्रोत्साहन प्रदान करेगी। यह एयरलाइन जैसा आराम प्रदान करेगी और ट्रेन से यात्रा को नया रूप देगी।

वंदे भारत एक्सप्रेस के दोनों छोर पर दो ड्राइवर कैब कोच हैं, जो गंतव्य पर तेजी से पहुंचने में सक्षम बनाते हैं। ड्राइवर कैब का चिकना और भविष्यवादी वायुगतिकीय आकार (नोज कोन) हवा के खिंचाव को कम करके ऊर्जा आवश्यकताओं को महत्त्वपूर्ण रूप से बचाएगा। निरंतर खिड़कियाँ ट्रेन के सौंदर्य को बढ़ाती हैं। ट्रेन में बेहतर यात्री सुविधाएँ हैं, जैसे ऑन-बोर्ड वाई-फाई इंफोटेनमेंट, जीपीएस-आधारित यात्री सूचना प्रणाली, आलीशान आंतरिक सजावट, टच-फ्री सुविधाओं के साथ बायो-वैक्यूम शौचालय, एलईडी लाइटिंग, हर सीट के नीचे चार्जिंग पॉइंट, व्यक्तिगत टच-आधारित रीडिंग लाइट और रोलर ब्लाइंड। इसमें बेहतर हीट वेंटिलेशन और हवा की रोगाणु रहित आपूर्ति के लिए यूवी लैंप के साथ एक एयर कंडीशनिंग प्रणाली भी है। इंटेलिजेंट एयर कंडीशनिंग प्रणाली जलवायु परिस्थितियों/ओकूपेंसी के अनुसार कूलिंग को समायोजित करती है।

वंदे भारत एक्सप्रेस उस भारत का प्रतीक है, जो अपने हर नागरिक को बेहतर सुविधाएँ देना चाहता है। वंदे भारत विकासशील देश से विकसित देश की ओर बढ़ रहे भारत का प्रतीक है, जो स्वदेशी साधनों एवं संसाधनों का उपयोग कर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। वंदे भारत एक्सप्रेस द्वारा सुखद और बेहतर रेल यात्रा अनुभव के लिए एक नए युग की शुरुआत की जा रही है। इससे यात्रियों के बहुमूल्य समय की बचत होगी, साथ ही अत्याधुनिक तकनीक के साथ आरामदायक एवं सुखद यात्रा का अनुभव होगा।

## वंदे भारत ट्रेन-एक नजर में

- एक कोच से दूसरे कोच में जाने के लिए विद्युत संचालित टच-फ्री स्लाइडिंग दरवाजे प्रदान किए गए हैं।
- यात्रियों के लिए सुरक्षित रूप से चढ़ने/उतरने के लिए स्वचालित प्लग डोर के साथ स्लाइडिंग फुटस्टेप प्रदान किए गए हैं।
- ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) युक्त यात्री सूचना सुविधा यात्रा के दौरान ट्रेन की आवाजाही की लाइव जानकारी

देता है। इसके अलावा बड़े आकार की यात्री इंफोटेनमेंट प्रणाली सुविधा भी उपलब्ध है।

- यात्रा के दौरान रेल यात्रियों को मनोरम दृश्य का आनंद उठाने के लिए बड़े आकार की खिड़कियाँ प्रदान की गई हैं।
- बिजली गुल होने की स्थिति में बफर के रूप में कार्य करने के लिए प्रत्येक कोच में आपातकालीन प्रकाश व्यवस्था की गई है।
- प्रत्येक कोच में मिनी पैंट्री कार उपलब्ध है।
- दिव्यांगजन यात्रियों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए वॉशरूम प्रदान किए गए हैं।
- उपयोग के लिए टच फ्री सुविधाओं के साथ आधुनिक बायो-वैक्यूम शौचालय उपलब्ध हैं।

## प्रमुख तकनीकी विशेषताएँ

वंदे भारत एक्सप्रेस-अत्याधुनिक तकनीक युक्त ट्रेन।

- वंदे भारत एक्सप्रेस स्वचालित सेमी-हाईस्पीड ट्रेन एक ट्रेन सेट के रूप में चलती है।
- ट्रेन सेट के दोनों सिरों का डिजाइन एरोडायनामिक है, जो एअर ड्रैग को बहुत कम कर ट्रेन को अत्याधुनिक बनाता है।
- बोगियां 160 कि.मी. प्रति घंटे की परिचालन गति के लिए पूरी तरह से सस्पेंडेड ट्रैक्शन मोटर से लैस हैं।
- ट्रेन 'कवच' से लैस है, जो अत्यधिक विश्वसनीयता वाली ट्रेन स्वदेशी रूप से विकसित ट्रेन टक्कर-रोधी प्रणाली है।
- उन्नत अत्याधुनिक सस्पेंशन प्रणाली सुगम यात्रा का अनुभव प्रदान करती है।
- ग्रीन फुटप्रिंट योजनाओं को प्राथमिकता देते हुए पावर कारों को हटाकर और उन्नत रीजनरेटिव ब्रेकिंग प्रणाली का उपयोग करके लगभग 30% बिजली की बचत करती है।
- ब्रेकिंग प्रणाली इलेक्ट्रोन्यूमेटिक है, जिसके अंतर्गत डिस्क ब्रेक सीधे व्हील डिस्क पर लगे होते हैं, जिससे ब्रेक लगाने के बाद ट्रेन बहुत कम दूरी तय करती है।
- कोचों पर लगी सिगनल एक्सचेंज बत्तियां, ट्रेन के चलते समय रास्ते के स्टेशनों के साथ परेशानी मुक्त सिगनल आदान-प्रदान को सक्षम बनाती हैं।
- 650 मिली मीटर की ऊंचाई तक बाढ़ का सामना करने में सक्षम बनाने हेतु अंडर-स्लंग विद्युत उपस्करों के लिए सुपीरियर फ्लड प्रूफिंग।

## वंदे भारत अंदर का दृश्य-सुविधाएँ

- तनाव मुक्त यात्रा के लिए आराम करने की सुविधा के साथ बैठने की उत्तम व्यवस्था है, जबकि एग्जीक्यूटिव कोच में 180° घूमने वाली सीटों की अतिरिक्त सुविधा।
- सभी कोच पूरी तरह से सील किए गए गैंगवे से जुड़े हुए हैं और गैंगवे की बाहरी फेयरिंग को एयर ड्रैग कम करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- दिव्यांगजन हितैषी सुविधाओं में वॉशरूम और सीट हैंडलों पर ब्रेल लिपि में लिखे गए सीट नंबर शामिल हैं।
- ट्रेन में आपातकालीन अलार्म बटन और आपातकालीन टॉक-बैक यूनिट प्रदान किए गए हैं, ताकि आवश्यकता पड़ने पर यात्री चालक दल से बात कर सकें।
- निगरानी रखने के लिए सभी कोचों में सीसीटीवी लगाए गए हैं ताकि सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित की जा सके। बेहतर प्रभाव के लिए कोच के बाहर रियर व्यू कैमरों सहित प्लेटफॉर्म साइड कैमरे लगाए गए हैं।
- विशेष एयर कंडीशनिंग डक्ट ध्वनिहीन और समान वायु प्रवाह वितरण को सुनिश्चित करते हैं।

**वंदे भारत एक्सप्रेस, एक अभिनव पहल :** वंदे भारत एक्सप्रेस, भारतीय रेल द्वारा देश में रेल यात्रा के मानकों और रेल की गति बढ़ाने के लिए बनाई गई एक महत्त्वाकांक्षी योजना है। माननीय प्रधानमंत्री के 'मेक इन इंडिया' आह्वान से प्रेरित होकर इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आईसीएफ) ने इस पहल को आगे बढ़ाया। नवीनतम रेल प्रौद्योगिकी को आत्मसात करते हुए पूरी तरह से स्वदेशी यह रेलगाड़ी आधुनिक सेमी-हाई स्पीड, बेहतर एरोडायनामिक डिजाइन, उच्चतम परिचालन गति, अत्यंत सुंदर आंतरिक साज-सज्जा और अत्याधुनिक संरक्षा सुविधाओं से युक्त है। प्रत्येक ट्रेन सेट की अनुमानित लागत लगभग ₹110 करोड़ है।

**वंदे भारत एक्सप्रेस, एक संकल्पना युक्त पहल :** वंदे भारत एक्सप्रेस आधुनिकीकरण की दिशा में अंतरराष्ट्रीय मानकों को प्राप्त करने के पथ पर एक लंबी छलांग और भारतीय परिवहन के परिदृश्य में रूपांतरण का एक प्रमाण है। यह पर्यटकों को अत्यधिक सुविधाजनक सेवाएँ प्रदान करने की भारतीय रेल की प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है। भारतीय रेल अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप आधुनिकीकरण की दिशा में उठाए गए परिवर्तनकारी कदम का प्रमाण है, जो भारत के परिवहन परिदृश्य में एक बड़ी छलांग है।

वंदे भारत ट्रेन, भारत में ही डिजाइन की हुई और भारत में ही निर्मित स्वदेशी ट्रेन है। इसकी रफ्तार के कितने ही वीडियो, लोगों के दिलो-दिमाग में, सोशल मीडिया पर भी पूरी तरह से छाए हुए हैं। 'अमृत भारत स्टेशन योजना' की कड़ी में रेलवे स्टेशनों का उन्नयन किया जा रहा है। स्वदेशी तकनीक पर निर्मित एवं आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना पर देश के अलग अलग रूटों पर वंदे भारत ट्रेनें शुरू की गई हैं। यात्री संरक्षा को मजबूत करने के लिए 'कवच प्रणाली' का विस्तार किया जा रहा है।

मैंने पूरी बुकलेट को अच्छे से पढ़ा और एक-एक पॉइंट को नोट किया और सच में ये सारा सिस्टम है या नहीं और ठीक से काम कर रहे हैं या नहीं चेक किया। हमारी ट्रेन सुबह 10.30 बजे खुल गई मुझे जानकर बहुत आनंद हुआ कि ये सारी बातें बिल्कुल सही हैं। मेरी तफ्तीश चल ही रही थी कि कैटरिंग वालों ने नाश्ते का इंतजाम कर दिया। नाश्ता बहुत ही स्वादिष्ट था। समय के अनुसार ट्रेन में नाश्ता, दोपहर का भोजन और रात के खाने की व्यवस्था थी। नाश्ता खत्म होते होते हुब्बल्ली स्टेशन पहुँच गई ट्रेन। पूरे रास्ते में लोग रेल पटरियों के किनारे इस ट्रेन की एक झलक देखने के

लिए खड़े थे। अपने हाथ हिला रहे थे और मोबाइल से फोटो और वीडियो ले रहे थे। इस ट्रेन के प्रति लोगों का उत्साह देखते ही बनता है। हुब्बल्ली स्टेशन में भी ऐसी ही भीड़ थी और विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन था। ट्रेन का ऐसा स्वागत देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गई ट्रेन अपने अगले स्टेशन की ओर चल पड़ी। उद्घाटन के कारण ट्रेन के स्टॉपेज अधिक थे।

मैं कुछ समय के लिए अपने विचारों में खोई हुई थी कि समय कैसे बदल गया है और हमारे बचपन के दिनों की यात्राओं की तुलना में ट्रेन यात्रा के अनुभव में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। जब हम छोटे थे तो हम खिड़की-वाली सीटों के लिए लड़ते-झगड़ते थे और अब स्थिति यह है कि सीटें पूरी तरह खिड़की की ओर घूम जाती हैं। खिड़कियाँ अब इतनी लंबी और सुंदर हो चुकी हैं। समय इतनी तेजी से बदल रहा है। हर एक चीज में साइंस और इंजीनियरिंग ने अपनी ऐसी छाप छोड़ी है कि सब कुछ साइंस फिक्शन स्टोरी जैसा लगता है। कहां वह पुराने गाने..... रेलगाड़ी छुक.. छुक.. छुक. .... इस ट्रेन की गति के साथ मेल खाते हैं? ये आधुनिक भारत है और यह आधुनिक ट्रेन। मन में अत्यन्त गर्व हुआ कि मेरा देश बदल रहा है। तरक्की कर रहा है। सब कुछ डिजिटल हो गया है। टिकट बुक करना, खाना बुक करना, पेमेंट करना मानो एक मोबाइल फोन में सारी दुनिया सिमट चुकी है।

इन्हीं विचारों में थोड़ी देर खोई रही फिर अचानक याद आया मुझे अपने सोशल मीडिया अकाउंट के लिए वीडियो भी तो बनाने हैं !!! मैंने अपना कैमरा उठाया और ट्रेन में बहुत सारा वीडियो और फोटो शूट किया। ट्रेन पुल के ऊपर जा रही थी। एक जगह ट्रेन नारियल के बगीचे के बीच से गुजरी.. दोनों तरफ हरे हरे खेत, बरसाती मौसम में बादलों के नजारे सब कैमरे में कैद कर लिया। उसके बाद मैं सबका इंटरव्यू लेने लगी। सब से ज्यादा खुश तो स्कूल के बच्चे थे। वो गाने गा रहे थे... कविताएँ सुना रहे थे... तालियाँ बजा रहे थे इत्यादि। उन्हें बहुत मजा आ रहा था। अपने नये-नये विचार साझा कर रहे थे।

ट्रेन में एक बहुत बुजुर्ग व्यक्ति भी थे। उनसे बात करके पता चला कि वे स्वतंत्रता सेनानी हैं। उन्होंने अपनी एक कहानी सुनाई और कहा कि मैंने ये कभी नहीं सोचा था कि एक दिन उनके 'वंदे मातरम्' के नारों से देश आज़ाद होगा और एक दिन 'वंदे भारत' नामक ट्रेन में बैठेंगे और यात्रा करेंगे। उनकी बातें सुनकर अभूतपूर्व आनंद की अनुभूति हो रही थी और मन में नाना प्रकार के विचार उत्पन्न हो रहे थे कि देश को इस स्थिति में लाने के लिए न जाने कितने लोगों ने कितने प्रकार से योगदान दिया है। इस नई और पुरानी पीढ़ी को देख-सुनकर मन एक बार फिर आह्लादित हो उठा। ट्रेन अपनी तेज गति से सरपट दौड़ रही थी। बारिश का मौसम भी था। बाहर बारिश हो रही थी मुझे बाहर के नजारे अति मनोरम दिख रहे थे। इसी बीच ट्रेन कई स्टेशनों पर रूकती-चलती जा रही थी। बारिश के बावजूद भी हर स्टेशनों पर लोगों की भीड़, वही मन को भावुक कर देने वाला स्वागत, लोगों में उमंग और जोश।

अब मैं चली युवा पीढ़ी से बात करने, लेकिन ये क्या.. कैटरिंग स्टाफ ने कहा.. लंच टाइम हो गया है... कृपया अपनी सीट पर लंच कलेक्ट करें। मैंने सोचा ठीक है... पहले खाना खा लेते हैं। खाना गरमा-गरम और बहुत ही स्वादिष्ट एवं संतुलित था। शाकाहारी भारतीय भोजन थोड़ा-सा दक्षिण भारतीय शैली और स्वाद के साथ।

युवा हमारे देश की ताकत हैं। भारत युवाओं का देश है। भारतीय युवा हर क्षेत्र में सफल हैं। उन्होंने हमारे देश में खुद को साबित किया है। विदेशो में भी भारतीय युवा अपना लोहा मनवा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस ट्रेन में उन्हें हवाई सफर जैसा महसूस हो रहा है। इस ट्रेन में हवाई जहाज जैसी सुविधाएँ अपनाई गई हैं। उन्होंने कहा कि यह ट्रेन हवाई जहाज से कहीं बेहतर है क्योंकि ट्रेन में उन्हें बाहर के खूबसूरत नजारे देखने को मिलते हैं जबकि हवाई जहाज में उन्हें ऐसे नजारे नहीं दिखते। मैंने सोचा सही है.... हवाई जहाज में तो सिर्फ बादल दिखते हैं।

इतने में ही हमारा गन्तव्य करीब आ गया। हमारी ट्रेन अब अपनी आखिरी मंजिल की ओर प्रस्थान कर चुकी थी। इतनी जल्दी ये सफर खत्म होने को आ गया। सफर छोटा ही सही, लेकिन अनोखा था। भारत की नई छवि के दर्शन हो रहे थे। प्रगतिशील भारत कैसे प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है.. इस बात का गवाह है ये सफर। आज के भारत में सबको गति और प्रगति से जोड़ने के लिए तेजी से काम चल रहा है।

वंदे भारत ट्रेन इसका एक बहुत बड़ा उदाहरण है, प्रतीक है। वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन भी एक राष्ट्र के रूप में हमारी साझा संस्कृति, हमारी आस्था को न केवल जोड़ती है, बल्कि वंदे मातरम की राष्ट्रीय भावना को देश भर में फैलाती भी है। 'वंदे मातरम से वंदे भारत तक'..... यही मन में गूंज रहा था कि हमारा आखिरी और अंतिम पड़ाव बेंगलुरु आ गया। इतने सारे ख्यालों को लेकर इतने सारी यादों को संजोए हुए... ये यात्रा यहीं खत्म हुई। खत्म.... ना.. ना... 'पिक्चर अभी बाकी है मेरे दोस्त'... आगे 'बुलेट ट्रेन' में मिलेंगे.... हम हैं राही प्यार के... फिर मिलेंगे चलते-चलते.....

**रेल मंत्रालय की लेख 'वंदे मातरम से वंदे भारत तक' नामक रेल यात्रा वृतांत के लिए इस लेखक (सुश्री बी. राधा रानी) को प्रेरणा पुरस्कार के लिए नामित किया गया है।■**

भारतीय रेल
पत्रिका

अब
राष्ट्रीय रेल संग्रहालय
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में भी उपलब्ध है

# चाँदनी

सुश्री रिंकल शर्मा

आज शर्माजी के यहाँ बड़ी ही रौनक लगी हुई थी। कई वर्षों बाद, पोता होने की खुशी में, जोरदार पार्टी दी गई थी। मैं पहुँची, तब तक बच्चे का नामकरण हो चुका था। मुझे देखते ही सुभद्रा आंटी बड़े ही प्यार से मुझसे आकर मिली।

"अरे संजना! कितनी देर कर दी आने में, मैं कब से तुम्हारा इंतजार कर रही थी।"

"आंटी, वो बस बच्चों को स्कूल से लाकर, फिर ट्यूशन क्लास में पहुँचाकर, सीधी आपके पास ही आई हूँ।"

"मतलब बच्चों को नहीं लाईं ये तो गलत बात है।" आंटी ने थोड़ी सी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा।

"आंटी, कल से दोनों के ही एग्जाम शुरू हो रहे हैं। खैर, मेरी छोड़िए, ये बताइए पोते का नाम क्या रखा?

"तुम्हारे अंकल ने नाम रखा है-पार्थ"

"पार्थ, अरे वाह! बड़ा ही प्यारा नाम है। आपको बहुत-बहुत बधाई हो आंटी।"

"अरे बेटा, ये सब आप लोगों की दुआओं का ही नतीजा है। अब चलो अंदर आओ और कुछ खाओ-पियो, सारी बातें यहीं खड़े-खड़े ही करोगी क्या"- कहकर आंटी मुझे अंदर ले आई।

अंदर के हॉल में, एक कोने में सोफा लगा हुआ था, जिस पर वृंदा अपने नन्हें से राजकुमार को गोद में लिये बैठी थी। नीचे फर्श पर कुछ औरतें बैठी हुईं गीत गा रही थीं। नन्हा पार्थ अपनी माँ की गोद में सुकून की नींद सो रहा था। मैं जाकर वृन्दा के पास बैठ गई। वृंदा ने 'पार्थ' को मेरी गोद में दे दिया। सच! बड़ा ही प्यारा बच्चा था। एक दम कमल के फूल जैसा कोमल और खूबसूरत। उसके चेहरे से नजर हटाने का दिल ही नहीं कर रहा था।

"लो संजना, पहले कुछ खा लो"- आंटी ने चाय-नाश्ते की ट्रे मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा।

मैंने, पार्थ को दोबारा वृंदा की गोद में सौंपा और आंटी के हाथ से चाय-नाश्ते की ट्रे लेकर अपने पास रख ली। मैंने चाय का घूंट भरा ही था कि बाहर से थोड़ा शोर-शराबा-सा आने लगा।

"बधाई हो! बधाई हो! पोते की बधाई लेने आये हैं।"- एक मर्दाना आवाज सुनाई दी।

वैसे तो मैं और सभी औरतें समझ गए कि बाहर किन्नर आ गए हैं। तभी सुभद्रा आंटी बाहर से आईं और बोली- "संजना! बाहर किन्नर आए हैं। तुम वृंदा और मुन्ने को लेकर बाहर आ जाओ" मैंने झट से अपनी चाय खत्म की। बच्चे को गोद में लिया और वृंदा के साथ ही बाहर लगी कुर्सी पर बैठ गई किन्नरों की सरदार बुलबुल ने अपनी टोली को गाने का हुक्म दिया। उसकी टोली में उसके अलावा चार और लोग भी थे। एक ढोलक बजाने लगा और दूसरा हारमोनियम बजाने लगा। बाकी के दोनों ने नाचना शुरू किया। बुलबुल अपनी टोली के पास वहीं एक कुर्सी लेकर बैठ गई नाचने वाले दोनों किन्नरों में से एक को देखकर मुझे ऐसा लगा, जैसे मैंने उसको कहीं देखा है। बड़ा ही जाना पहचाना-सा चेहरा लग रहा था। बुलबुल उसे बार-बार बीच में टोक भी देती थी।

"ए चाँदनी! ठीक से ठुमका लगा, नहीं तो यह सेठानी रुपया देने में चिक-चिक करेगी।" बुलबुल की बात सुनकर ढोलक वाले ने ढोलक की थाप और तेज कर दी और दोनों किन्नर पहले से ज्यादा फुर्ती के साथ नाचने लगे। किन्नर अपने नाचने-गाने में लगे हुए थे। सभी औरतें आपस में हंस-हंसकर नाच-गाने का आनंद ले रही थीं। मगर मेरा ध्यान बार-बार उसी बात पर चला जाता कि आखिर, मैंने उस किन्नर को कहाँ देखा है? तभी एक धुंधला-सा चेहरा याद आया।

"कहीं ये गौरी तो नहीं?" मैंने अपने आप से सवाल किया। "मगर इसका नाम तो चाँदनी है?"- मेरे मन के एक कोने में उधेड़बुन चल रही थी। नाच-गाना जब खत्म हुआ तो, बुलबुल ने बधाइयाँ गाना शुरू कर दिया। जैसे ही उसने बधाइयाँ गाना शुरू किया सुभद्रा आंटी एक थाली में चावल, फल और सुहाग का सामान इत्यादि लेकर आ गयीं। बुलबुल ने थाली लेकर गाना गाते-गाते सारी सामग्री वृंदा की गोद में डाल दी। और उसके सर पर हाथ रख आशीर्वाद देने लगी।

"लाओ सेठानी जी, पूरे ₹51,000 लूंगी पोते की बधाई"- बुलबुल ने अपने दोनों हाथों से ताली पीटते हुए कहा।

"अरे बुलबुल, ₹51,000 तो बहुत ज्यादा है। मैं, ₹21,000 से एक रुपया ज्यादा नहीं दूंगी"- सुभद्रा आंटी ने कहा।

"हाय! हाय! कैसी बातें करती हो सेठानी? बड़ी मिन्नतों के बाद तो चाँद-सा पोता घर आया है। और तुम हो कि कंजूस बन रही हो।"- बुलबुल की आवाज इस बार थोड़ी तेज हो गई।

"अरी बुलबुल, मान जा। आजकल हाथ थोड़ा तंग है। फिर कभी कुछ शुभ काम हो तब ले जाना"- आंटी ने मिन्नत की।

"देखो सेठानी! हमें मत सिखाओ हाँ! पैसा मुन्ने की पॉटी में भी डाल देगी, तो बुलबुल वहाँ से भी उठा लाएगी। बुलबुल, तेरे मुन्ने की लाखों बलायें लेती है। सेठानी, बुलबुल की दुआ लगे और भगवान मुन्ने को हजार वर्ष की नीम दे। किन्नरों की दुआ कभी खाली नहीं जाती।"- बुलबुल ने जोर से ताली पीटते हुए कहा।

"अच्छा! ठीक है, दे दूंगी। चलो पहले तुम लोग खाना तो खा लो"। आंटी को पता था कि बुलबुल से पीछा छुड़ाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। बुलबुल आंटी की बात सुनकर राजी हो गई। मैं, वृंदा और मुन्ने को अंदर लेकर आ गयी। अंदर आने के बाद भी मेरा मन कहीं उलझा हुआ था। तभी किसी ने पीछे से मेरे कंधे पे हाथ रखा।

"संजना! कैसी हो?"- एक मर्दानी-सी आवाज सुनकर मैंने पीछे मुड़कर देखा तो चाँदनी मेरे पीछे खड़ी थी।

"तुम....तुम गौरी हो ना।"- मैं सहसा पूछ उठी।

"हाँ, मैं गौरी ही हूँ। मैंने तुम्हें देखते ही पहचान लिया था।"

"मैं भी बड़ी देर से तुम्हारे बारे में ही सोच रही थी। लेकिन बुलबुल तुम्हें चाँदनी नाम से पुकारा तो असमंजस में पड़ गयी।"

"हाँ संजना, अब मेरा नाम चाँदनी है"- गौरी ने कहा।

"गौरी, तुम तो रामपुर में थीं, फिर यहाँ दिल्ली में कैसे?"

"यह जिंदगी भी बड़ी अजीब चीज है। पल में इंसान को कहाँ से कहाँ लाकर खड़ा कर दे, पता ही नहीं चलता। गौरी से चाँदनी तक का सफर बहुत लम्बा रहा"- गौरी ने लम्बी सांस लेते हुए कहा और एकदम शांत हो गई।

मैं, गौरी के चेहरे की तरफ देखने लगी। गौरी के चेहरे पर वही भोलापन आज भी बरकरार था, जो कभी बचपन में हुआ करता था। हम दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे। गौरी का घर, मेरे घर से कुछ ही दूरी पर था। गौरी के पिता की बर्तनों की दुकान थी। और मेरे पिता पेशे से वकील थे। एक ही स्कूल होने के कारण हम दोनों अक्सर साथ में ही स्कूल आना-जाना करते थे। गौरी बड़ी हंसमुख और सरल स्वभाव की थी। वह पढ़ने में बहुत होशियार थी। हर साल क्लास में फर्स्ट आया करती। हम एक दूसरे के घर भी आया-जाया करते और घंटों साथ बिताते। बचपन के वो दिन जैसे सुहावने होते हैं, वैसे ही हमारे भी थे।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और बचपन, किशोरावस्था में परिवर्तित होने लगा। प्रकृति के अनुसार मेरी शारीरिक संरचना में भी परिवर्तन आना शुरू हो गया। मासिक धर्म की भी शुरुआत हो गयी। लेकिन मेरी हमउम्र गौरी में कहीं कोई परिवर्तन नहीं आया। वक्षस्थल का उभार या मासिक चक्र जैसा कोई भी लक्षण शुरू नहीं हुआ। उसका बस कद ही थोड़ा बड़ा हो रहा था। मेरा कोमल मन अक्सर इन बातों को सोचता था। कभी-कभी तो मैं, गौरी से पूछ भी लिया करती।

"गौरी! तुम्हारा पीरियड कब आता है?"

"पीरियड! वो क्या होता है संजना"- गौरी बड़ी ही मासूमियत से पूछती।

उसका जवाब सुनकर मैं भी चुप हो जाती। मुझे भ्रम होने लगता कहीं ऐसा तो नहीं कि यह सब मेरे साथ ही कुछ गलत हो रहा है। अपनी इसी उलझन को मिटाने के लिए, एक दिन बड़ी ही हिम्मत करके मैंने, माँ से पूछा। माँ ने मुझे प्राकृतिक परिवर्तनों के बारे में बताया। जिससे मेरे दिल को तसल्ली हुई। मगर जब मैंने, माँ को गौरी के बारे में बताया तो उनके चेहरे पर एक शिकन-सी आ गई। उस वक्त मुझे समझ नहीं आया कि माँ आखिर क्यों चिंतित हो रही हैं। लेकिन धीरे-धीरे कुछ महीनों बाद जब मोहल्ले में खबर फैलने लगी और आस-पड़ोस में गौरी के बारे में चर्चाएँ होने लगीं तो मुझे भी समझ आने लगा कि गौरी मेरी तरह सामान्य नहीं है। गौरी के पिता परेशान रहने लगे। धीरे-धीरे गौरी के पिता ने उसका स्कूल जाना भी बंद करा दिया। गौरी खुद भी बहुत चुप-चुप रहने लगी। अब वह किसी से भी ज्यादा बात नहीं करती थी। सिर्फ एक मैं ही थी, जो गौरी के पास जाया करती। मुझे याद है, वो घंटों मेरे पास बैठ कर रोती रहती थी।

"संजना, भगवान मेरे साथ ही ऐसा क्यों कर रहा है? क्यों उसने मुझे तुम्हारे जैसा नहीं बनाया?"

गौरी के आंसू उसके अंदर का दर्द बयाँ करते। वह खुद को बहुत ही बेबस और लाचार पाती। उसके माता-पिता भी बहुत दुखी रहने लगे। मगर उनके ऊपर दुखों का असली पहाड़ तो अभी टूटना बाकी था। गौरी की शारीरिक संरचना की खबर उड़ते-उड़ते किन्नर समाज तक जा पहुँची।

एक दिन दोपहर के समय मैं स्कूल से घर वापस आ रही थी। तभी देखा कि गौरी के घर के बाहर बहुत भीड़ लगी हुई है। उसी भीड़ में मैंने अपने माता-पिता को भी खड़ा देखा तो घबरा गई। समझने की कोशिश करने लगी कि आखिर हुआ क्या है? सारा माजरा समझ आने में देर नहीं लगी।

गौरी के माता-पिता को जिस बात की फिक्र थी, आज वही हुआ था। किन्नरों का एक झुंड, गौरी को लेने आया था। गौरी घर के अंदर बंद थी। किन्नर अपनी बात पर डटे हुए थे। उनका तर्क था कि गौरी उनके समाज का हिस्सा है। वो उसको ऐसे कभी नहीं रहने दे सकते। बात जब ज्यादा बढ़ने लगी तो बाबूजी ने पुलिस को बुला लिया। पुलिस के आने से उस समय तो मामला शांत हुआ।

मेरे पिता ने अक्सर देखा कि किन्नरों का एक झुंड घर के आसपास हमेशा मंडराता रहता है। मैं और मेरा पूरा परिवार डरे सहमें-से रहते थे। एक दिन मेरे माता-पिता मेरे बुआ के बेटे की शादी में गए हुए थे। तभी मौका देखकर अचानक किन्नरों के एक झुंड ने हमारे घर पर हमला कर दिया। मैं और मेरा भाई चीखते-चिल्लाते रह गए, लेकिन कोई पड़ोसी मदद के लिए नहीं आया। मेरी आंखों पर कपड़ा डालकर वे मुझे एक अन्जान जगह पर ले गए।

"संजना, कहाँ खो गई? गौरी की आवाज से मेरी तन्द्रा भंग हुई तभी सुभद्रा आंटी हाथ में पैसे, मिठाई और कुछ कपड़े लिए आयीं।

"संजना बेटा, जरा इन पैसों को गिनो तो। देखो पूरे ₹51,000 है या नहीं"- कहकर आंटी चली गईं मैंने गौरी की तरफ देखा, वो चुपचाप नजरें झुकाये बैठी थी।

"गौरी, तुमने बताया नहीं तुम यहाँ कैसे पहुँची?"- मैंने उत्सुकता से फिर पूछा।

"संजना, उस दिन, घर से जब किन्नर मुझे ले गए तो रास्ते भर मैं रोती-चिल्लाती रही। वो मुझे एक बड़े से घर में लेकर गए। वहाँ सारी सुख-सुविधाएँ थीं, लेकिन फिर भी बहुत दिनों तक मैं रोती ही रही। मन में हर पल वहाँ से अपने घर वापस जाने के बारे में ही सोचती थी। बहुत बार वहाँ से भागने का प्रयास किया, लेकिन उन लोगों से भाग पाना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन था। धीरे-धीरे उन्होंने मुझे नाच-गाना सिखाना शुरू कर दिया और मुझे अपने साथ लेकर जाने लगे। मैं, शर्म और घुटन के मारे न तो जी पा रही थी और न ही मर पा रही थी। एक जिन्दा लाश की तरह हो गई थी।

वहाँ किन्नरों की एक सरदार थी- शबनम। वह मुझे बहुत समझाती थी। वो कहती थी कि "देख बेटा... तुझे लग रहा होगा कि हमने तेरे साथ ज्यादती की है। मगर ये समाज ना बहुत बुरा है। तू आज कम से कम ऐसे लोगों के बीच तो है, जिनका दर्द बिल्कुल तेरे जैसा है। यहाँ सब तेरे जैसे हैं। यहाँ कोई भी तुझे ताना मारने वाला नहीं है। मगर वो समाज, जहाँ से तू आई है, वो तुझे और तेरे माँ-बाप को जीते-जी मार डालता।''

वो समाज तुझे कभी नहीं अपनाता। समाज के तानों से तंग आकर या तो एक दिन तू खुदकुशी कर लेती या फिर तेरे माँ-बाप कर लेते।" शबनम की बातें मुझे तीर की तरह चुभती थीं। मुझे लगता था कि मेरे माँ-बाप मेरे लिए तड़प रहे होंगे। ऐसा कुछ नहीं होगा जैसा शबनम कहती है। लेकिन संजना एक दिन मेरा ये भ्रम दूर हो गया। करीब एक साल बाद, मैं एक शादी में गई मुझे जाना ही पड़ा, और कोई चारा भी नहीं था। वहाँ मैं बाकी किन्नरों के साथ नाच रही थी कि मेरी नजर मेरे पिता और भाई पर पड़ी। उन दोनों को देखकर, मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैं लपककर उनके पास जाने लगी। मगर तभी मेरे पिता ने आंखों में आंसू भरकर, अपने दोनों हाथों को जोड़कर, मुझे उनसे दूर रहने का इशारा किया। मैं समझ गई कि शायद वो मुझे अपनी बेटी बताकर, समाज में अब और शर्मिंदगी उठाना नहीं चाहते हैं। उस वक्त शबनम के कहे शब्द मेरे कानों में गूंजने लगे। सच ही तो कहा था उसने कि अब उस समाज में मेरा कोई नहीं था। अब मेरा नाता वहाँ से हमेशा के लिए टूट चुका था। मैं रोती हुई और अपने आँसुओं को छुपाती हुई, वापस आ गई शबनम की नजर मेरे पिता और भाई पर पड़ी, लेकिन जब उसने मुझे रोता देखा तो वो बिन कहे ही सारी बात समझ गयी। वो मेरे पास आई और उसने मुझे सीने से लगा लिया। शबनम के सीने से लिपटकर मैं फूट-फूटकर रोने लगी। उस समय उसने मुझे एक माँ की तरह सहारा दिया। मैंने शबनम से कहा कि 'मुझे अब इस शहर में नहीं रहना।' शबनम ने मेरी परेशानी और मेरे दर्द को बखूबी समझा। वह बोली- "रोती क्यों है- गौरी। मैं हूं ना। मैं कल ही तुझे दिल्ली भेज दूंगी। वहाँ तू 'चाँदनी' के नाम से जानी जाएगी। गौरी को हमेशा के लिए यहीं छोड़ जाना। और अब इस दुनिया में ही खुश रहने की कोशिश करना।"- शबनम की बातों ने मेरे जख्मों पर मरहम का काम किया। मैं अगले दिन ही दिल्ली आ गईं यहाँ बुलबुल के साथ मुझे रहने का मौका मिला। मैंने नियति को ही अपना नसीब समझ कर जीना शुरू कर दिया। अब तो इन लोगों के साथ ही रहने की आदत हो गई है।" कहते-कहते गौरी थोड़ी भावुक भी हो गई।

"गौरी, अब हम एक ही शहर में हैं। मैं शादी के बाद से यहीं रह रही हूँ। कभी-भी अपनी इस सहेली की याद आये तो घर जरूर आना। मेरा घर पास में ही है।"

"क्यों नहीं संजना, मैं जरूर आऊँगी, मगर तुम मुझसे एक वादा करो कि आज के बाद तुम कभी मुझे गौरी कहकर नहीं बुलाओगी। गौरी को अब मैंने कब का पीछे छोड़ दिया। अब मैं चाँदनी हूँ और चाँदनी बनकर ही खुश रहना चाहती हूँ। मैं एक ऐसी दुनिया में रहना चाहती हूँ, जहाँ सब लोग मेरे जैसे ही हैं। यहाँ कोई भेद-भाव नहीं है। सब अपनी जिंदगी को खुशी-खुशी जीते हैं।"- गौरी ने मुस्कुराते हुए कहा, उसके चेहरे पर आई मुस्कुराहट और आत्मविश्वास को मैं बखूबी देख पा रही थी। सच ही तो है, हम सब एक ऐसी ही दुनिया तो चाहते हैं जहाँ सब बराबर हों, कोई भेद-भाव न हो। लेकिन ये समाज जाति-पात, रंग-रूप और ऊंच-नीच जैसे न जाने कितने ही भागों में बंटा हुआ है।

सुभद्रा आंटी ने किन्नरों को रुपये देकर विदा कर दिया। गौरी अपने साथियों के साथ जाने लगी, मेरा दिल खाली-सा होने लगा, मैंने एक बार फिर गौरी को आवाज लगायी-'चाँदनी', जाते-जाते गौरी ने पीछे मुड़कर देखा और एक हल्की-सी मुस्कुराहट छोड़कर चली गई मैं वहीं दरवाजे पर बुत बनी खड़ी रह गयी।■

भारतीय रेल
पत्रिका की सदस्यता एवं प्राप्ति हेतु
संपर्क करें 011-47845089
सोमवार से शुक्रवार (सुबह 10 से 1 एवं दोपहर 2 से 5 बजे तक) bmpr310rb@gmail.com, irbrhelp@gmail.com

# अपना ज्ञान टटोलें

**1 हमारे नए रेल मंत्री कौन हैं ?**

(क) श्री सुरेश प्रभु | (ख) श्री अश्विनी वैष्णव | (ग) श्री पीयूष गोयल | (घ) श्री डी. वी. सदानंद गौड़ा

**2 केंद्रीय रेल एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री का पदभार किसने ग्रहण किया ?**

(क) श्री रवनीत सिंह | (ख) श्री जयंत चौधरी | (ग) श्री गजेंद्र सिंह शेखावत | (घ) श्री मनसुख मांडविया

**3 केंद्रीय रेल एवं जल शक्ति राज्य मंत्री का नाम बताएँ ?**

(क) श्री पंकज चौधरी | (ख) श्री जितेन्द्र सिंह | (ग) श्री वी. सोमन्ना | (घ) श्री अर्जुन राम मेघवाल

**4 दिनांक 26 फरवरी, 2024 को आयोजित कार्यक्रम में एक घंटे में कितनी तस्वीरों को अपलोड करके रेल मंत्रालय ने नया कीर्तिमान स्थापित किया है ?**

(क) 550 | (ख) 690 | (ग) 583 | (घ) 683

**5 भारतीय रेल ने कितने गति शक्ति कार्गो टर्मिनल स्थापित करने की योजना बनाई गई है ?**

(क) 65 | (ख) 60 | (ग) 75 | (घ) 80

**6 विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे ब्रिज, जिस पर हाल ही में ट्रायल रन किया गया, भारत के किस राज्य या केंद्र शासित प्रदेश में बनाया गया है ?**

(क) जम्मू-कश्मीर | (ख) लद्दाख | (ग) हिमाचल प्रदेश | (घ) मेघालय

**7 मुम्बई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के बीच कितने सीस्मोमीटर लगाए जाएंगे ?**

(क) 25 | (ख) 27 | (ग) 30 | (घ) 28

**8 हुगली नदी के नीचे बने अंडरवाटर मेट्रो ट्रांसपोर्टेशन टनल की लम्बाई कितनी है ?**

(क) 5 कि.मी. | (ख) 4.8 कि.मी. | (ग) 4 कि.मी. | (घ) 5.5 कि.मी.

**9 वर्तमान में कितनी 'अमृत भारत' रेलगाड़ियाँ सेवा में हैं ?**

(क) 5 | (ख) 4 | (ग) 2 | (घ) 3

**10 वन्यजीव और जानवरों के अंगों की तस्करी को रोकने के लिए आर.पी.एफ. द्वारा चलाए गए मिशन का क्या नाम है ?**

(क) ऑपरेशन विलेप | (ख) ऑपरेशन नारकोस | (ग) ऑपरेशन जीवन रक्षा | (घ) ऑपरेशन उपलब्ध

1. (घ) 2. (क) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ग) 6. (क) 7. (ख) 8. (घ) 9. (ग) 10. (क)

सही उत्तर

# प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

# भारतीय रेल

में अपने विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुँच बनाएं

## विज्ञापन दरें

(विज्ञापन चार कलर में) नीचे दी गई दरों के साथ 5 प्रतिशत की जीएसटी/आइजीएसटी प्राप्य होगी

| विवरण | विशेष दर (वार्षिक अंक) (₹) | सामान्य अंक (मासिक दरें) | |
|---|---|---|---|
| | | सामान्य दरें (₹) | अनुबंधित दरें (₹) |
| बैक कवर | 13,300 | 11,400 | 10,450 |
| सेकेण्ड कवर | 12,350 | 10,450 | 9,500 |
| थर्ड कवर | 11,400 | 9,500 | 8,550 |
| पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति, जैसे टेक्स्ट के बाद में) | 9,500 | 8,550 | 7,600 |
| पूरा पृष्ठ | 8,550 | 7,600 | 6,650 |
| आधा पृष्ठ | 6,650 | 5,130 | 4,180 |
| सेंटर स्प्रेड | 17,000 | 15,000 | 13,300 |
| सेंटर स्प्रेड (दो पेज इकट्ठे) (स्पेशल पोजीशन) | 18,500 | 16,500 | 14,700 |

* तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथबा बारी-बारी देने पर अनुबंधित दरें लागू।

### तकनीकी विवरण

**पत्रिका का आकार**
28 X 20.5 सेमी

**छपाई क्षेत्र**
23 X 16.5 सेमी

### भुगतान का माध्यम

'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली' के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा नकद राशि रूम नं. 310, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001 में जमा की जा सकती है

### विज्ञापन सामग्री

ई-मेल, आर्टपुल, सीडी

### पत्रिका का प्रसार

समग्र देश में

### संपर्क करें :

**व्यापार प्रबंधक**
310, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,
टेलीफोन : 011-233822531, 23303665, 23304456

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए
रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका




# भारतीय रेल

*की सदस्यता*
*अब ऑनलाइन भी उपलब्ध*

अब ई-पत्रिका भी उपलब्ध

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

क्यू आर कोड स्कैन करें

## सदस्यता शुल्क

| मद | | ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹) | ऑनलाइन सदस्यता शुल्क (₹) | ई-मैगज़ीन सदस्यता शुल्क (₹) |
|---|---|---|---|---|
| एक प्रति (मासिक अंक) | | 20 | - | 10 |
| एक प्रति (विशेषांक) | | 70 | - | 40 |
| वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण) | एक वर्ष | 250 | 263 | 130 |
| | दो वर्ष | 460 | 483 | 230 |
| | तीन वर्ष | 675 | 709 | 340 |
| वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी) | एक वर्ष | 200 | 210 | 100 |
| | दो वर्ष | 370 | 389 | 190 |
| | तीन वर्ष | 540 | 567 | 270 |
| वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा | | 1,250 | 1,313 | ---- |
| वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा | | 2,500 | 2,625 | ---- |

(सदस्यता शुल्क में वार्षिक विशेषांक भी शामिल है।)

## सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

पहचान पत्र संख्या (यदि रेल कर्मचारी है तो): ..... वैधता की तारीख .....

### ऑफलाइन भुगतान का माध्यम

I) एम.ओ./आई.पी.ओ/डी.डी. व्यापार प्रबंधक के पक्ष में कमरा नं0 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
II) नगद जमा कराने हेतू : कमरा नं0 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001

**अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: व्यापार प्रबंधक,** कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,
टेलीफोन: 011-47845089, 45089 (रेल) **bmpr310rb@gmail.com, irbrhelp@gmail.com**

IRIS Certification
AAR M-1003
Daulat Ram ENGINEERING

# PRIME MOVERS FOR RAIL, MINING & URBAN MOBILITY

- Traction Motors / Alternators
- Air Conditioners
- Cooling Fans / Blowers
- Dynamic Brake Resistors
- Pantographs
- E- Buses
- Auxiliary Generators




10/2, NH-12, Simrai, Post Obedullahganj, Distt. Raisen, Near Bhopal, 464993, India
+91 7480 350001 to 350030 +91 8889983336 info@daulatram.org www.daulatram.com

# FLUID CONTROLS®

ENGINEERING CONNECTIONS EVERYDAY



## PERFORMANCE ENGINEERING FOR RAIL & METRO BRAKE PIPING CONNECTIONS

Fluid Controls Private Limited has 50 years of experience in engineering connections for Rail & Metro brake piping assemblies. Certified for the International Railway Industry Standard (IRIS-ISO/TS 22163:2017) and ISO/IEC 17025:2017 for our laboratory, Fluid Controls offers comprehensive solutions – from design, engineering, testing, and on-site installation services to the supply of high-performance connectors, isolating cocks, cleats and tube & hose assemblies.

- 50 YEARS OF HERITAGE
- IRIS & NABL CERTIFIED
- IN-HOUSE R&D
- OVER 30 MILLION CONNECTORS INSTALLED
- APPROVED BY MAJOR ROLLING STOCK MANUFACTURERS



InnoTrans 2024
24 – 27 SEPTEMBER · BERLIN

**VISIT US AT INNOTRANS 2024**
BERLIN • HALL 10.2 • STALL 320

+91-22-68238000 | railways@fluidcontrols.com | fluidcontrols.com

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2024-25-2026
आर.एन.आई रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

Across Borders, Beyond Limits
Our CNC Wheel Lathes, a Symbol of Railway Excellence Worldwide


CNC Underfloor Wheel Lathe


CNC Portal Wheel Lathe


CNC Vertical Turning & Boring Lathe

Malaysia Sri Lanka Turkey Gabon India
France Thailand Ghana Senegal South Africa

hyt
HYT ENGINEERING COMPANY PVT. LTD.

Sales Office: 17-18, Ground Floor, Hans Bhawan, Bahadur Shah Zafar Marg, I.T.O., New Delhi - 110 002, India. Phone: + 91 11 4320 2200/01

Work: 29/10, 29/10/1, 29/10/2, D-II Block, MIDC, Chinchwad, Pune - 411 019, India. Phone: + 91 20 6634 3900

www.hytengineering.com I info@hytengineering.com

मुद्रक व प्रकाशक : **ललित कुमार धनकड़** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स संदीप प्रेस, सी-105/2, नारायणा, इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110028 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**